

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178966

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. ^H 83
T83C

^{P.G.H}
Accession No. 2833

Author

रुपाही शर्मा

Title :

ती का पक्ष 1958

This book should be returned on or before the date last marked below.

चोटी की पकड़



सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

कि ता व म ह ल
इलाहाबाद, बम्बई, दिल्ली

१९५८

बचपन साहित्य मंडल
नवाहारा ज. जयपुर

श्रीमत् स्वामी विवकानन्द जी
महाराज की
पुण्य स्मृति में

--निराला

प्रकाशक—किताब महल, जीरो रोड, इलाहाबाद ।
मुद्रक—महावीर प्रसाद, प्रेम प्रेस, कटरा, प्रयाग ।

निवेदन

‘चोटी की पकड़’ आपके सामने है। स्वदेशी-आन्दोलन की कथा है। लम्बी है, वैसी ही रोचक। पढ़ने पर आपकी समझ में आ जायगा। युग की चीज बनाई गई है। जितना हिस्सा इसमें है, कथा का हिसाब उससे समझ में आ जायगा। इसकी चार पुस्तकें निकालने का विचार है। मुमकिन, दूसरी इससे कुछ बड़ी हो। चरित्र इसमें मुन्ना बाँदी का निखरा है। अगले में प्रभाकर का। इस बड़े उपन्यास को पढ़ियेगा तो ज्ञान और आनन्द वैसे ही बढ़ेंगे।

--निराला

चोटी की पकड़

१

सत्रहवीं सदी का पुराना मकान। मकान नहीं, प्रासाद; बल्कि गढ़। दो मील घेरकर चारदीवार। बड़े-बड़े दो प्रासाद। एक पुराना, एक नया। हमारा मतलब पुराने से है। नये में जागीरदार रहते हैं। हैसियत एक अच्छे राजे की। कई डचोढ़ियाँ। हर डचोढ़ी पर पहरेदार। कितने ही मन्दिर, उद्यान, मैदान, तालाब, प्राचीर, कचहरी। दोनों ओर आम-लगी सीधी-तिरछी, चौड़ी-सँकरी सजी सड़कें। पीपल के नीचे चबूतरा, देवता। इक्के-दुक्के आदमी आते और जाते हुए।

भयंकर अट्टालिका। पीछे की तरफ कुछ गिरी हुई। फिर भी विशाल उद्यान की ऊँची प्राचीर से सुरक्षित। भीतर भी रक्षा का अन्तराल उठा हुआ। निकासों पर पहरे। पुरखों के सदी-सदी के जरीन वस्त्र, बासन, तम्बू, राजगृह के अनेकानेक साधन, माल-असबाब, काग-जात और खजाना रहता है। कितने ही कमरों में, दालानों में, बड़ी-बड़ी बैठकों में, आदम-आकार की गची काठ की सैकड़ों पेटियाँ हैं,

भीतर से कुफल लगा हुआ। नीचे, सिंहद्वार पर, लोहे के बड़े-बड़े सन्दूकों में राजकोप है। बन्दूक का पहरा। ५-६ बड़े-बड़े आँगन। पीछे, दक्षिण की ओर, एक अहाते में कुल देवता रघुनाथजी का मन्दिर। दूसरी ओर, ऊपर की मंजिल पर, कई अच्छे कमरों के एक अन्तःपुर में बूढ़ी मौसी के साथ बुआ रहती हैं। बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ, प्राकार, उद्यान और सरोवर दिखते हैं। सूर्य की किरणों में चमकती हुई हरियाली। प्रातः और सन्ध्या की स्निग्ध वायु। रात में तारों से भरा आकाश। चाँद, चाँदनी, सूनापन।

बुआ विधवा हैं, मौसी भी विधवा। बुआ की उम्र पच्चीस होगी। लम्बी सुतारवाली बँधी पुष्ट देह। सुढर गला, भरा उर। कुछ लम्बे मांसल चेहरे पर छोटी-छोटी आँखें; पैनी निगाह। छोटी नाक के बीचो-बीच कटा दाग। एक गाल पर कई दाँत बैठे हुए। चढ़ती जवानी में किसी बलात्कारी ने बात न मानने पर यह सूरत बनाई, फिर गाँव छोड़कर भग खड़ा हुआ। इज्जत की बात, ज्यादा फैलाव न होने दिया गया।

बुआ की देह जितनी सुन्दर है, चेहरा उतना ही भयंकर। वह जागीरदार-खानदान की लड़की नहीं, मान्य की मान्य हैं। बुआ के भतीजे का भाग। गरीब थे। जागीरदार को लड़की ब्याहनी थी। लड़का ठूँडा। वह पसन्द आये। बुला लिया। बच्चे थे। पढ़ाया-लिखाया। उठना-बैठना, बातचीत, रईसी के अदब और करीने सिखलाये। फिर निबाह के लिए एक अच्छी-खासी जमींदारी लड़की के नाम खरीदकर उनके साथ ब्याह कर दिया। ब्याह पर दामाद साहब

का लम्बा कुनबा आ धमका। बुआ इसी में हैं बहुत निकट की। जब भी बंगाल के प्रतिष्ठित प्रायः सभी ब्राह्मण और कायस्थ पहले के युक्तप्रान्त के रहने वाले हैं, पर वे बंगाली हो गये हैं; यह जागीरदार-परिवार आदि से युक्तप्रान्तीयता की रक्षा कर रहा है।

आने पर, समधिन-साहबा यानी राजकुमारी की माँ रानी साहबा ने बुआ को दुलाया; अपनी सोलह कहारों वाली गद्दीदार पालकी भेज दी। साथ वर्दी पहने चार सशस्त्र सिपाही। खिड़की के कब्जे पकड़ने के लिए दोनों बगल दो नौकरानियाँ। विधवा बुआ विधवा के श्वेत स्वच्छ वस्त्र से गई। रानी साहबा नई अट्टालिका में रहती थीं। बड़े तस्त पर ऊँची-ऊँची गद्दियाँ बिछी थीं। ऊपर स्वच्छ चादर, कितने ही तकिए लगे हुए। सामने ऊँची चौकी पर पीकदान रक्खा हुआ। बगल में पानदान। विशाल कक्ष। साफ सुथरा। संगमरमर का फर्श। दीवारों और छत पर अति-सुन्दर चित्रकारी। बीच में श्वेत प्रस्तर की मेज पर चीनी फूलदानी में सुगन्धित पुष्प। हाथ से खीचे जाने वाले पंखे की रस्सी, दीवार में किये छेद से बाहर निकालकर द्वाल पर चढ़ाई हुई। तीन घंटे दिन और तीन घंटे रात की डच्ची पर चार पंखा-ब्रेयरर लगे हुए। पंखा चल रहा है। तस्त की बगल में एक गद्दीदार चौकी रक्खी हुई है बुआ के बैठने के लिए।

जागीरदार साहब कुलीन हैं। साथ ही राजसी ठाट के धनिक। इनके यहाँ मान्यों की वह मान्यता नहीं रहती जो दूसरी जगह रहती है। यद्यपि इसका मुख्य कारण घमण्ड है, फिर भी ये अपनी बचत का रास्ता निकाले रहते हैं। इनका कहना है कि राज्य की मुहर

रघुनाथ जी के नाम है, हम उनके प्रधान कर्मचारी हैं; हमारे सर पर केवल रघुनाथ जी ही रहते हैं; दूसरे अगर इस राज्य की हद में हमारे सर हुए तो वही जैसे इस राज्य के राजा बन गये; इससे रघुनाथ जी का अपमान होता है। इस आधार पर जल्सों में जागीरदार साहब के मान्यों के आसन उनके पीछे ही रखे जाते हैं, हल्के आसनों पर, बगल में भी नहीं।

आने पर बुआ की सेवा के लिए रानी साहबा ने एक बाँदी भेजी, नाम मुन्ना। रानी साहबा की प्रायः दस दासियों में एक मुन्ना भी। पाँच-छः साल से नौकर। हाल का ब्याह, खातिरदारी कसरत पर और कुछ इस उद्देश्य से भी कि ऐसा दूसरा नहीं कर सकता, इतना सुख कहीं भी नहीं। मुन्ना की उतनी ही उम्र है जितनी बुआ की। उतनी ऊँची नहीं, पर नाटी भी नहीं। चालाकी की पुतली। चपल, शोख। श्याम रंग। बड़ी-बड़ी आँखें। बंगाल के लम्बे-लम्बे बाल। विधवा, बदचलन, सहृदय। प्रायः हर प्रधान सिपाही की प्रेमिका। भेद लेने में लासानी। कितने ही रहस्यों की जानकार। प्रधान-अप्रधान नायिका, दूती, सखी। रानी साहबा ने जब-जब रंडी रखने के जवाब में पति को प्रेमी चुनकर झुकाया, तब-तब मुन्ना ने प्रधान दूती का पाठ अदा किया। उसी से रानी साहबा को खबर मिली, बुआ की नाक कटी है, गाल पर दाँतों के दाग हैं। अनुगामिनी सहचरी बनाने का इतना साधन काफी है। रानी साहबा ने समधिन को बुलाया।

मुन्ना की जवान बंगला है। असल में इसका नाम है मोना या

मनोरमा। बुआ इलाहाबाद की ठेठ देहाती बोलती हैं। मुन्ना ने अपनी सरल सुबोध बंगला में रानी साहबा से मिलने के करीने कई दफे समझाये, पर बुआ की समझ में कुछ न आया। फिर बुआ की मान्य के मान्य के सम्बन्ध में युक्तप्रान्त की बँधी धारणा थी, उसमें परिवर्तन हिन्दूपन से हाथ धोना था। मुन्ना के सश्रद्ध रानी साहबा के उच्चारण से बुआ अपने बड़प्पन को दबाकर खामोश रह जाती थीं, सोचती थीं, धर्म के अनुसार रानी साहबा में और मुन्ना में उनके समक्ष कौन सा फर्क है?—जो काम उनके लिए मुन्ना करती है, वही रानी साहबा भी पुण्य के सञ्चय के लिए कर सकती हैं। जो कुछ उन्होंने सीखा, वह है बंगाली ढंग से साड़ी पहनना, मशहरी लगाना, तकिये का सहारा लेना, बंगाली भाजियों को पूर्वापर विधि से खाना। यह भी इसलिए कि उनसे कहा गया था कि उनकी बहू अर्थात् राजकुमारी बिना इसके उनसे मिलेंगी नहीं, जब वह आयेंगी तब इसी वेश में रहना होगा, उनके जल-पान के लिए ऐसी ही भाजियाँ देनी होंगी, थाली इसी तरह लगाई जायगी; नहीं तो वह भग जायँगी, एक क्षण के लिए नहीं ठहर सकतीं।

२

मुन्ना के बतलाये हुए ढंग से बुआ ने एक सफ़द साड़ी पहनी। विधवा के रजत वेश से पालकी पर बैठीं। वहाँ के सभी कुछ उन्हें

प्रभावित कर चुके थे, पालकी एक और हुई। कहारों ने पालकी उठाई और अपनी खास बोली से कोलाहल करते हुए बढ़े। अगल-बगल दो दासियाँ, पीछे मुन्ना। दो सिपाही आगे, दो पीछे। पुरानी अट्टालिका से नई चार फर्लांग के फासले पर है। पालकी नई अट्टालिका के अन्दर के उद्यान में आई। गुलाबों की क्यारियों के बीच से गुजरती हुई खिड़की के विशाल जीने पर लगा दी गई। सिपाही और कहार हट गये। जिस बाजू लगी, उधर की दासी ने दरवाजा खोला। मुन्ना पानदान लिये हुए सामने आई और उतरने के लिए कहा। बुआ उतरी।

दूसरी तरफवाली दासी रानी साहबा को खबर देने के लिए रनवास चली गई थी। रानी साहबा तख्त की गद्दी पर बैठी थीं। लापरवाही से, ले आने के लिए कहा। उनकी लड़की, राजकुमारी, बुला ली गई थीं। माता की बगल में बुआ वाली चौकी से कुछ हटकर, एक सोफा डलवाकर बैठी थीं।

दासी बुआ को लेकर चली, साथ मुन्ना। बुआ पर प्रभाव पड़ने पर भी मन में धर्म की ही विजय थी। उनका भतीजा व्याहा हुआ है जिसके इन्होंने पैर पूजे हैं। ये उससे और उसकी माँ से बराबरी का दावा नहीं कर सकते, बुआ तो उनके इष्टदेवता से भी बढ़कर है।

भाव में तनी हुई बुआ रनवास के भीतर गई। वह समझे हुए थीं, समझिन मिलेंगी, भेंट देंगी, आदर से ऊँचे आसन पर बैठा लेंगी, तब उससे कुछ नीची जगह पर बैठेंगी; जाति की हैं, जाति की बर्ताव-वाली बातें जानती हैं, इसीलिए मुन्ना की बातें कुछ समझकर भी अनसुनी कर गई थीं; सोचा था, यह बंगालिन हमारे रस्मोरवाज क्या

जानती है ? पर भीतर पैर रखते ही उनके होश उड़ गये। रानी साहबा पत्थर की मूर्ति की तरह मसनद पर बैठी रहीं। एक नजर उन्होंने बुआ को देख लिया, उनके चेहरे का सुना हुआ वर्णन मिला कर चुपचाप बैठी रहीं। राजकुमारी ने आँख ही नहीं उठाई। एक दफे माता को देखकर सर झुका लिया। मुन्ना ने भक्ति-भाव मे हाथ जोड़कर रानी साहबा को, फिर राजकुमारी को प्रणाम किया। बड़े सम्मान के स्वर से बुआ को परिचय दिया—महारानी जी, राजकुमारी जी।

बुआ पसीने-पसीने हो गई। कोई नहीं उठी, उनकी बहू को भी यह सीख नहीं दी गई। पद की मर्यादा सर हो गई। चुपचाप दो रुपये निकाले और बहू की निछावर करके मुन्ना को देने के लिए हाथ बढ़ाया। मुन्ना घबराकर उन्हें देखने लगी। लेने के लिए हाथ नहीं बढ़ाया। यह रानी साहबा का अपमान था।

रानी साहबा देखती रही। चौकी की तरफ उँगली उठाकर बँगला में बैठने के लिए कहा।

बुआ को यह और बड़ा अपमान जान पड़ा। आसन नीचा था। उनकी नसों में बिजली दौड़ने लगी। वह द्रुत पद से मसनद के सिरहाने की तरफ गई और तकिए के पास बैठकर रानी साहबा की आँख से आँख मिलाते हुए कहा, “समझिन, हम वहाँ नहीं बैठेंगे। वह जगह तुम्हारी है। अगर बड़प्पन का इतना बड़ा अभिमान था तो गरीब का लड़का क्यों चुना ?” रानी साहबा का पानी उतर गया। अपमान से बोल बन्द हो गया। क्षमा उनके शास्त्र में न थी। दाँत

पीसकर आधी बँगला आधी हिन्दी में कहा, “तुम्हारा नाक पर क्या है, तुम्हारा गाल पर किसका दाग है ?”

“यहीं की तरह औरत पर हुए अपमान के दाग हैं। लेकिन हमारा चेहरा तुम्हारे दामाद से मिलता-जुलता भी है ?—जैसा हमारा, हमारे भाई का, वैसा ही उसका; वह चेहरा भी ब्याह से पहले तुम लोगों को कैसे पसन्द आ गया ?”

रानी साहबा पर जैसे घड़ों पानी पड़ा। राजकुमारी झेंपकर उठकर चल दीं। शोर-गुल होते ही कई दासियाँ दौड़ीं। रानी साहबा ने बुआ को उसी वक्त ले जाने की आज्ञा दी।

बुआ दूसरे कमरे में ले जाई गईं। बांदियों ने अपनी एक चटाई बिछा दी। बुआ ने वहाँ कोई विचार न किया। बैठ गईं। रनवास गर्म हो रहा था। राजकुमारी ने अपने पति से शिकायत की—बुआ जी असभ्य हैं। दामाद साहब के मन में यह धारणा जड़ पकड़ चुकी थी। उन्होंने बात को दोहराया। अब रानी साहबा भी आ गईं और अतिशयोक्ति अलंकार का सहारा लिया।—बुआ रानी साहबा पर चढ़ बैठीं, गद्दी का सरहाना दबाकर उनका अपमान किया, अपशब्द कहे, रानी साहबा ने उन्हें अपनी पालकी भेजकर बुलाया था, बैठने के लिए चन्दन की जड़ाऊ चौकी रखवाई थी, भूत झाड़ने की तरह एक या दो रुपये लेकर राजकुमारी के सर पर मुट्ठी घुमाने लगीं, फिर मुन्ना दासी को देना चाहा, दासी ने नहीं लिया, वह कैसे ले सकती थी, फिर तरह-तरह की बातें सुनाईं जो गालियों से बढ़कर थीं। दामाद साहब ने सलाह दी, अब बिदा कर देना चाहिए। रानी

साहबा इस पर सहमत नहीं हुई। कहा—आदमी बनाकर भेजना अच्छा होगा। फिर कहा, जायगी भी कहाँ?—तुम्हारी सगी बुआ है, अदव-करीने सीख जायगी तो विभा (विभावती राजकुमारी) की मदद किया करेगी। रानी साहबा की सहानुभूति से दामाद साहब ने प्रसन्न होकर सम्मति दी।

एक दूसरे कमरे में रानी साहबा ने मुन्ना को बुलाया और बुआ के सुधार के लिए आवश्यक शिक्षा दी। मुन्ना ने उनसे बढ़ाकर कहा कि लाख बार समझाने पर भी बुआ ने कहना नहीं माना। मुन्ना रोज बीसियों दफे उन पर रानी साहबा का बड़प्पन चढ़ाती थी; पर वह सुनी-अनसुनी कर जाती थीं। रानी साहबा ने अब के उपदेश के साथ अपने सम्मान से काम लेने के लिए कहा, जैसे स्वयम् वह रानी साहबा हो।

इस बार बड़ी पालकी की जगह साधारण चार कहारोंवाली पालकी आई। सिपाही और दासियाँ नदारद, सिर्फ मुन्ना। बुआ चुपचाप बैठकर चली आई।

३

ब्याह के बाद जागीरदार राजा राजेन्द्रप्रताप कलकत्ता गये। आवश्यक काम था। जमींदारों की तरफ से गुप्त बुलावा था। सभा थी।

मध्य कलकत्ता में एक आलीशान कोठी उन्होंने खरीदी थी। ऐशो-इशरत के साधन वहाँ सुलभ थे, राजा-रईस और साहब-सूबों से मिलने का भी सुभीता था, इसलिए साल में आठ महीने यहीं रहते थे। परिवार भी रहता था। राजकुमार इस समय वहीं पढ़ते थे। ये अपनी बहन से बड़े थे, पर अभी ब्याह न हुआ था। यह कोठी और सजी रहती थी।

बंगाल की इस समय की स्थिति उल्लेखनीय है। उन्नीसवीं सदी का पराद्ध बंगाल और बंगालियों के उत्थान का स्वर्णयुग है। यह बीसवीं सदी का प्रारम्भ ही था। लार्ड कर्जन भारत के बड़े लाट थे। कलकत्ता राजधानी थी। सारे भारत पर बंगालियों की अंगरेजी का प्रभाव था। संसार-प्रसिद्धि में भी बंगाली देश में आगे थे। राजा राम मोहनराय की प्रतिभा का प्रकाश भर चुका था। प्रिन्स द्वारकानाथ ठाकुर का जमाना बीत चुका था। आचार्य केशवचन्द्र सेन विश्वविश्रुत होकर दिवंगत हो चुके थे। श्रीरामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द की अतिमानवीय शक्ति की धाक सारे संसार पर जम चुकी थी। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की बंगला, माइकेल मधुसूदनदत्त के पद्य, बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास और गिरीशचन्द्र घोष के नाटक जागरण के लिए सूर्य की किरणों का काम कर रहे थे। घर-घर साहित्य राजनीति की चर्चा थी। बंगाली अपने को प्रबुद्ध समझने लगे थे। अपमान का जवाब भी देने लगे थे। अखबारों की बाढ़ आ गई थी। रवीन्द्रनाथ के साहित्य का प्रचण्ड सूर्य मध्य आकाश पर आ रहा था। डी० एल० राय की नाटकीय तेजस्विता फैल चली थी। सारे बंगाल पर गौरव

छाया हुआ था। परवर्ती दोनों साहित्यिकों से लोगों के हृदयों में अपार आशाएँ बँध रही थीं। दोनों के पद्य कण्ठहार हो रहे थे। जातीय सभा कांग्रेस का भी समादर बढ़ गया था। उसमें जाति के यथार्थ प्रगति के भी सेवक आ गये थे।

इसी समय लार्ड कर्जन ने बंग-भंग किया। राजनीति के समर्थ आलोचकों ने निश्चय किया कि इसका परिणाम बंगाल के लिए अनर्थकर है। बंगाल के स्थायी बन्दोबस्त की जड़ मारने के लिए यह चाल चली गई है। यद्यपि लार्ड कर्जन का मूँछ मुड़ानेवाला फैशन बंगाल में जोरों से चल गया था—मिलनेवाले कर्मचारी और जमीदार लाट साहब को खुश करने के लिए दाढ़ी-मूँछों से सफाचट हो रहे थे, फिर भी बंगभंगवाला धक्का संभाले न संभला। वे समझे कि चालाक अंगरेज किसी रोज उन्हें उनके अधिकार से उखाड़कर दम लेंगे। चिरस्थायी स्वत्व के मालिक बड़े-बड़े जमींदार ही नहीं मध्यवित्त साधारण जन भी थे। इसलिए यह विभाजन की आग छोटे-बड़े सभी के दिलों में एक साथ जल उठी। कवियों ने सहयोग-पूर्वक देश-प्रेम के गीत रचने शुरू किये। सम्वाद-पत्र प्रकाश्य और गुप्त रूप से उत्तेजना फैलाने लगे। जगह-जगह गुप्त बैठकें होने लगीं। कामयाबी के लिए विधेय-अविधेय तरीके अस्तित्वार किये जाने लगे। संघ-बद्ध होकर विद्यार्थी गीत गाते हुए लोगों को उत्साहित करने लगे। अंगरेजों के किये अपमान के जवाब में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की प्रतिज्ञाएँ हुईं, लोगों ने खरीदना छोड़ा। साथ ही स्वदेशी के प्रचार के कार्य भी परिणत किये जाने लगे। गाँव-गाँव में

इसके केन्द्र खोले गये। कार्यकर्ता उत्साह से नई काया में जान फूँकने लगे।

विज्ञान की उस समय भी हिन्दुस्तानियों के लिए काफी तरक्की हो चुकी थी, पर मोहरों की इतनी भरमार न थी। हवाई जहाज थे ही नहीं। तब कलकत्ते में बग्घियाँ चलती थीं। बाद को मोटरें हो जाने पर भी रईसों का विश्वास था, बग्घी रईसों के अधिक अनुकूल है, इससे आबरू रहती है। राजा साहब ने कई शानदार बग्घियाँ रक्खी थीं, कीमती घोड़ों से अस्तबल भरा था। शराब और वेश्या का खर्च उन दिनों चरम सीमा पर था। मांस, मछली, सब्जी और फलों के गर्म और क्रीम और बर्फदार ठण्डे इतने प्रकार के भोजन बनते थे कि खाने में अधिकांश का प्रदर्शन मात्र होता था; वे नौकरों के हिस्से में आकर भी बच जाते थे। फूल और सुगन्धियों का खर्च अब शतांश भी नहीं रहा। पुरस्कार इतने दिये जाते थे कि एक-एक जगह के दान से नर्तकियों और गवैयों का एक-एक साल का खर्च चल जाता था। आमन्त्रित सभी राजे-रईस व्यवहार में हजारों के वारे-न्यारे कर देते थे। अगर स्वार्थ को गहरा धक्का न लगा होता तो ये जमींदार स्वदेशी-आन्दोलन में कदापि शरीक न हुए होते। इन्होंने साथ भी पीठ बचाकर दिया था। सामने आग में झुक जान के लिए युवक-समाज था। प्रेरणा देने वाले थे राजनैतिक वकील और बैरिस्टर। आज की दृष्टि से वह भावुकता का ही उद्गार था। सन् सत्तावन के गदर से महात्मा गांधी के आखिरी राजनीतिक आन्दोलन तक, स्वत्व के स्वार्थ में, धार्मिक भावना ने ही जनता का रुख फेरा है।

इसको आधुनिक आलोचक उत्कृष्ट राजनीतिक महत्व न देगा। स्वदेशी आन्दोलन स्थायी स्वत्व के आधार पर चला था। उससे बिना घग्वार के, ज़मींदारों के आश्रय में रहनवाले, दलित, अधिकांश किसानों को फ़ायदा न था। उनमें हिन्दू भी काफ़ी थे, पर मुसलमानों की संख्या बड़ी थी, जो मुसलमानों के शासनकाल में, देशों के सुधार के लोभ से या ज़मींदार हिन्दुओं से बदला चुकाने के अभिप्राय से मुसलमान हो गये थे। बंगाल के अब तक के निर्मित साहित्य में इनका कोई स्थान न था, उलटे मुसलमानी प्रभुत्व से बदला चुकाने की नीयत से लिखे गये बंकिम के साहित्य में इनकी मुखालिफ़त ही हुई थी। शूद्र कही जानेवाली अन्य दलित जातियों का आध्यात्मिक उन्नयन, वैष्णव-धर्म के द्वारा जैसा, श्रीरामकृष्ण और विवेकानन्द के द्वारा हुआ था, पर उनकी सामाजिक स्थिति में कोई प्रतिष्ठा न हुई थी, न साहित्य में वे मर्यादित हो सके थे। ब्राह्मण-समाज ने काफ़ी उदारता दिखाई थी, आर्य-समाज का भी थोड़ा-बहुत प्रचार हुआ था, पर इनसे व्यापक फलोदय न हो पाया था। ब्राह्म समाज क्रिश्चन होने वाले बंगालियों के भारतीय-धर्म-रक्षण का एक साधन, एक सुधार होकर रहा। इसमें सम्मिलित होनेवाले अधिकांश विलायत से लौटे उच्च-शिक्षित थे। मुख्य बात यह कि परिस्थितियों की अनुकूलता के बिना उचित राष्ट्रीय संगठन नहीं हो सकता, न हो सका। हिंसात्मक जो भावना स्वतन्त्रता की कुंजी के रूप से प्रचारित हुई, वह संगठनात्मक राष्ट्रीय महत्व कम रखती थी। गान्धी जी का असहयोग इमी की प्रतिक्रिया है, पर इसकी एकता की जड़ और गहरे पहुँची थी।

अस्तु, इस समय गुप्त सभाओं का जैसा क्रम चला वैसा और उतना सिराजउद्दौला के समय अँगरेजों की मदद के लिए भी नहीं चला। कुछ ही दिनों में राजों, रईसों और वकील-बैरिस्टरों से मिलने पर, राजा राजेन्द्रप्रताप की समझ में आ गया कि देश को साथ देना चाहिए। चिरस्थायी स्वत्व की रक्षा ही देश की रक्षा है, इस पर उन्हें ज़रा भी सन्देह नहीं रहा। बहुत जगह दावतें हुई, बहुत बार प्रतिज्ञाएँ की गईं। वकील और बैरिस्टरों के समझाने से दूसरे-दूसरे ज़मींदारों की तरह राजा राजेन्द्रप्रताप भी समझे, उन्हें कोई खतरा नहीं। जिस मदद के लिए वह बात दे चुके हैं, पुलिस को उसकी खबर नहीं हो सकती, पुलिस उन्हें पकड़ नहीं सकती।

दूसरों की तरह राजेन्द्रप्रताप ने भी दावत दी। कोठी सजी। कलकत्ता के और वहाँ आये हुए बंगाल के ज़मींदार आमन्त्रित हुए। निमन्त्रण-पत्र में लिखा गया, राजकुमारी के ब्याह की दावत है। अच्छे पाचक बुलाये गये। राजभोग पका। विलायत की क्रीमती शराबें आई और कलकत्ता की मुप्रसिद्ध गायिका बेश्याएँ। विशाल अहाते में ज़मींदारों की बग्घियों का ताँता लग गया। प्रचण्ड रोशनी हुई। आलीशान बैठक में, राजे और ज़मींदार गद्दियों पर तकियों के सहारे बैठे। शराब ढलने लगी। गायिकाओं के नृत्य और गीत होने लगे। कुछ ही समय में भोजन का बुलावा हुआ। राजसी ठाट के आसन लगे थे। सोने और चाँदी के बरतनों में भोजन लगाकर लाया गया। सब ने प्रशंसा करते हुए भोजन पाया। इशारे से बातचीत होती रही। सब-के-सब एकमत थे। भोजन के बाद थोड़ी देर तक गाना सुनकर,

सभी श्रेणियों के लोगों को इनाम देकर ज़मींदार लोग अपनी-अपनी कोठियों को खाने हुए। गायिकाएँ भी गईं। केवल एक आदमी बैठा रहा। वह कलकत्ते का एक प्रसिद्ध बैरिस्टर है। उस समय कमरे में कोई न था।

उसने राजेन्द्रप्रताप से कहा, “हमको जगह चाहिए। आप लोगों के पास जगह की कमी नहीं। वहाँ कार्यकर्ता छिपकर काम करेंगे। आप उनकी निगरानी रख सकते हैं।”

“हाँ।”

“जगह आप लोग देंगे, आदमी हम। आप में जो कलकत्ते के रहने वाले हैं, वे अपनी कोठियों में जगह नहीं दे सकते। उनसे हम रुपया लेंगे और किराये की कोठियों में काम करेंगे।”

“हाँ।” राजेन्द्रप्रताप को विश्वास था कि वे दो-चार को क्या, बीसियों आदमियों को छिपा दे सकते हैं। गढ़ के भीतर पुलिस के आने तक वे आदमी बाहर निकाल दिये जा सकते हैं, माल गहरे तालाब में फेंकवा दिया जा सकता है। पूर्वपुरुषों से ज़मींदारों की दुस्साहसिकता की जो बातें वह सुन चुके हैं और खुद कर चुके हैं, उनके सामने ये नगण्य हैं।

“सारा देश साथ है।” बैरिस्टर ने कहा, “घबराइएगा नहीं। हमारे आदमी पकड़ जायेंगे तो अपने पर ही कुल ज़िम्मेवारी लेंगे। आपको पकड़ायेंगे नहीं। कोठी में भी पकड़े जायेंगे तो उनका यही कहना होगा कि वे एकान्त देखकर अपनी इच्छा से गये थे।”

राजा राजेन्द्रप्रताप को विश्वास का बल मिला। बैरिस्टर कहते

गये, “किसी तरह की अनहोनी हीती दिखे तो आप उन्हें जल्द सूचित कर दें।”

राजा साहब ने सम्मति दी। बैरिस्टर ने कहा, “जो आदमी वहाँ आपसे मिलेगा, वह आज से चौथे दिन तारकनाथ का आदमी कहकर मिलेगा। उसका नाम प्रभाकर है। उसके साथ तीन आदमी और होंगे। सामान की व्यवस्था की हुई रहेगी; भीतर ले जाने, ले आने और भोजन-पान का इन्तजाम आप करा दीजिएगा, साथ इस तरह कि भेद न खुले, बहुत विश्वासी आदमी काम में रहें जिनके जीवन की बागडोर आपके हाथ में हो। समझते हैं?”

“हाँ, हमारा सम्बन्ध तो आपको मालूम है।” राजा साहब मुस्कराये। बैरिस्टर साहब ने कुछ देर तक ऐसी ही बातचीत की, फिर बिदा हुए।

४

राजा राजेन्द्रप्रताप के कोचमैन मुसलमान हैं। तीन बग्घियाँ और आठ घोड़े कलकत्ता में हैं, कुछ अधिक, राजधानी में। अली एक कोचमैन हैं। इनके पिता लखनऊ में रहते थे, पूर्वज ईरान के रहने वाले; बाद को शाह वाजिदअली के न रहने पर, मटियाबुर्ज चले आये। शाही खानदान के दरजी। कपड़े अच्छे सीते थे। अली आवारगी-पसन्द थे, सुई नहीं चला सके, घोड़े की लगाम थामी।

हिन्दू भी आदमी है, यह धर्मानुसार समझ में नहीं आया। हिन्दू की आख्या गुलाम से बढ़कर नहीं की! अँगरेजों से लड़ाई में मुसलमान हारे, इसकी वजह हिन्दुओं की बेईमानी है, ऐसे विचार पाले रहे। फिर भी खामोशी से काम करते हुए गुजर करते रहे यानी मालिकों से काम के अलावा दूसरी बात न की। किसी हिन्दू को कभी राज नहीं दिया, वल्कि लिया, और बड़ी सफाई में, भलमन्साहत के बहाने।

बंगालियों की बढ़ती से अली इस नतीजे पर आये कि बिना अँगरेजी के चूल न बैठेगी। दूर तक पहुँच न थी, पुलिस के मुसलमान दारोगा को राज देने और उनके इशारे पर काम करने-कराने लगे। उन्हें एके की कुंजी मिली। ज़मींदारी हिन्दुओं की, कारोबार हिन्दुओं का, बड़ी-बड़ी नौकरियों पर हिन्दू, वकील-बैरिस्टर-डाक्टर-प्रोफेसर भी हिन्दू। यही हिन्दू अँगरेजों से मिले और मुसलमानों से दगा की। अली की आँख खुल गई। यह मिलने का नतीजा है कि चारों तरफ हिन्दू मँडला रहे हैं। सरकार हरएक की है। भूखों मरने वाले भूखों न मरेंगे अगर सरकार को साथ दिया। सरकार ने बंगाल के दो हिस्से किये हैं, यह मुसलमानों के फायदे के लिए। आये दिन ये ज़मीने मुसलमानों की। ज़मींदारी का यह क़ानून न रहेगा। नवाबों से सारी मुसलमान रैय्यत को फ़ायदा नहीं पहुँचा। नक़शा आँख के सामने आया। बादशाहत से वह दब गया था। कुछ यहाँ सुना, कुछ वहाँ; कुछ अपनी तरफ़ से सोचा। स्वदेशी का आन्दोलन चल चुका था। बातें मुसलमान और इतरवर्ग के नेता फैला रहे थे। अँगरेजी शासन के प्रारम्भ से ऐसी तोड़वाली बातों का महत्व है।

अली को कामयाबी हुई। लड़का पढ़ रहा था, एन्ट्रेंस में २ साल की उम्र में फ़ेल हुआ, थानेदारी के लिए चुन लिया गया। उन्होंने देखा था, उनके राज़ से थानेदार इन्स्पेक्टर हो गये थे; वह अपने लड़के को राज़ देने लगे। पहले मालिक की गरदन नापी। सोचा, असामी बड़ा है, तरक्की लम्बी होगी। आन्दोलन का हाल मालूम था। राजा साहब जहाँ-जहाँ गये थे, लड़के से कहा। कोठी में जिनकी-जिनकी बग्घी आई थी बतलाया। मुसलमान कोचमेनों के नाम लिख-वाये, भीतरी सूरत से गवाही ले लेने के लिए। फिर कहाँ, राजा थियेटर-रोडवाली मशहूर तवायफ़ एजाज के घर जाता है, वह भी कभी-कभी कोठी आती है, कभी अपने वहाँ, बिलासपुर, साथ ले जाता है, वहाँ महीनों ठहरती है।

पुत्र ने गम्भीर होकर कहा, सरकार से बगावत की तो मिट जायगा। खैर राज़ भी खुल जायगा। आप आराम कीजिए।

अली के लड़के का नाम यूसुफ़ है। पर हैं बदशक्ल। अली भी शक्ल से ईरानी नहीं मालूम होते। मुसलमान तोड़े कसते हैं। अली हिन्दुस्तान पर बुखार उतारते हैं—ऐसा मुल्क है कि हुमा भी चु'द की शक्ल में बदल जाता है। फिर फ़ारिस के मशहूर लोगों को अपने खानदान का करार देकर उनके रंग और रूप की तारीफ़ करते हैं।

यूसुफ़ ने कसकर डायरी लिखी। फिर मामले में हाथ लगाने की देर तक सोचते रहे। उनके हल्के में न राजा राजेन्द्रप्रताप की कांठी आती थी, न एजाज की। वह थाने के बड़े थानेदार भी न थे। उनसे बड़े जो दो-तीन अरुसर थे, कुल-के-कुल बंगाली। वह खिचे।

कमिश्नर से मिलने की सोची, पर हिम्मत न हुई। कोई राज़ मरकार के खिलाफ़ नहीं मालूम हुआ। अभी सुबूत भी नहीं। अमामी बड़े-बड़े हैं। बाप नौकर। धेले की बुलबुल हाथ न लगे और टका टुशकाई पड़ जाय, पुलिस की आँख में गिर जाना है।

उन्हें हिम्मत हुई। एजाज़ मुसलमान है। इमसे काम निकल सकता है। फिर कच्चे पड़े। उसका राज़ किसी बड़े मुसलमान के यहाँ रहता होगा। सीधी बातचीत करेंगे तो पकड़ जायेंगे। कुछ देर कश-मकश में रहे। फिर रहा नहीं गया। शिकार हाथ से निकल जायगा। किसी बड़े के कान में बात पड़ी तो अपना बस न रहेगा और नामवरी भी शिकार में हाँकिवालों की रहेगी। बड़ा नाजुक वज़त है, सरकार को सुबूत दिलाया जा सका तो रात भर में महल खड़ा हो जायगा।

यूसुफ़ पिता के कमरे में गये। अली की आँख न लगी थी। आवाज़ पर उठे। यूसुफ़ बैठे, कहा, “उस रंडी को एक दफ़ा हल्के में ले आना है; झाबरमल डागा या जौहरी को फाँसिये। उसका मुजरा करायें।”

अली की निगाह बदली। कहा, “अबे उल्लू के पट्ठे, वही ढेर हुआ जहाँ दुश्मन। ये बक्काल बात पर आयेंगे। ये बड़े आदमी है। इनका राज़ बड़ों में रहता है। यों पर बँध जाते हैं। भेद खुल जायगा। बात मान, मछुआ बाज़ार के गुण्डों से काम ले। शिकायत लिखवा, देख, कैसी बेपर की उड़ाते हैं। उसका भी कुछ राज़ लिया या खातून समझ बैठा?” अली ने करवट बदली। यूसुफ़ चले आये।

दूसरे दिन कुछ गुण्डों की मदद ली। भले-आदमी बने-रहने वाले दो आदमी फँसे। उन्होंने रपोट लिखवाई। कुछ पढ़े-लिखे थे, पर बायाँ अँगूठा घिसकर गये थे। अँगूठे का निशान लगाया। गुण्डों ने कहा, “हुजूर का काम हो गया, अब चड्ढी गठ गई।” बाहर निकल कर कहा, “अब, बेटो, साल भर इनके सर चढ़े घूमो। फिर यहीं बँधे या तुम। तुम न बँधोगे। यह फँसेगा नया थानेदार। अब चलो, शराब पिला दो, और जल्द इस हल्के से कुछ कमा लो।” गनी ने रुस्तम से कहा, “दाम दे दे। उस्ताद खरीद लेंगे।” रुस्तम ने पाँच रुपये का नोट उस्ताद क्रमर को दिया।

क्रमर को मालूम था, एजाज़ शरीफ़ है, शहर में उसकी इज्जत है, गाने में लासानी, उसके खाते में दर्ज है—पहला नाम, इनाम भी देती जाती है हर महीने बीस रुपये। सोचा, अच्छे-खासे रईस की हैसियत उसकी, ४००) महीने का अँगरेजी-पढ़ा सिकत्तर रक्खे है, यह थानेदार चपेट में आयेगा। मामला जैसा भी हो, मालूम हो जायगा। सोचता, लापरवाही से साथियों के साथ बढ़ता हुआ, देशी शराब की दूकान की तरफ़ मुड़ा और भीतर घुसकर दो आदमियों से दो दोतलें खरीदीं, तब सस्ती थीं। वहाँ से बाज़ार की तरफ़ चला।

एजाज़, देखते-देखते मशहूर हो गई। वह एक बड़े तवायफ़ की बेटा है। शिक्षा कायदे से हुई है। उर्दू, बंगला और अँगरेज़ी अच्छी

जानती है। गाने-बजाने की भी बड़े-बड़े उस्तादों से तालीम मिली है। नये-पुराने दोनों तरह के गाने जानती है। बेजोड़ सुन्दरी। गोरार्ड काफी निखरी हुई। उँगलियाँ, हाथ, पैर, गला, नाक, आँखें, भौंहें, सब लम्बी-लम्बी, जैसे चम्पे की कली। पहनावा भी वैसा ही लम्बा। प्रान्त-प्रान्त और देश-देश का पहनावा करने वाली। उम्र ३० साल की होगी। साल भर से राजा राजेन्द्रप्रताप की नौकर है। दो हजार महीना लेती है। साथ बाहर भी जाती है और राजधानी भी। राजधानी में उसके लिए अलग बँगला है। कुछ महीनों से राजा साहब ने दूमरी महफ़िल का गाना रोक दिया है। कलकत्ते में उसकी अपनी आलीशान कोठी है। चारों ओर लान, बगीचा। फ़ौवारे लगे हुए। गुलाब और ऋतु-पुष्पों के पेड़। पत्थर की परियों की नंगी मूर्तियाँ। गाड़ी-बरामदा। नीचे और ऊपर सजी हुई बैठकें। विभिन्न प्रकार के साज। सुन्दर-सुन्दर तैल चित्र + फ़ाटक पर सन्तरियों का पहरा। दास और दासियाँ।

गाड़ी-बरामदे की ऊपर वाली छत पर फूलों के टब रक्खे हुए हैं। मेज़ पर दस्तरखान बिछा हुआ है। गुलाब की सजी फूलदानी रक्खी हुई है। गिलास में रोज़ेड बर्फ़-मिला रक्खा है। अभी लाल फेन नहीं मिटा। सूरज डूब चुका है, फिर भी उजाला है। सड़क के आदमी देख पड़ते हैं। मन्द-मन्द दखिनाव चल रहा है। एक-एक झोंके से कविता आकर गले लगती है। एजाज़ बैठी हुई गिलास के फूटते हुए फेन के बुलबुले देख रही है। रसीली आँखों से, मालूम नहीं कौन-सा विचार लगा हुआ है। एक कनीज़ खड़ी हुई आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही है।

इसी समय यूसुफ फ़ाटक पर देख पड़े। एजाज़ ने देखा, फिर आँखें फेर लीं। यूसुफ़ ने एजाज़ को नहीं देखा। सन्तरी के पास कुछ सिकण्ड के लिए खड़े हुए। मिलना चाहते हैं, कहा। सन्तरी ने सिर हिलाकर भीतर जाने का इशारा किया। यूसुफ़ निकल गये। पोर्टिको से बरामदे पर गये। कुर्सियाँ रक्खी थीं। एक बेयरा खड़ा था। आदर से बैठने के लिए कहा। यूसुफ़ बैठे। बेयरा ने कार्ड माँगा। कार्ड यूसुफ़ के पास नहीं था। उन्होंने कहा, सरकारी काम है।

रण्डी सरकारी काम में आ सकती है, कोई बड़ा काम होगा, जो मर्दों का किया हुआ नहीं पूरा हुआ, सोचता हुआ वह सिकत्तर के कमरे में गया। “खबर दी, एक साहब तशरीफ़ ले आये हैं”, कार्ड माँगने पर कहा, “सरकारी काम है।”

सेक्रेटरी का खास वक्त यही है, शाम के चार से रात के दस तक। इसी वक्त वह आफ़िस करते हैं। पत्रों के जवाब लिखते हैं, मिलनेवालों से बातचीत करते हैं। अपने कमरे से उठकर बाहर आये। यूसुफ़ साहब से हाथ मिलाया। पूछा, जनाब का नाम ?

“हाँ, एक है, मगर इस वक्त तो यही कि हम सरकारी।”

सेक्रेटरी कुछ सिकण्ड देखते रहे। पूछा, “क्या हुक्म है ?”

“हम मालिका-मकान से मिलना चाहते हैं।”

“उस वक्त दूसरा भी कोई होगा ?”

“नहीं।”

“यह नहीं हो सकता। आपको अपना कुछ पता देना होगा अगर आप अपना नाम नहीं बतलाना चाहते। फिर किस सरकारी काम से

यहाँ आने की ज़हमत गवारा की, फ़र्माना होगा और मुझमें। मैं उनसे अर्ज करूँगा फिर उनका जवाब आपको सुनाऊँगा।”

“यह ऐसा काम नहीं।”

“मान लीजिए, वह नौकर हैं, खातून की हैमियत से रहने की क़ैद है।”

“आप पहले फ़र्मा चुके हैं, कोई दूसरे रहेंगे तो मैं उनसे बातचीत कर सकता हूँ। फिर कहा, मैं आपसे कुल बातें कह दूँ, आप जवाब ला देंगे अपना नाम या पता बताने के बाद। यह शायद किसी खास दरजे की खातून के बर्ताव में आता है?”

“गुस्ताखी मुआफ़ फ़र्माएँ। रण्डी का मकान समझकर कितने ही लुच्चे आते हैं। हमें पेशबन्दी रखनी पड़ती है। सरकारी काम की पाबन्दी हमें कुबूल है, लेकिन वह कैसा सरकारी काम है, यह आप उन्हीं में कहेंगे, मैं उनका सेक्रेटरी हूँ, मुझ से नहीं; मेरे सामने भी आपको कहना मंजूर नहीं। ऐसी हालत में मैं आपको लुच्चा न समझकर सरकारी काम से आया हुआ अफसर समझूँ। मैंने कहा, वह नौकर हैं, खातून की तरह रहती हैं। इस पर भी आपने एक तुर्रा कस दिया। एक भले आदमी की तरह इतना समझने की तकलीफ़ भी आपको गवारा नहीं हुई कि जिन्होंने मालिका, मकान को नौकर रक्खा है, उन्हें उनकी बेपर्दगी, पसन्द न होगी, दोनों में नौकरी की शर्तें होंगी।”

“मैं समझा। अफसर को गाली आपने दी। अफसर क्या है, यह आपको अच्छी तरह मालूम होगा। अफसर इस तरह नहीं

आता, न यों जवाब देता है। वह अपनी जगह पर बुलायेगा और नौकरी की कुल शर्तों को तोड़कर खातून साहबा को चलकर मिलना होगा। उस वक्त हम कुछ ऐसी तैयारी ला देंगे कि खातून साहबा उम्र भर याद रखेंगी। हम कोई हैं और दर्ज होकर आये हैं। लौटकर कुछ लिखेंगे और भेजेंगे। आप सिकतर हैं, इसलिए मिल सकते हैं, और हम सरकारी काम से आये हैं, इसलिए नहीं मिल सकते। आप को खौफ है, जैसे हम कोई चाकू लिये हुए हैं और उनकी नाक काट लेंगे।”

यूमुरु की दहाड़ से सेक्रेटरी साहब दबे। कहा, “हमें जैसी हिदायत है, हमने आपसे अर्ज कर दी।”

फिर सँभलकर बोले, “अफसर जब बुलाएँगे, तब लिखकर बुलाएँगे या अपने नाम से आदमी भेजकर। मेरी समझ में नहीं आता, अफसर का बुलावा खुफिया तौर से कैसे होगा। फिर, जवाब मुस्तार आम से भी दिया जा सकता है या इन्हीं को हाजिरी बजानी पड़ेगी?”

“आप यह नहीं समझे कि सरकार मुस्तार आम का पेश होना मंजूर कर भी सकती है और नहीं भी। आप जैसी बातें कर रहे हैं, इनसे उलझन बढ़ती है। नतीजा साफ है, आपके हक में कैसा होगा। तैयार रहिये।”

“हम इतना जानते हैं, कई हजार रुपये हम इन्कम-टैक्स देते हैं; सरकार की निगाह में इसकी इज़्जत है। फिर आपको कुल माजरा समझा दिया गया है। एक प्रोविन्शल मेरे साथ भी है। अच्छी बात, अब मैं आपसे समझूँगा। तैयार रहिये। आप अपना भेद नहीं बताना।

चाहते, मैं कहता हूँ, बगैर कुछ भेद दिये आप बचकर नहीं निकल सकते।”

थानेदार घबराये। फिर हिम्मत बाँधकर कहा, “हम जब यहाँ आये, समझिए, रत्ती-रत्ती हाल मालूम करके। हम अन्धे नहीं। सच, आपके मकान का ठाट आपकी हैसियत बयान कर रहा है। मगर हमारी बात मानियेगा तभी फ़ायदा उठाइयेगा, सरकार के यहाँ नेकनामी लिखी जायगी।”

“जबतक हमें इसका गुमां भी न होगा कि आप कौन हैं, हम आपके साथ लगे-लगाये रहेंगे। उधर हमारे पैर तभी उठ सकते हैं जब हमें कुछ राज मिल जायगा।”

“इस तरह से मिलने एक ही महकमे के आदमी आते हैं। नाम वह कभी नहीं बतायेंगे, सिर्फ काम बतला जायेंगे। कर दिया तो नेकनामी, न किया या धोखा दिया तो इसकी सज़ा है। समझिए—हम-पुली . .।”

“आप जो काम बतला जायेंगे, उसका हासिल मालूम करने के लिए आप ही आयेंगे या कोई दूसरे?”

“हमीं आयेंगे; मुमकिन, और आदमी हमारे साथ हों। बाद को, गिरह पड़ गई तो बड़े साहब भी आ सकते हैं।”

सेक्रेट्री उठकर अपने कमरे में गया। दिन, तारीख, मास, साल, समय और पुली के नाम से कही हुई उस आदमी की कुल बातें उसकी शकल के वर्णन के साथ लिख लीं। एक सिपाही को बुलाकर कहा, “तुम दो-तीन छिपे तौर से इस आदमी का हाल मालूम करो,

पूरा पता ला सके तो इनाम मिलेगा। आदमी बरामदे में बैठा है। कोई छेड़ न करना।”

फिर बाई जी के पास खबर भेजी कि जरूरी काम से मिलना है। एजाज ने बुला भेजा। सिकत्तर साहब गये। उसने मेज़ की बगल वाली कुर्सी पर बैठाला। सिकत्तर बैठकर एक-एक करके कुल बातें संक्षेप में सुना गये।

एजाज कुछ देर तक सोचती रही। फिर पूरे इतमीनान से कहा, “सिकत्तर साहब, एक राज और लीजिए। कहिए, वह बातचीत करने के लिए तैयार हैं अगर उस बातचीत में राजा साहब का नाम नहीं आया। गुलाबबाड़ी में एक मेज़ और दो कुर्सियाँ डलवा दीजिए।”

नौकर से कहकर सिकत्तर यूसुफ़ के पास आये। कहा, “बाई जी आपसे बातचीत करेंगी, शर्त एक रहेगी, आप राजा साहब के बारे में कोई बात न उठाएँगे।”

“हम किसी शर्त पर बातचीत न करेंगे,” यूसुफ़ ने पुतलियाँ पलटकर कहा।

सिकत्तर फिर एजाज के पास गये। सुनकर एजाज ने कहा, “आप समझे?—उन्हीं की गरदन नापी जायगी। हमारा और इनका कहना लिख लीजिएगा। हम नीचे चलते हैं। लिखकर सभ्यता से उन्हें भेज दीजिए; गुलशन ले आयेगी। आदमियों से कह दीजिएगा, होशियारी रक्खें।”

एजाज गुलाबबाड़ी में आकर बैठी। सिकत्तर ने लिखकर यूसुफ़ से आकर कहा, “सरकार की फ़तह रही। गुलाबबाड़ी में हैं। तशरीफ़ ले

चलिए।” गुलशन की तरफ हाथ उठाकर कहा, “यह ले जायगी।”

गुलशन यूसुफ को ले चली। गुलाबबाड़ी में एजाज ने नसीम को कीमती साड़ी पहनाकर बैठाला था। बगीचे की शोभा देखते हुए यूसुफ चले। अँधेरा हो आया था। कुछ दूर एक गैस की बत्ती जल रही थी।

६

यूसुफ फतहयाब थे—उनकी शर्तें कुबूल कर ली गईं। गुरुर से कदम उठ रहे थे। गुलशन गुलाबबाड़ी में ले गईं। नसीम की तरफ उँगली उठाकर कहा, “आप।”

नसीम उठकर खड़ी हो गई। बड़ी अदा से कहा, “आदाब अर्ज़।”

यूसुफ बहुत खुश हुए। ज़वाब में हाथ उठाया, वह हाथ जैसे सरकार का हो।

नसीम ने पूछा, “हुज़ूर का मिज़ाज अच्छा?”

“खैरियत है।” थानेदार साहब ने जवाब दिया।

कुर्सी की तरफ उँगली का हल्का इशारा करके नसीम ने कहा, “हुज़ूर की कुर्सी।”

थानेदार साहब संजीदगी से बैठे। नसीम भी बैठी। बैठते हुए कहा, “हम हुकम की तामील करने वाले!”

थानेदार साहब बहुत खुश हुए। सोचा, रंग चढ़ गया; बाज़ी हाथ है। इधर-उधर देखा। गुलशन हट गई थी।

“आप एजाज़ बाई हैं?” थानेदार ने पूछा।

“हूँकम।”

“काफ़ी अरसा हुआ। दूसरा काम है। वक़्त ज़्यादा नहीं।” नसीम खामोश रही। थानेदार को सन्देह नहीं हुआ। वह सुन्दरी और खानदानी दिख रही थी। बातचीत साफ़।

“आपकी शिकायत है।”

नसीम आँखें फाड़कर देखने लगी।

“दोस्त और दुश्मन सबके होते हैं। सरकार तहकीकात कर रही है। वक़्त पर दूध और पानी अलग कर देगी।”

नसीम ने ललित स्वर से कहा, “क्या ही अच्छा हो कि इसके पूरे भेद से हम भी वाकिफ़ हो जायँ।”

“यह हमारे हाथ की बात नहीं। खुद हम इसके भेद से वाकिफ़ नहीं। पर एक सूरत हम ऐसी बताएँगी कि शिकायत भी रफ़ा हो जायगी और सरकार के मददगार दोस्तों में नाम दर्ज हो जायगा।”

“मेहरबानी।” नसीम ने विजयी स्वर से कहा।

“मैं मुसलमान हूँ। दूसरी शिरकत मज़हबी है

नसीम गम्भीर हो गई। कुर्सी पर हाथ समेट कर बैठी।

“आजकल ज़मींदारों और कुछ हिन्दुओं ने सरकार के खिलाफ़ गुटबन्दी की है। जिस ज़मींदार से आपके तअल्लुकात हैं, इस पर सरकार को शुभा है। इसका भेद मालूम होना चाहिये। इससे सरकार

की मदद भी होगी और कौम की खिदमत भी। सरकार की मदद इस तरह कि आपके जरिये दुश्मन का राज सरकार को मिलेगा और कौम की खिदमत इस तरह कि सुदेशी का बवेला जो हिन्दुओं ने मचा रक्खा है, यह जड़ से उखड़ जायगा। मुसलमान रैय्यत को फ़ायदे के बदले नुकसान है अगर हिन्दुओं को कामियाबी हुई। सरकार न बंगाल के दो हिस्से इस उसूल से किये हैं कि मुसलमान रैय्यत को तकलीफ़ है; मौरूसी बन्दोबस्त वाली ९९ हर सदी ज़मीनों पर हिन्दुओं का दरूल है; यह आगे चलकर न रहेगा। इससे मुसलमानों की रोटियों का सवाल हल होता है। आपके दोस्ताने के बर्ताव से दुश्मनों की की हुई शिकायत का असर जाता रहेगा, उल्टे फ़ायदा उठाइयेगा।

“आपकी सलाह नेक।” नसीम ने दोस्ती की आवाज़ में कहा।

“आदाब अर्ज़।” थानेदार साहब उठकर खड़े हो गये, “अब मैं चलता हूँ। सीन याद रखियेगा। जो शरूस कहे, उसे अपना आदमी समझिएगा। उसे और कोई राज न दीजिए। सिर्फ़ कहिए, ‘फँस गया’ या ‘नहीं फँसा।’ पूरी बातें मैं ही मालूम करूँगा। मैं तीन और तीन कहूँगा। आप बाकिफ़-हाल है। सहूलियत से काम लेना है। हमारे आप लोगों से गहरे तअल्लुफ़ात रहते हैं।”

“पान-सिगरेट शौक़ फ़र्माते हैं?” थानेदार साहब चल पड़े थ, खड़े हो गये। नसीम ने सोने के पानदान से निकालकर पान दिये और डिब्बे से सिगरेट। सामने दियासलाई जलाई। थानेदार साहब ने आँखें भरकर देखा। दियासलाई के गुल होते जैसे दिल में अँधेरा छा गया।

तीसरे दिन राजा साहब की चलने की तैयारी हुई। एजाज को भी चलना था। उससे बातचीत हो चुकी थी। उसने तैयारी कर ली। इस बार नसीम और सिकत्तर को यहीं छोड़ा। नसीम की कुल बातें लिखवा दीं। एक नक़ल अपने पास रखी। थोड़ा-सा सामान और गुलशन को लेकर जेट्टी के लिए गाड़ी पर बैठी। राजा साहब के साथ कुल सहूलियतें हैं। खुशी-खुशी चल दी। आदर्मियों से थानेदार साहब को भेद नहीं मालूम हो सका। फाटक के बाहर रास्ते पर भेस बदले हुए पुलिस के सिपाही थे, कुछ और आदमी। थानेदार निकल कर उल्टे रास्ते चले। काफ़ी दूर निकल गये। फिर एक-एक छँटने लगे। थानेदार रेलवे-स्टेशन से डायमन्ड हारबर की तरफ़ रवाना हुए।

जेट्टी से राजा साहब का स्टीमर लगा हुआ था। आने-जाने के सुभीते के लिए उन्होंने खरीदा था। अच्छा-खासा स्टीमर, दो-मंजिला। नीचे सामान लग चुका था। सिपाही, खानसामे, बाबू, पाचक और खिदमतगार आ चुके थे। डेक की एक बगल लोहे के चूल्हों पर खाना पक रहा था। जाफ़रान और गर्म मसाले की खुशबू आ रही थी। ऊपर वाले डेक की सीढ़ी पर सशस्त्र पहरा लग चुका था। केबिन में और जहाज़ के सामने ऊपरवाले डेक पर ऊँचे गद्दे बिछ गये थे। अभी राजा साहब नहीं आये। एजाज की गाड़ी आई। गुलशन ने उतरकर गाड़ी का दरवाज़ा खोला और कब्ज़ा पकड़ा।

सहारे के लिए बाँह की रेलिंग बन गई। एजाज़ उतरी। लोगों की आँखें जम गईं। रूप से हृदय भर गया। आज का पहनावा मोरपंखी है। साड़ी का वही रंग, वही बूटे, फरमाइश से तैयार की हुई। जमीन सुनहरे तारों की। सर के कुछ बाल मोर की चोटी की तरह उठे हुए; हर डाँड़ी पर हीरे की कनियों के साथ नीलम बँधा हुआ। पैरों में कामदार मोती-जड़ी जूतियाँ। उतरकर एजाज़ मोर की ही चाल से चली। जेट्टी की एक बगल पुलिस का सिपाही खड़ा था। सलाम किया। जेट्टी और नीचेवाले डेक पर राजा के लोग खड़े थे। देखकर खुश हुए, पर मुँह फेरकर दूसरे को सुनाकर गाली दी। एजाज़ दूर थी। चलती हुई पास आई। लोगों ने रास्ता निकाल दिया। डेक पर जाने की काठ की सीढ़ी लगा दी। उस डेक से दूसरे तले की सीढ़ी पर वह चढ़ने लगी। सिपाही ने रानी साहबा की सशस्त्र सलामी दी। हाथ उठाकर, एजाज़ ऊपर गई। गुलशन ने पूछा, “कहाँ रहिएगा?”

“केबिन में, जबतक राजा नहीं आते।”

“लोग अड़े हैं, कुछ उनका भी खयाल...?” कहते हुए गुलशन ने केबिन का दरवाजा खोला।

“अभी साड़ी और पहनावा देख रहे हैं,” कहती हुई एजाज़ केबिन में चली गई, “जब आदमी को देखेंगे, तब तू ही ठहरेगी। इस पहनावे से तो नहीं घिसटते?” एजाज़ ने गुलशन की साड़ी का छोर खींचा। गुलशन मुस्करा दी। “अच्छा चलो, केबिन के सामने बाली कुर्सी पर बैठो जरा देर।”

“मैं कहती हूँ, राजा साहब के आने पर डेक पर महफ़िल लगेगी।”

“तू राजा साहब बन जा, मैं शीशा और प्याली ले लूँ।”

गुलशन भग गई। दूसरी तरफ से बाहर निकली और कुर्सी पर बैठ गई।

कोच-बाक्स की बगल में बैठे सिपाही ने पेटियाँ उठवाकर एजाज के केबिन में लगवा दीं। चलते वक्त की सलामी दी। एजाज ने गुलशन ने बीस रुपये ले लेने के लिए कहा। ५) खुद ले, ५) कोचमेन और साईस को दे, ५) डेक के पहरेदार को, ५) पुलिस के सिपाही को।

सिपाही के चले जाने पर गुलशन को भेजकर राजा साहब के एक खिदमदगार से मालूम किया, राजा साहब और पुलिस के सिपाहियों को क्या इनाम मिला।

जेट्टी पर जहाज के ठहरने का तीन-मिनट समय रह गया, राजा साहब की गाड़ी आई। सिपाहियों और नौकरों पर अदबी सन्नाटा छा गया। रफ्तार के बढ़ने पर भी शोरोगुल का नाम न रहा। शान के कदम उठाते हुए जेट्टी से गुजरकर राजा साहब ने डेक पर चढ़ने वाला पीतल का चिकना डंडा पकड़ा। एक बगल, साथ आये हुए सशस्त्र अर्दली और सीढ़ी के पहरेदार ने खड़े होकर बन्दूक की सलामी दी। राजा साहब सीढ़ी से चढ़े। ऊपर के डेक पर, जहाँ मोड़ी खत्म होती है, एजाज खड़ी थी। उसके पीछे गुलशन। एजाज ने ललित सलाम किया। राजा साहब ने हथेली थाम ली। दोनों साथ-साथ सामने बिस्तर की ओर बढ़े। गद्दे पर पहले एजाज ने पैर रक्खा। दोनों तकिये लेकर बैठे। राजा साहब अतृप्त आँखों से

एजाज़ का खुलता हुआ रूप और पहनावा देखते रहे। ज़रा देर के लिए सेक्रेटरी आये। राजा साहब ने पुलिस के लिए कहकर जहाज़ खोल देने की आज्ञा दी।

जूट्टी से बँधी हुई जहाज़ की मोटी रस्मियाँ और लोहे की साँकलें खोली गईं। जहाज़ घूमा। फिर हुगली नदी से होकर दक्षिण की ओर चला। ऊपर के पीछे वाले हिस्से में सेक्रेटरी, कुछ कर्मचारी और ऊँचे पद वाले सिपाहियों के अफसर बैठे। एजाज़ हुगली में बँधे हुए अँगरेज़, फ्रेंच जर्मन और अमेरिकन बड़े-बड़े जहाज़ देख रही थी और उनसे होने वाले विशाल व्यापार पर अन्दाज़ा लगा रही थी। मधुर दखिनाव के तेज झोंके लग रहे थे। दिल को कोई रह-रहकर गुदगुदा रहा था। जहाज़ फोर्ट विलियम किले के पास आया। किनारे लड़ाई के दो जहाज़ बँधे थे। इनकी बनावट दूसरी तरह की थी। रंग पानी से मिलता हुआ। एजाज़ ने चाव से इन जहाज़ों को देखा। एक नज़र हाईकोर्ट की विशाल इमारत पर डाली। एडेन गार्डन की याद आई, यहाँ हवाखोरी के लिए वह बहुत आ चुकी है। यह एक शिकारगाह भी है। शाम को शहर के रईस बड़ी संख्या में आते हैं, टहलते हैं और बेण्ड सुनते हैं। जहाज़ तेज़ी से बढ़ने लगा।

राजा साहब ने घन्टी बजाई। एक बेयरा आया।

“लाल पानी” राजा साहब ने बेयरा से कहा।

बेयरा शैम्पेन की बोतल, बर्फ़, छोटा टम्बलर और पेग ट्र पर लाकर रख गया। गुलशन एजाज़ की बग़ल में बैठकर टम्बलर में बर्फ़ और शैम्पेन मिलाने लगी। पाचक ब्राह्मण कटलेट्, चाप और कबाब

चाँदी की तश्तरियों पर रख गया। कहार ट्रे पर ढक्कनदार चाँदी के गिलासों में पानी ले आया। रखकर तौलिया लेकर खड़ा रहा। गुलशन ने दो पेग भरे। एक हाथ में रखता, एक बढ़ाकर एजाज़ को दिया। एजाज़ ने पेग चूमकर राजा साहब के हाथ में दिया, फिर अपना लिया। गुड्लक् हुआ। दोनों पीने लगे।

प्रायः एक डज़न पेग थे। ये पिया पेग एक ही बैठक में नहीं इस्तेमाल करते। गुलशन तीसरा और चौथा पेग तैयार करने लगी। पेग खत्म करके राजा साहब ने हाथ बढ़ाया। बेयरा ने पकड़ लिया। एजाज़ ने भी बढ़ाया।

गुलशन ने तीसरा दौर तैयार करके, चाँदी की पेग रखने वाली रिकाब में लगाकर दोनों के बीच में रख दिया। दोनों, मौगम, गंगा, शिव-पुर के बगीचे, हवा आदि का जिक्र करते हुए, साथ-साथ नाश्ता करने लगे।

दूसरा दौर भी समाप्त हुआ; तीसरा भी हुआ। नशे का प्रभाव बढ़ने लगा। दोनों के हाथ धुला दिये गये। गिलोरी और सिगरेट की तश्तरियों को छोड़कर नौकर और कुल चीजें उठा ले गये। फिर केबिन के पास के पर्दे, आड़ के लिए खोलकर, रेलिंग के डंडों के साथ बाँधने लगे। कीमती हारमोनियम लाकर रख दिया। गुलशन को छोड़कर और सब बाहर निकल गये।

“कुछ सुनने की तबियत हो रही है।” राजा साहब ने प्रेम से कहा।

एजाज़ ने गुलशन की तरफ़ देखा। गुलशन ने पीकदान बढ़ाया। पान थूककर एजाज़ ने कहा, “तेज़ हवा है। आवाज़ उड़ जायगी।” कहकर हारमोनियम खोला।

“तुम्हारा गाना है, हारमोनियम हो, पियानो या सितार-इसराज, छाकर रहेगा।” राजा साहब ने सहृदय स्वर से बढ़ावा दिया। एजाज़ हिली।

पर्दे पर उँगली रखी। कहा, “मयकशी के बाद आवाज़ पर क्राबू नहीं रहता।” कहकर स्वर निकाला। राजा साहब तद्गतेन-मनसा ध्यानावस्थित हुए।

एजाज़ की मधुर आवाज़ निवली। जहाज़-भर के लोग, नीचे और ऊपर के, कान लगाये रहे। गाना शुरू हुआ—

“हर एक बात प’ कहते हो तुम कि तू क्या है,

तुम्हीं कहो कि यह अन्दाज़ेगुप्तगू क्या है?

जंला है जिस्म जहाँ, दिल भी जल गया होगा,

कुरेदते हो जो अब राख जुस्तजू क्या है ?

“

रगों में दौड़ते-फिरने के हम नहीं कायल,

जब आँख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है ?”

लोगों पर सच्चा जादू चला। सभी ने दिल दे दिया, वही दिल जो हाथ से छुटकर मजबूती से हाथ पकड़ता है। छोटे-बड़े सभी उसके भक्त हो गये। कोयला-झोंकनेवाले एक झुक्की झोंककर नीचे से डेक पर चढ़ आये। श्रम को हल्का कर लिया। सोचा, वह कौन-सा स्वर है जो दिल पर अपनी पूरी-पूरी छाप लगा देता है ? खड़े लोगों में क्षणभर के लिए विषमता नहीं आई; किसी बड़प्पन के कारण या पैसा होने की वजह गायिका का कण्ठ इतना मधुर है, यह वे नहीं सोच सके; विरोध का क्षण ही मिट गया। उन पंक्तियों के लेखक महाकवि

गालिब समय के सताये हुए और गानेवाली एजाज् समय की संस्तुत, फिर भी दोनों में साम्य ! यह किसी अधिकार की बात न होगी। अधिकार से वस्तु, विषय या बात इतनी सुन्दर नहीं बनती, ऐसी पूरी नहीं उतरती। यह वह अधिकार है जहाँ अधिकार ढीला है।

विलासी राजा एकटक उस सच्चे रूप और स्वर को देखते-समझते रहे। कुछ देर एजाज् ने दम लिया। निगाह उठाई। भरा पेग उठाकर राजा साहब को दिया। खुद एक लौंग दबाई। दो कश खींचकर पीकदान में डाल दी और हारमोनियम सँभाला।

एक ठुमरी गाई :—

“जाने दे मोको सुनो सजनवा,
 काहे करत तुम नित नित मोसन रार,
 नहीं, नहीं मानूँगी तिहार ।
 छेड़ करत, नहीं मानत देखो री सखि,
 मेरी सुनै ना,
 बिन्दा कहत अब नित नित मोसन रार,
 नहीं, नहीं मानूँगी तिहार।”

अभी दुपहर नहीं हुई। भैरवी का वक्त पार नहीं हुआ। श्रीश राजा साहब को गम्भीर, और चलते हुए जहाज् के सिवा कोई आवाज् न आती हुई देखकर एजाज् समझ गई—लोग कान लगाये हुए हैं। वह खुशी से भर गई।

एजाज् ने छेड़ा :—

“यामिनी न येते जागाले ना केन

बेला होल मरि लाजे ।
शरमे जड़ित चरणे केमने
चलिब पथेरि माझे ।

आलोक-परशे मरमे मरिया
हेर लो शेफालि पड़िछे झरिया
कोनो मते आछे पराण धरिया
कामिनी शिथिल साजे ।

निबिया बांचिल निशार प्रदीप
ऊषार बाताम लागि,
नयनेर शशी गगनेर कोने
लकाय शरण मागि,

पाखी डाकि बले गेल विभावरी,
वधू चले जले लइया गागरी,
आमिओ आकुल कवरी आवरि
केमने याइब काये ।”

रवीन्द्रनाथ का गीत; कलकत्ता का आधुनिक फैशन एजाज ने सच्चा अदा किया—वही उच्चारण, वही अँगरेजियत। राजा साहब पर और आधुनिक शिक्षित बंगालियों पर इसी स्कूल का सबसे अधिक प्रभाव है, रवीन्द्रनाथ के गानों में स्वर का सब से अधिक मार्जन मिलता है। राजा साहब की आँखों के सामने गंगा के शुभ्र फेन की तरह गीत का अस्तित्व तैरने लगा।

एजाज़ ने हारमोनियम हटा दिया। एक पेग और उठाकर राजा साहब को दिया, एक खुद लिया।

शराब, बात-चीत और गाने के बीच एजाज़ देखती जाती है, मटियाबुर्ज पार हुआ—शाह वाजिद अली का कारागार, तेल का केन्द्र बजबज पार हुआ, उलूबेड़िया पार हुई, कितनी ही मिलें निकल गईं, जिनका अधिकांश मुनाफा विदेशियों के हाथ जाता है। एजाज़ अँजरेज़ी जानती है, सम्वाद-पत्र पढ़ती है, दूर निष्कर्ष तक आसानी से पहुँच जाती है, सम्पादक की टिप्पणी पर टिप्पणी लगा सकती है।

गुलशन राजा साहब को सिगरेट और पान देती जाती है। गाना बन्द करके एजाज़ ने सिगरेट के लिए उँगली बढ़ाई। गुलशन ने हीरे की पाइप में सिगरेट लगा दिया। एजाज़ पीने लगी।

“तुम्हारे नहाने, भोजन और आराम करने का वक्त हुआ।” राजा साहब ने कहा।

“पूजा करने की बात छोड़ दी ?” एजाज़ ने बड़ी-बड़ी आँखें मिलाई ॥

“वह दिल में होती रह गई।”

“उसने मिला भी दिया।”

राजा खामोश हो गये। एजाज़ ने कहा, “तुम उठो। नहाना मत। तवालिया गर्म पानी से निचोड़कर बदन पोंछवा डालो, धोती बदल दो। शराब पर नहाना !”

राजा साहब उठ गये। एजाज़ बैठी हुई, नदी की शुभ्र शोभा, श्याम तटभूमि देखती रही।

पुरानी कोठी के सिपाहियों के अफसर जमादार जटाशंकर सिंहद्वार पर रहते हैं। पलटन में हवलदार थे। ब्रह्मा की लड़ाई के समय नाम कटा लिया। जवान अच्छे तगड़े। नौकरी ढूँढ़ते-ढूँढ़ते यहाँ आये। निशाना अच्छा लगाते हैं। राजा ने रख लिया। खुशामद करने में कमाल हासिल, तरक्की कर गये।

कोठी के सामने पुराना फ्रव्वारा है। अब नहीं चलता। चारों तरफ से पक्का हौज। दीवार पर बैठे थे। मुन्ना गजरी।

दोनों ने एक दूसरे को देखा। मुन्ना ने छीटा जमाया—“एक घोड़ा फेर रही हूँ।”

“वाह रे मेरे सवार! कौन घोड़ा?”

“एक हिन्दुस्तानी घोड़ा है।”

जमादार जटाशंकर झेंपे। गुस्सा आया। पर सँभलकर कहा, “और घोड़ी बंगाली है?”

मुन्ना को भी बुरा लगा। बदलकर कहा, “जब हमसे बातचीत करो, रानी समझकर करो।”

जटाशंकर सकपका गये। क्रोम में आकर कहा, “क्या कहा?”

“कह रही हूँ, तुम्हारी नौकरी नहीं रहेगी। पहले रानी जी की सलामी दो,” तिनककर मुन्ना ने कहा।

जटाशंकर ने रानी जी की सलामी दी। फिर ताव में आये। कहा, “मैं राजा हूँ, राजा की सलामी दे।”

“तुम गवाँर हो,” मुन्ना ने कहा, “मैं रानी हूँ, रानी; रानी राजा को सलामी देती हैं? जवाब में चूमती हैं। तुम मुझको चूमो।”

जटाशंकर ने सोचा, “रानी और राजा का खेल कर रही है।” प्रम बढ़ गया। चूमने के लिए मुँह बढ़ाया कि गाल पर मुन्ना का चाँटा पड़ा। जटाशंकर चौंककर हाथ भर उछल गया। साथ ही मुन्ना ने कहा, “रानी का तुम्हारे लिए यही जवाब होगा। रहीं बात राजा को सलामी देने की; तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हम सिपाही नहीं; हम प्रणाम करते हैं।” मुन्ना ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, कहा, “इस तरह; अब तुमसे फिर कहती हूँ, मेरे साथ रानी जी का मान है, उन्होंने दिया है, इसको अँगरेजों में आनर कहते हैं; राजा ने तुमको मान नहीं दिया, तुम अपनी तरफ से राजा का मान लेते हो। रानी का मान पहले तुमसे लिया जायगा। हम जब आयेंगे, तुम उठकर खड़े हो जाओगे और हाथ जोड़कर रानी जी की जय कहोगे। तभी हम रानी जी का आनर वहाँ चढ़ा सकेंगे।”

“कहाँ?”

“वहीं जहाँ हम काम करते हैं?”

“हम रानी जी से पूछ लें।”

“और किस रानी जी से तुम पूछोगे? रानी का मान है यहाँ, तुमको यह बतलाया जा चुका है, वहाँ तुम जाओगे, दासी से कहोगे, खबर भेजोगे, तुमको जवाब नहीं मिलेगा, बिना मान की रानी जवाब क्या देंगी? तुम इतना नहीं समझते, रानी जी का मान दूसरी के साथ तभी बाँधा जाता है जब कोई उनका पानी उतारता है। जहाँ हम काम

करते हैं, वहाँ की उस औरत ने रानी जी का मान घटाया है, उसका मान घटाया जायगा। तुमसे यह भेद बतला दिया गया। अब बताओ, तुम साथ दोगे, या नहीं।”

“रानी जी के मान बढ़ाने में क्यों साथ नहीं देंगे?”

“अच्छा, अब रानी जी का मान हम रानी जी को देते हैं। अब हम हम हैं। अब हमको तुम चाहो तो चूम लो।”

जटाशंकर फिर चूमने के लिए लपके। पकड़कर चूमने लगे, तो मुन्ना ने उनके होठों के भीतर जीभ चला दी और कहा, “तुमने हमारा थूक चाटा। हमारी जात कहार की है। हम गढ़ भर में कहेंगे। तुम कौन बाँभन हो?”

जटाशंकर सूख गये। सोचा, “यह कुल चकमा उनकी जाति मारने के लिए था। कल से कोई पानी नहीं पियेगा।” बहुत डरे। देवता की याद आई कि उन्होंने न बचाया। सोचा, ब्रह्मा की लड़ाई में काम आ गये होते तो अच्छा होता।

मुन्ना टकटकी बाँधे हुए पं० जटाशंकर मिश्र के बदलते हुए मनो भाव देखती रही। पंडित जी ब्रह्मा की लड़ाई में नहीं मरे, इसलिए डरे। कहा, “तू मुझे अपना गुलाम समझ, जो कहेगी, करूँगा; थूक चाटने को कहे तो चाटूँगा, मगर किसी से कह मत।”

मुन्ना की रग-रग में घृणा भर गई। समझ गई, “यह आदमी प्रणयी नहीं हो सकता। यह धोखा देगा। इसको उतारकर रखना चाहिये।” खुलकर कहा, “तुम जबतक हमारी बात मानोगे, हम किसी से नहीं कहेंगे।”

हाथ जोड़कर जटाशंकर ने कहा, “मंजूर।”

“हमारे यहाँ” मुन्ना ने कहा, “घोड़ा-घोड़ी दोनों को घोड़ा कहते हैं। उसीको हम फेर रहे हैं, यही कहा था। कारण भी समझा दिया।” प्रसन्न होकर जटाशंकर ने कहा, “हाँ, अब समझ में आ गया।” “तो उस घोड़ी का अपमान करने के लिए एक घोड़ा चाहिए।” “हाँ।”

“वह घोड़ा तुम बनोगे या मैं?”

जटाशंकर फिर जगो। आँखें लाल हुई देखकर मुन्ना ने कहा, “गाल पर पड़े तमाचेवाली बात कहूँ या होठों के अन्दर गई जीभ वाली?”

जटाशंकर फिर ठंडे हो गये।

मुन्ना ने कहा—“हम इसी तरह घोड़ा फेरते हैं, उसको भी फेरते हैं, तुमको भी। बोलो, घोड़ा बनोगे?”

“बनना ही पड़ेगा।”

“तो तीन रोज़ लगातार उसी तरह हाथ जोड़कर रानी जी की जय कहोगे। तीसरे दिन अन्दर के बगीचे वाले तालाब में दिन के दस बजे जब वह नहाने जायँगी, तब.....समझे?”

“अन्दर के बगीचे में मर्द के जाने की मुमानियत है।”

“तो, उसको तुम्हारे पास भेज दें?”

जमादार जटाशंकर बहुत हैरान हुए। कहा, “अच्छा, जायँगे।”

मुन्ना ने कहा—“जमादार, तभी तुमको मालूम होगा। हम तुमको नमस्कार करते हैं, तुम्हारी सेवा करते हैं, पर तुमको खुश नहीं कर

पाते, हमारे छूने से तुम्हारी जाति मारी जाती है। तुम हमें चूमोगे, इससे कुछ नहीं होगा, पर हम तुम्हें चूमेंगे, इससे तुम्हारा धर्म जाता रहेगा। कोई चूमना ऐसा भी है जिसमें दोनों के होंठ न मिलें? अच्छा, तुम भी ब्राह्मण हो, यह भी ब्राह्मण है; तुम इसके पास जाओगे तो तुमको मालूम होगा कि तुमसे यह और कितनी बड़ी ब्राह्मण है। उस दिन रानी जी के सामने इसका तेज देखकर दासियाँ हैरान हो गई।”

जटाशकर ने कहा—“अच्छा मुन्ना, मेरी स्त्री गुजर गई है। तू मेरी स्त्री, और यही मैं तुझे समझूँगा। जा, तू गढ़ भर में कह दे कि मेरा-तेरा थूक एक हो गया।”

मुन्ना खिल गई। “यह मर्द है, जमादार, तुम मेरे मर्द। मैं कुछ समझकर तुम्हारे पास आई थी। औरत का प्यार जल्द समझ में नहीं आता। मैं भी बेवा हूँ, बेवा ही यहाँ दासी बनकर आ पाती है। मैं तुम्हारी दासी, तुम्हें मैं अपना ही रक्खूँगी। जैसा कहा है, वैसा करो; तालाब में जाओ; मैं दूसरा पेच लड़ाऊँगी। तुम्हारा एक अपमान होगा; सह जाओ। इस औरत के लिए भगवान् है। यह नेक है।

६

राजा राजेन्द्रप्रताप राजधानी में एजाज के साथ रह रहे हैं। उसी रोज आ गये।

गढ़ के बाहर एक बड़े तालाब के बीच में टापू की तरह सुन्दर बँगला है। चारों तरफ़ से लोहे की मोटी-मोटी छड़ें गाड़कर पुल की तरह सुन्दर रेलिंगदार रास्ते बनाये गये हैं। तालाब के किनारे-किनारे चारों रास्तों के प्रवेश पर ड्योढ़ियाँ बनी हुई हैं, वहाँ पहरे लगते हैं। बाहर, दूर तक सुन्दर राहें, दूब जमाई हुई, तरह-तरह के सीजनल और खुशबूदार फूल, क्यारियाँ, कुंज, बगीचे, चमन। कटीले तारों से अहाता घिरा हुआ; तारों पर बेल चढ़ाई हुई। हवा भी सदा-बहार, हर झोंके से सुगन्ध आती हुई। तालाब का जल स्वच्छ, स्फटिक के चूर्ण की तरह। बँगले का फ़र्श संगमरवर का, डबल दरवाज़े—एक काठ का, एक शीशेदार, रेशमी परदे लगे हुए। बैठक के फ़र्श पर बहुमूल्य कारपेट बिछा हुआ। कीमती बाजे, पियानो, हारमोनियम, फ़्लूट, क्लेरिअनेट, वायलिन्, सितार, सुरबहार, मृदंग, तबले, जोड़ी आदि यथास्थान रक्खे हुए। बेशक्रीमत कौच, सोफ़े, चीनी फूलदानी में सज्जित फूलों की मेज़ों के किनारे, एक-एक बग़ल लगे हुए। बीच में गद्दी बिछी हुई, गाव लगे हुए। रात में बत्तियों का तेज़ प्रकाश। चाँद और तारों के साथ प्रकाश का बिम्ब पानी में चमकता, चकाचौंध लगाता हुआ।

चारों तरफ़ से विशाल बरामदा, हर तरफ़ की राह से एक ही प्रकार का। हर बरामदे के भीतर बैठक एक ही प्रकार की, सजावट भिन्न-भिन्न। दो एजाज़ के अधिकार में हैं, दो राजा साहब के। और भी कमरे हैं। एजाज़ की बैठकें रोज़ नये परदों से सजाई जाती हैं; सूती, रेशमी, मखमली झालरदार; हरे, नीले, ज़र्द, बसन्ती, बैंगनी,

लाल, गुलाबी, हल्के और गहरे रंग के; कभी सफ़ेद। कोच और सोफ़ों पर भी वैसा ही शिलाफ़ बदलता हुआ। फूलदानियों में उसी रंग के फूलों की अधिकता? एजाज़ के बदन पर उसी रंग के पत्थरों के ज़ेवर। उसी रंग की साड़ी, सलवार-कुर्ता या पाजामा-दुपट्टा।

राजा साहब अपनी बैठक में बैठे हुए हैं। दिलावर सिंह पहले से तैनात किया हुआ था, आया। कहा, 'प्रभाकर आ गये।'

जागीरदार साहब ने कहा—“ये सब तुम्हारे तरफ़दार हैं। इनसे भी काम लिया गया है। पुलिस के जिन लोगों ने तुम लोगों को गिरफ़्तार करना चाहा था, बाद को शिनाख़्त न हो पाने की वजह—(तुमने दाढ़ी मुड़वा दी थी और रामफल का मुसलमानी नाम रख लिया गया था—रूप भी कैसा बनाया गया।)—थाने से उनका तबादला हो गया था, इन्होंने उन्हें खोजकर निकाला और पूरी खबर ली। अब इन्हें छिपा रखना है। दीवार को भी पता न चले। पुलिस पकड़ना चाहती है। ये पकड़ गये तो बच न पाओगे।”

दिलावर ने नम्रता से कहा, “हुज़ूर का जैसा हुक्म, किया जायगा।”

“पुराने गढ़ के पीछे ठहराओ। खुद दो-मंज़िले पर रहो। रसद ले जाया करो, इन्हें पकाया-खिलाया करो; रामफल को साथ रखना। दूसरा काम तुम लोगों से न लिया जायगा। चोर दरवाज़े की ताली ले जाओ। वे जब बाहर निकलना चाहें, उसी से निकाल दिया करो, रात के १२ से चार के अन्दर। जब कहें तब खोलकर भीतर ले आने को पहले से तैयार रहा करो, एक सेकण्ड की देर न हो। उनका काम न देखना, हम खुद देख लेंगे। खाना अच्छा पकाया करना,

मछली-मांस भी। हमारी रसोई में दो-तीन भाजियाँ पकती हुई देख लो।”

“जो हुक्म, हुआर।”

“ऐसा करो, अगर ये भी तुमको फँसाना चाहें तो न फँसा पायें। अब तो तुम्हारी दाढ़ी बढ़ गई है। रामफल की मूँछें भी बढ़ गई होंगी। यहाँ से चलकर बहल जाओ। रामफल का मियाँ वाला रूप तुम बनालो और तुम्हारा ठाकुर वाला वह। नाम भी बदल लो। उसको अपने नाम से पुकारना और उसी को ले जाने के लिए भेजना। हम कभी-कभी तुम लोगों से मिला करेंगे।”

“जो हुक्म।” दिलावर ने प्रणाम किया। राजा साहब की ओर मुँह किये हुए पिछले-कदम हटा। तालाब के पच्छिम वाले रास्ते से बाहर निकलकर गढ़ की तरफ चला, दूसरी ड्योढ़ी से घुसकर रामफल से मिलने के लिए। प्रभाकर के साथी बाज़ार में है। वह ड्योढ़ी के आगन्तुक-आगार में बैठा है। कभी निकलकर पान खाने के लिए बाहर चला जाता है। पैनी नज़र से इधर-उधर देख लेता है।

राज्य की क्रिया का ढंग सब स्थानों में एक-सा है। सब जगह एक ही प्रकार के नारकीय नाटक, षडयंत्र, अत्याचार किये जाते हैं। सब जगह रैय्यत की नाक में दम रहता है। चारे का प्रबन्ध ही सत्यानाश का कारण बनता है। अत्याचार से बचने की पुकार ही अत्याचार को न्योता भेजती है। ज़मींदार हो, तअल्लुकेदार; राजा हो या महाराज; कृपा कभी अकारण नहीं करता। जिस कारण से

करता है, वह इसकी जड़ मजबूत करने के लिए, मुनाफ़े की निगाह से, दूने से बढ़ी हुई होनी चाहिए। उसका कोप भी साधारण उत्पात या प्रतिकार के जवाब में असाधारण परिणाम तक पहुँचता है। सारे राज्य में उसके खास आदमियों का जाल फैला रहता है। वह और उसके कर्मचारी प्रायः दुश्चरित्र होते हैं, लोभी, निकम्मे, दगाबाज़। फ़ैले हुए आदमी प्रजाजनों की सुन्दरी बहू-बेटियों, विरोधी कार्रवाइयों, संघटनों और पुलिस की मदद से ज़मींदार के आदमियों पर किये गये अत्याचारों की खबर देने वाले होते हैं। निर्दोष युवतियों की इज़्ज़त जाती है, रिश्वत में रुपये लिये जाते हैं, काम में आराम चलता है, बचन देकर रैय्यत से पीठ फेर ली जाती है, बहाना बना लिया जाता है। पुलिस भी साथ ली जाती है। कभी चढ़ा-ऊपरी की प्रगति में दोनों अपने-अपने हथियारों के प्रयोग करते रहते हैं।

किसी गाँव में मुसलमानों की संख्या है। त्योहार है। गोकुशी वर्जित है; पर बकरा मँहगा पड़ा, गोकुशी की ताल हुई। आदमी से खबर मिली। एक रोज़ पहले, रात को पचास आदमी भेज दिये गये। कुछ मुखियों को उन्होंने मार गिराया।

कोई बड़ा मालगुज़ार है। किसी कारण पटरी न बैठी, लड़ गया। ताका जाने लगा। शाम को उसकी लड़की तालाब के लिए निकली। अँधेरे में पकड़कर खेत में ले जाई गई या दूसरे मददगार के खाली कमरे में क़ैद कर रक्की गई। दूसरे-दूसरे आदमी दाढ़ी लगाकर या मूँछें मुड़वाकर चढ़ा दिये गये—ज्यादातर मुसलमानी चेहरे से।

उन्होंने कुकर्म किया। उसके फ़ोटो लिये गये। तीन-चार रोज़ बाद लड़की घर के पास छोड़ दी गई। एक फ़ोटो आदमी के गाँव में, दूसरी थाने में डाक से भेजवा दी गई। नाम अंटशंट लिख दिये गये— चढ़ने वालों के; लड़की के बाप का सही नाम। गाँव और पुलिस की निगाह में दोनों गिर गये। गाँव का भी आदमी पुलिस का, उसके पास दूसरी तस्वीर, पुलिस के पास दूसरी। बाप से पूछा जाने लगा। उस पर घड़ों पानी पड़ा। गाँव वालों ने खान-पान छोड़ दिया।

किसी प्रजा ने खिलाफ़ गवाही दी। उसका घर सीर के नक्शे में आ जाता है। कभी उसके खानदान वाले पास की ज़मीन बटाई में लिये हुए थे। गुमाश्ते को कुछ रुपये देकर एक हिस्सा दबाकर घर बना लिया था। इस फ़ैल का उलटा नतीजा हुआ। रात-ही-रात सैकड़ों आदमी लगा दिये गये। घर ढहा दिया। लकड़ी, बाँस, पैरा उठा ले गये। गोड़कर घर की जगह गड़ढा बना दिया। नक्शे में वह जगह सीर में है।

किसी ने लगान नहीं दिया। वह ग़रीब है। विश्वास दिलाकर बुलाया गया कि सरकार से अपना दुख रोये। आने पर अँधेरी कोठरी में ले जाया गया। वहाँ ऐसी मार पड़ी कि उसका दम निकल गया। लाश उठाकर पुराने तालाब के दलदल में गाड़ दी गई। गाँव के गुमाश्ते ने क़ूबूल ही न किया कि वह गढ़ में ले जाया गया था। कुछ लोग ऐसे भी निकले जो पिटते समय उसको बाज़ार में उलटे कई कोस के फ़ासले पर देखा था।

बच-बचकर पुलिस से भी झपाटे चलते हैं। थानेदार ने इन्स्पेक्टर

और डी० एस० पी० आदि की मदद से प्रजा-जनों को किसी मामले में खिलाफ खड़ा किया, खूब दौंव-पेंच लड़े, राजा का पाया कमजोर पड़ा, समझौते की बातचीत हुई, रिश्वत की लम्बी रकम माँगी गई, एक उचित ठहराव हुआ। कांटा निकाल फेंका गया। पर दिल की लगी खटकती रही। दूसरा मामला उठा। थानेदार फाँस दिये गये। बलात्कार साबित हुआ। एस० पी० और डी० एस० पी० की सिफ़ा-रिश बदनामी के डर से न पहुँच सकी। तहकीकात का अच्छा नतीजा न निकला। थानेदार को सजा हो गई। नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

गरमी निकालने के लिए डी० एस० पी० या एस० पी० ने बुलाया। राजा ने मुख्तारआम या मैनेजर को भेज दिया। कमजोरी से कभी बात न दबी, डी० एस० पी० ने पूछा—“राजा नहीं आये।” मुख्तारआम ने कहा, “इजलास में तो मैं ही हुजूर के सामने हाज़िर होता हूँ,” या मैनेजर ने कहा, “आप की सेवा के लिए हम लोग तो हैं ही।” उस दफ़े खामोशी रही। दोबारा बदला चुकाया गया। पहले कुछ प्रजाओं की दस्तख़तशुदा शिकायतों की गईं। ऊँचे कर्मचारियों को दिखाया गया। कहा गया कि राजा पर सरकार का शासन नहीं, थाने में थोड़े लोग रहते हैं, राजा के लोग उनको डरवाये रहते हैं, राजा बदचलन है, रैथ्यत की इज़्जत बिगड़ता है, पुलिस की सच्ची तहकीकात नहीं होने देता, पुलिस को अधिकार के साथ काम करने दिया जाय तो रास्ते पर आ जाय। हुकम लेकर दरबार का चकमा दिया गया। राजा गये। पर दरबार से शिकायत करनेवाले लोगों की ही शिरक़त

रही। राजा को कुर्सी भी न दी गई। लाट साहब से शिरकत करने-वाले डी० एस० पी० भी खड़े रहे। लिखी शिकायतों के आधार पर कुछ भला-बुरा कहा, कुछ नसीहत दी। डी० एस० पी० साहब की तारीफ़ करते रहे। जिन शिकायतों का आधार लिया गया था, उनमें राजा का हाथ न था, फलतः चेहरे पर सियाही न फिरी, कलेजा न धड़का।

दरबार समाप्त हो जाने पर उन्होंने लाट साहब को लिखा कि दरबार के नाम पर उनके साथ डी० एस० पी० ने ऐसा-ऐसा बर्ताव किया, वहाँ कुछ प्रजाजन थे, वे उन्हें पहचानते नहीं—किनके थे, कौन थे। उनके आदमी घुसने नहीं दिये गये। जो बातें डी० एस० पी० ने कही, उनका तात्पर्य वह नहीं समझे। वे ऐसी-ऐसी बातें थीं। पुलिस में नौकर होनवाले ये साधारण लोग रिश्वत लेकर देश को उजाड़े दे रहे हैं। इसका व्यक्तिगत सम्बन्ध ही है। पुलिस के दाँत यहाँ तक डूबे हुए हैं कि नियत आमदनी वाली प्रजा झूठे मामले में रिश्वत देकर राजस्व नहीं दे पाती। यह एक-दो की संख्या में नहीं, सैकड़ों की संख्या में, ज़मींदारों के २५ थानों में प्रतिमास होता है। नतीजा यह हुआ है कि जाल में फँसाई गई प्रजा रिश्वत से पैर छुड़ाकर फिर राजस्व नहीं दे पाती। यह प्रक्रिया उत्तरोत्तर बढ़ रही है। ज़मींदार को राजस्व न मिलने पर वह कर्ज लेकर सरकार को देगा या न दे पायेगा। इस परिणाम से भी उन्हें गुज़रना पड़ा है। सरकार से इसका प्रतिकार होना चाहिए।

जब इस मामले को लेकर राजा राजेन्द्रप्रताप कलकत्ता थे, डी०

एस० पी० की बुरी हालत कर दी गई। वह हिन्दू थे। हिन्दू-मुस्लिम-समस्या से दिलचस्पी रखते थे। इसी समय एक आदमी गया। मुसलमानों के गाँव, शमशेरपुर, में रहा। बातचीत की। मुसलमानों को उनका स्वार्थ समझाया। कहा, वह उनका अपना आदमी है। उन्हें गोकुशी नहीं करने दी जाती, यह उन पर ज्यादाती की जाती है। ज़िले के वकील नूर मुहम्मद साहब का नाम लेकर कहा, काम पढ़ने पर वह बग़ैर मेहनताना लिये हुए लड़ेंगे। फिर कलकत्ते के इमाम साहब का नाम लिया, कहा कि उनका हुकम है, मुसलमान अपने हक़ से बाज़ न आयें। एटर्नी अब्दुल हक़ का नाम लेकर कहा, वह हाईकोर्ट में मुफ़्त लड़ेंगे और हिन्दोस्तान भर में यह आग लगेगी। वे सिर्फ़ एक दरख्वास्त दे दें कि बकरीद को वे गोकुशी करेंगे, उन्हें इजाज़त मिले। सरकार को इजाज़त देनी पड़ेगी। अगर हिन्दू होने की वजह से डी० एस० पी० मदद न करे तो उसको इसका मजा चखा दो। थोड़ी-सी मदद हम भी दूसरे मौज़े के भाइयों को भेजकर करेंगे। रात के वक्त बदला चुकाना। पीछे कदम न पड़े।

फिर वह सज्जन क़स्बे में आये। वहाँ दाढ़ी-मूँछें मुड़ाई। फिर डी० एस० पी० साहब से मिले। कहा, अधिकारियों के कर्मचारी हैं। पास के अधिकारी अच्छे जमींदार हैं। खास बात के बहाने एकान्त निकालकर कहा, “अधिकारी हुज़ूर की सेवा करते आ रहे हैं। अबके शमशेरपुर में बड़ा जोश है। बकरीद को गोकुशी होनेवाली है। मुसलमान चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं, गोकुशी करेंगे और हुज़ूर के सामने करेंगे। हिन्दुओं के धार्मिक प्राणों को दुःख होता है। माँ,

मसल बाबू की बहू, उन्हीं के पास नकद ज्यादा है, बहुत दुखी है। जवसे सुना है, पानी एक घूंट नहीं पिया।” कहकर आँखों में आँसू लाने लगे। मुझे घर बुलाकर कहा, “रामचरण, तुम हुजूर के कच-हरी में जाओ; हमलोगों का कौन-सा अपराध है कि ऐसा होने वाला है? ऐसा तो कभी नहीं हुआ। हुजूर हिन्दू हैं। हुजूर के रहने...।”

“सुनो, तुम्हारा क्या नाम है?” साहब दुचित्ते थे, सजग होकर पूछा।

“रामचरण, हुजूर”

“रामचरण कौन?”

“रामचरण अधिकारी, हुजूर? हमसब एक ही है?”

“तुम हमारे आदमी हो?”

“हुजूर, मैं हुजूर के गुलाम का गुलाम।”

“तुम्हारी मालिका को बहुत डर है?”

“हुजूर, अन्न-पानी छोड़ रक्खा है।”

“तो अबके शमशेरपुर के मुसलमान गोकुशी नहीं कर पायेंगे। पर...”

डो० एस० पी० गरीब घर के हैं। पढ़ने में प्रतिभाशाली थे। आर्थिक कष्टों से छुटपन से लड़ रहे हैं। कानके पास मुँह ले जाकर कहा, “हम देखेंगे, तुम्हारी मालकिन कितना खर्च कर सकती हैं।”

“हुजूर, बहुत।”

डी० एस० पी० ने सोचा, साँप भी मर जायगा, लाठी भी न टूटेगी। अभी उनको गोकुशी की कोई सूचना न मिली थी। कहा, “अच्छा, परसों मिलना।”

रामचरण ने कहा, “हुजूर, उसी गाँव में मिलूँगा। देखें मुसलमान, हिन्दुओं में दम है या नहीं। है! मालकिन का अन्न-जल छूटा हुआ है। पहले हुजूर के इक़बाल से खिलाऊँ-पिलाऊँ।”

“तो कितना?”

“हुजूर कुछ अन्दाज़ा?”

“पाँच—”

रामचरण ने झुककर सलाम किया। “वहीं केम्प में हुजूर के सामने—” कहकर चला।

“पाँच ह—समझे?”

“हुजूर, खिलाना-पिलाना है पक्का रहा।” कहकर रामचरण सलाम करके भगा।

दो-तीन दिन में डी० एस० पी० समझे, रामचरण की बात सही थी। बकरीद के दिन आ गये। गोकुशी रोकी। जोश बढ़ा। रामचरण से मिलने की आशा से थानेदार और सिपाहियों को घटनास्थल पर बड़ा दिया। इधर दुर्घटना हो गई। उनकी एक ज्ञानेन्द्रिय विकृत कर दी गई।

यह सब राजा के कर्मचारी और सिपाहियों का काम था, पर कुछ पता न चला। पुलिस बहुत लज्जित हुई। बात ज़िले भर में फैली। डी० एस० पी० की नौकरी गई।

पहले दिन। मुन्ना ने सिपाही की आँख बचाकर जमादार को आने की सूचना दी और आड़ में जहाँ बातचीत की थी, रास्ता छोड़कर उसी तरफ चली। जमादार डचोढ़ी में कुर्सी पर बैठे थे। सिपाही खजाने के पास पहरे पर खड़ा था। सुबह का वक्त। सूरज की मीठी किरणें शबनम के फ़र्श पर जोत का समन्दर लहरा रही थीं। नीचे से पत्तियों की हरियाली अपना रंग उभारती हुई। रंगीन फूल झूमते हुए, मुन्ना सूरज की तरफ रुख किये हुए खड़ी रही। जमादार गये, हाथ जोड़कर कहा, रानी जी जय हो।

मुस्कुराती हुई मुन्ना चल दी। पहले पहरेदार को पार किया, दूसरे को किया, तीसरे को देखकर रुकी। दूसरी मंजिल पर, वहाँ एकान्त था। पहरेदार भी खासा पट्टा, पठान। नाम भी रुस्तम। यह पहरा बुआ के वास के पास लगता था। कुछ आगे पिछवाड़े वाला जीना हमेशा थोड़ा प्रकाश। अन्दर महल की कितनी ही दालानें, दूसरे-दूसरे महलों से, उस जीने की तरफ गई थीं। मुन्ना रुस्तम के सामने खड़ी हो गई। रुस्तम कुछ देर तक खड़ा हुआ देखता रहा। फिर पूछा, “क्या है?”

“तुम्हारा नाम क्या है?” मुन्ना ने पूछा।

“रुस्तम।”

“मैं रानी जी के पास से आती हूँ, तुम्हें मालूम है?”

“हाँ।”

“तुम तरक्की चाहते हो?”

“इसी के लिए नौकरी करता हूँ।”

“भेरी बात मानो, रानी जी का काम करो। कौनसी तरक्की चाहते हो?”

“जमादारी।”

“बाद को मालूम होगा। यह बात किसी से कहना मत। कहो, नहीं कहूँगा।”

“नहीं कहूँगा।”

“यह जमादार कैसा आदमी है?”

“अच्छा।”

“अच्छा आदमी है, तो क्या जमादारी करोगे? कहो, बुरा है।”

“हमारा अफसर।”

“तुमको जगह अफसर की कहाँ से मिलेगी? इसी आदमी की जगह तुमको दी जायगी। समझकर कहो, चाहिए या नहीं?”

“चाहिए।” आवाज़ गिर गई।

मुन्ना एक कदम बढ़ी। कहा, “कहो, रानी जी से कुल बातें कही जायँ।”

खुश होकर रुस्तम ने कहा—“रानी जी से कुल बातें कही जायँ।”

“अच्छा, तलवार निकालकर कसम खाओ, कहो, हम रानी जी का साथ देंगे।”

रुस्तम तन गया। तलवार निकालकर कसम खाई।

मुन्ना ने कहा—“तलवार हमें दे दो।”

इधर-उधर देखकर हस्तम ने तलवार दे दी।

मुन्ना ने तलवार लेकर सलामी दी। कहा, “यह जमादार के साथ रानी और राजा की सलामी है। अब तुम जमादार से छुट गये। कहो, हाँ।”

“हाँ।”

“यह लो अपनी तलवार।” हस्तम को तलवार दे दी। कहा, “जैसी जमादार को सलामी मैंने दी वैसी मुझे रानी कहकर तुम दो।”

हस्तम ने वैसा ही किया। मुन्ना ने कहा, “तुम पास हो गये। याद रहे अब कल काम की बात बतलाऊँगी और परसों काला चोर पकड़ाऊँगी। मुझे रानी समझना। जब जिसको रानी समझने के लिए कहूँ, समझोगे। बाद को देखोगे, तुम्हारी मुराद पूरी हो गई। मतलब गठ गया।”

हस्तम खुश हो गया। मुन्ना बंआ के कमरे में गई।

बुआ बैठी थीं, मुन्ना सामने खड़ी हुई। कहा, “खड़ी हो जाओ।” बुआ बैठी रहीं।

मुन्ना ने कहा—“खड़ी हो जा।”

बुआ के आँसू आ गये, खड़ी हो गई। मुन्ना ने कहा, “इधर आओ।”

बुआ चलीं, मुन्ना बरामदे की तरफ बढ़ीं। पहुँचकर कहा, मैं जो पहले थी, अब वह नहीं। अब तुम्हारे लिए पहले मैं रानी हूँ।

फिर तुम्हारा काम करने वाली। पर काम में मैं दरअसल रानी जी का करती हूँ। बात तुम्हारी समझ में आई?”

बुआ सहमीं। आंखें फाड़कर मुन्ना को देखने लगीं।

मुन्ना ने कहा—“हाथ जोड़कर हमको नमस्कार करो।”

बुआ की तयोरियाँ चढ़ीं। मुन्ना ने कहा, “नमस्कार करो, नहीं तो सिपाही बुलाऊँगी।”

बुआ ने कहा—हमारे भतीजे को बुला दो। हम घर चले जायेंगे।”

मुन्ना ने मुस्कराकर कहा—तुम्हारा भतीजा राजा का दामाद है, अपनी स्त्री से सुन चुका है। समझ गया है, राजा का क्या सम्मान है। गाँठ बाँधों, वह तुमसे नहीं मिल सकता। जाना चाहती हो तो तभी जा पाओगी जब रानी को सम्मान मिल जायगा। तुमने सिखाने पर भी बात नहीं मानी। दासी का तुमने अपमान कराया, तुमको नहीं मालूम। हाथ जोड़ो, हम रानी हैं।”

बुआ फिर भी खामोश रहीं। मुन्ना ने कहा, “यह काम हम तुमसे ले लेंगे। हाथ जोड़ो, नहीं तो सिपाही बुलाएँगे। वह जबरदस्ती जोड़ाएगा।”

बुआ ने हथेलियाँ जोड़ीं।

मुन्ना ने कहा—“सिर से लगाओ।”

बुआ ने सिर से लगाईं।

मुन्ना ने कहा—“दो दफ़े और।”

बुआ ने दो दफ़े और प्रणाम किया और वहीं गिर गईं।

मुन्ना दासी का काम करने लगा। पानी ले आई, मुँह में छींटे लगाये, फिर पंखा झलती रही। एक अरसे के बाद बुआ होश में आई। लाज और नरुरत से आँखें न मिला सकीं। मुन्ना ने कहा, “तुम्हारी मौसी को समझाया जा चुका है, वे बैठी हैं। तुम इतना समझो कि तुम्हारी निगाह में हम जितने छोटे हैं, रानी की निगाह में तुम और छोटी हो। जबतक राह पर नहीं आतीं रानी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगी। कहो, रानी जैसा-जैसा कहेंगी, करना मंजूर?”

बेदम होकर बुआ ने कहा—“मंजूर है।”

तुमको तीन रोज तक इसी तरह प्रणाम करना होगा। अगर इन्कार किया तो सख्ती होगी।”

लाचार होकर बुआ ने स्वीकार किया।

मुन्ना ने कहा—“दूसरे दिन तुमको सखी की तरह बागीचा दिखाने ले जायेंगे। तुमने देखा है, पर तुमको बागीचे के पेड़ों के नाम नहीं मालूम। बाद को एक साथ नहाएँगे। तीसरे दिन क्या होगा, यह तुमसे बागीचे में कहेंगे। जब हमारी-तुम्हारी पटरी बैठ जायगी, तभी तुम्हें मालूम होगा, असलीयत क्या है। तुम्हारी दासी अब चुन्नी है। वह आती होगी।

११

दिलावर रामफल के पास गया। अपने जीवन से उसको बड़ी

ग्लानि हुई। बचाव नहीं। नसों से जैसे देह, वह दुनिया के जाल से बँधा हुआ है और सिर्फ़ दस रुपये महीने के लिए। जान की बाज़ी लगाये फिर रहा है। कहीं से छुटकारा नहीं। जहाँ तक निगाह जाती है, यही जाल बिछा हुआ है। लुभाने वाली जितनी चीजें हैं, सभी खून से रंगी हुई।

जितने सिपाही हैं, सब के जोड़े मिलाए हुये। बाहर वाले नहीं पहचान सकते। एक तरह के तीन-चार भी। उन्हीं की तरह यह इमारत, ज़मींदारी, हीरे-मोती, जवाहरात, चमक-दमक, रूप-रंग—कुल बना-वटी। इनकी असली सूरत कुछ और है। यह स्वर्ग दिखता हुआ दृश्य नरक है। ये राजे-महाराजे राक्षस। ये देवी-देवता पत्थर के, काठ के, मिट्टी के।”

रामफल बैठा हुआ था। दिलावर ने कहा, “चलो बदलो।”

“कैसे? क्या बात है?” जितना ही विश्वास करके रामफल ने देखा, उतनी ही अविश्वास वाली ज़हरीली ज्योति आँखों से निकली।

“अब तुम हम, हम तुम। हमारी जैसी दाढ़ी रक्खो। चलो, एक देवता आये हैं, कोई साधु हैं, ले आना है, दामाद की तरह रखना है। खास राजा की बात है, दीवार भी न सुने। वह भी उस काल-कोठरी में कभी-कभी दर्शन देंगे। जल्द चलो।”

“क्या बात है?”

‘चल जल्द। बात तो दुनिया भर की जानता है।’

रामफल उठा। दोनों राजा की ओर से रक्खे मये सिपाहियों के नाई की ओर चले।

नाई फुरसत में था। कहा, “पालागो, रामफल महाराज, राम-राम दिलावर साहब।”

रामफल ने आशीर्वाद दिया। दिलावर ने राम-राम की।

रामफल ने कहा, “दाढ़ी बहुत बढ़ गई है, खुजला रही है, इसके बराबर कर दो, मूँछें भी। किनारे छांट दो।”

“वाह, महाराज,” नाई ने कहा, “हम समझे, आप शौक बुझाते हुए पितरों को भूल गये! लेकिन परमात्मा की कृपा है। बैठ जाइये। धन्य हूँ मैं।”

रामफल बैठे। नाई ने दिलावर की जैसी दाढ़ी-मूँछें बना दीं। फिर दिलावर से पूछा, “आपका, साहब, कौनसा फ़ैशन होगा? आज-कल तो कर्जन फ़ैशन की चाल है।”

“वह, काम पूरा होने पर, सराध में जैसे। इसने काम अधूरा छोड़ रक्खा है। इसकी जैसी थी, वैसी ही बना दो। अभी दाढ़ी के बाल कुछ छोटे हैं, खैर नोकदार बना दो। नाक के नीचे वाले बाल सफ़ाचट कर दो।”

नाई गम्भीर हो गया। दिलावर बैठे। रामफल तल्लीन होकर शीशा देखते रहे।

बाल बन जाने पर दोनों तालाब में स्नान करने गये। दिलावर ने लुंगी पहनी। दोनों चले। बाहर के फाटक पर प्रभाकर बैठा हुआ ऊब रहा था। दिलावर ने रामफल को दिखाया, कहा, आप हैं। रास्ते में उसने अच्छी तरह समझा दिया था।

उसकी बात प्रभाकर ने नहीं सुनी। दिलावर के रूप में रामफल

को देखकर उसको धुकचा लगा। पर उसको अपन काम से काम था! दिलावर ने कह दिया था कि उसी का नाम बतलायेगा।

रामफल ने प्रभाकर को बाहर बुलाया। कहा, “चलिए, आप लोगों को दूकान में अच्छी तरह भोजन करा दें। रात को ले चलेंगे। अभी रास्ता साफ नहीं है। वहाँ आप लोगों की जगह दुरुस्त की जायगी। बैठने-लेटने के पलंग-बिस्तर-मशहरी, मेज-कुर्सी आदि लाने-लगाने पड़ेंगे। तब तक चलिए, बाज़ार की सैर कीजिए।”

“तुम्हारा नाम क्या है?”

“हमारा नाम है दिलावर।”

बाज़ार में राजा की ही व्यवस्था थी। सामान वहीं रक्खा था। आदमी इधर-उधर टहलते थे। प्रभाकर को देखकर सब इकट्ठे हो गये।

एक दर्जी ने पूछा, “सिपाही जी, आप कौन हैं?”

दिलावर ने कहा, “उस्ताद हैं, जैसे आप खलीफ़ा।”

“गवैये हैं?” एक दूसरे ने पूछा।

“हाँ नचनिये भी हैं, आजकल तो तबले का बोलबाला है। वह आ गई है न? बिरादरों की आमदरपत हो चली है। रात को ठनकेगा।”

खलीफ़ा झेंपे। पर बड़ों का प्रभाव रखते थे, ख़ामोशी से रख लिया।

दिलावर प्रभाकर और उसके साथियों को लेकर एक दूकान में गया। इच्छानुसार भोजन कराया। जिस घर में सामान था; वहाँ विश्राम के लिए ले जाकर पूछा, “बाबू, आपका कौन-कौनसा सामान है, हमें दिखा दीजिये। हम वक्त पर उठवा ले जाएँगे।”

दूसरे कमरे में सामान बन्द था। ताली जिसके पास थी, वह

आदमी बाहर था। प्रभाकर जानता था। कहा, “सामान की कोई चिन्ता नहीं जब चलेंगे, सामान भी लिवाते चलेंगे।”

दिलावर-नामधारी को टोह न मिली कि कैसा आदमी है, कैसा सामान है।

१२

दूसरे दिन। जमादार जटाशंकर कुर्सी पर बैठे तम्बाकू मल रहे थे। रुस्तम पहरा बदलने के लिए आया। जमादार को उसने देखा, पर मुँह फेरकर चल दिया, सलामी नहीं दी।

जमादार ने पुकारा, “रुस्तम।”

रुस्तम का कलेजा धड़का। पर हिम्मत बाँधी और खड़ा हो गया।

“रुस्तम क्या गलती की?” जमादार ने गम्भीर होकर पूछा।

रुस्तम का पारा चढ़ गया। गुस्से से कहा, “हम इसका जवाब देंगे इसी कुर्सी पर बैठकर।” यह कहकर रुस्तम चला।

जमादार ने खजाने के सिपाही से कहा, “इसको पकड़ लो।”

तलवार निकालकर खजाने का सिपाही बढ़ा। रुस्तम को जैसे किसी ने बाँध लिया।

जमादार ने कहा, “तुम कितना बड़ा कसूर कर रहे हो, तुम्हारी समझ में आ रहा है? अभी मुआफ़ी है। फिर उधर नहीं, इधर से निकल जाना होगा और हमेशा के लिए।”

रुस्तम के जी में आ रहा था, भग कर मालखाने के पहरे पर चला जाय और दो रोज़ किसी तरह गुज़ार दे, लेकिन पैर नहीं उठ रहे थे।

जमादार ने कहा, “इधर आओ।”

रुस्तम ने देखा, क्रदम जमादार की ही तरफ़ उठ रहा है, दूसरी तरफ़ नहीं। वह चला।

जमादार अपनी कोठरी में गये। रुस्तम भी पीछे-पीछे।

“जमादार, मुसलमान हूँ, लेकिन पैर पकड़ता हूँ। मैं ऐसा आदमी नहीं था। मुझसे छल किया गया।”

“किसने किया?”

रुस्तम की ज़बान बन्द हो गई। होठों पर उँगली रखकर इशारे से समझाया कि बोल नहीं फूट रहा।

जमादार ने कहा, “अच्छा, लो राजा को और बोलो।”

रुस्तम पर जैसे कूड़ा पड़ा। एक चीख निकली।

जमादार ने कहा, “अच्छा, तुम खजाने के पहरे में रहो, खजाने का पहरा हम मालखाने भेज देंगे।”

“जमादार खाना-खराब न करो। हमारी तरक्की होने वाली है।”

“कैसी?”

“हमको जमादारी मिलेगी।”

“अरे बेवकूफ़, तेरी नौकरी जायगी।”

रुस्तम घबराया! जमादार ने कहा, “जब तुम्हारी तरक्की होगी, सिफ़ारिश हम करेंगे, तरक्की राजा देंगे।”

“रानीजी देने वाली हैं, उनका एक काम करना है।”

“रानी जी किसी राज-काज म दस्तन्दाजी कर सकती है? राज्य की मुहर पर उनका नाम भी है?”

रुस्तम को मालूम हुआ, वह नौकरी भी गई। कहा, “जमादार, गरीब आदमी हूँ, पेट से न मारिएगा।”

“कुल बातें बता दो। किसने तुमसे कहा?”

मुन्ना के स्मरणमात्र से रुस्तम के सर पर माया जाल छा गया। फिर न बोल सका, जैसे उसकी सत्ता ही शायब हो गई।

जमादार ने पूछा—“कुछ इशारा?”

“व.....रोज.....।”

“अच्छा, तुम अपने पहरे पर जाओ, तुमको कुछ नहीं होगा अगर तुम सिपाही रहोगे।”

थोड़ी देर बाद मुन्ना आई। जटाशंकर का जी मरोड़ खाकर रह गया। मुन्ना को उसी किनारे देखकर उठे, गये और हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

“जमादार, कभी मत भूलिए कि मुन्ना छिनी है, यहाँ रानी है। बातें जाती है। हम भी भला-बुरा करते-कराते हैं। राजा रहेंगे तो रानी भी रहेंगी, नहीं तो रंडी रहेगी। जो रानी का सम्मान रंडी को दिलाता है, वह राजा नहीं, भँड़वा है। तुम्हारी स्त्री रानी में है, रंडी में नहीं। वहाँ जाओगे, तो रंडी को राज् दोगे। राजा अब राजा नहीं क्योंकि उसकी रानी कहाँ है?”

जमादार को अक्षर-अक्षर सत्य जान पड़ा। पर घबराये कि राजा की तौहीन हुई। सोचा, रुस्तम इससे कह आया। कहा, “क्या वह चला गया?”

“वह कौन ?” मुन्ना ने डाँटकर पूछा।

जमादार सहम गये। उस पर उनका सम्मान न चढ़ा। मुन्ना समझ गई कि उसका आनर पकड़ा गया। चलने को हुई कि तो मालूम हुआ, जमादार से जुड़ गई है। कहा, “राजा से पूछ सकते हो कि रंडी को रानी का सम्मान क्यों दिया जाता है? हम कह चुके कि रानी का मान छिना है। वह मान रानी का आदमी छिनेगा तभी रानी रानी है। फिर दूसरा सँवारेगा। जब ऐसा होगा, रानी के तरफदार रानी को मान देते फिरेंगे। अब वह रानी का आदमी है, इसलिए राजा का भी है। तुम्हारा सम्मान रानी के आदमी ने नहीं किया, मैंने किया। तुम कल वचन दे चुके थे, आज पाल न सके। हमने कह दिया था, थोड़ा-सा अपमान सह जाओ; पर तुम नहीं मान सके। तुम मर्द नहीं, इतर हो। तुमने हमारा आदमी बिगाड़ दिया। हम तुमसे पूछते हैं, रानी का अपमान तुम करोगे? तुमने देखा है रानी को? बोलो, नहीं तो ठोंकती हूँ अभी लौट कर। तुमसे कहा कि तुम दर्ज हो गये। रानी की डायरी में तुम लिख गये कि रानी का अपमान किया। आज तुम राजा से कहोगे तो क्या होगा? हम कल लिखा चुके।”

जमादार का थूक सूख गया। कहा, “हमसे खता हुई।”

“यह बताओ, इस रंडी को देखा है या नहीं?”

“देखा है।”

“सलामी दी?”

“हाँ, दी।”

“वह किसकी सलामी है?”

“रानी जी की।”

“वह रानी है?”

“नहीं।”

“तुम इस राजा के बच्चे से पूछ सकते हो कि रानी की सलामी इसको क्यों दी जाती है?”

जमादार चुप रहे।

“यही तलवार राजा को मारने के काम में खोल सकते हो?”

“नहीं।”

“लेकिन कोई अगर उस पर चढ़ जाय और राजा कहे—?”

“रानी पर?”

“जिसके पास हम रहते हैं, यहाँ नहीं, वहाँ।”

जमादार का सर झुक गया।

“इसी को मान कहते हैं। यह मान मर्द ने छीन लिया है। यह सिपाही जो मान देता है, वही मान उस सिपाही को दो और अपनी डचोड़ी पर; नहीं तो समझ जाओ कुल बातों के साथ पहले ही पेश किये जाओगे।”

जमादार का सर न उठा। मुन्ना ने फिर कहा, “बोलो, क्या मंजूर है?”

“डचोड़ी पर एक दूसरा सिपाही भी रहता है, वह देखेगा।”

“हर सिपाही से तुम्हारी तौहीन कराई जायगी, जूते लगाये जायँगे और निकालकर बाहर कर दिये जाओगे।”

जमादार के आँसू आ गये। कहा, “मंजूर है।”

मुन्ना चली, पीछे-पीछे जमादार। समझ गये कि खिड़की के रास्ते निकलकर रुस्तम इससे कह आया। भेद खुल जाने पर क्या होगा सोचकर घबराए। चारा न था। चारों तरफ़ से गसे हुए थे। ड्योढ़ी पर मुन्ना खड़ी हो गई। कहा, खड़े रहो।

सिपाही अपने जमादार की बेइज्जती देखकर हुकम पाने के लिए देखता रह गया। मुन्ना ने सिपाही से पूछा, “यह कौन है?”

सिपाही जैसे बीच से टूट गया। तलवार की मूठ के लिए हाथ बढ़ाया, पर हाथ बँध गया।

मुन्ना ने डाँटकर पूछा, “यह कौन है?”

सिपाही ने कहना चाहा, “जमादार”, पर जीभ ऐंठ गई। मुन्ना ने कहा, “रानी जी की सलामी लाओ।”

जमादार ने हाथ का इशारा किया। सिपाही ने तलवार निकालकर रानी जी की सलामी दी। सिपाही को मालूम हुआ, एक नया जोश उसमें भर गया।

मुन्ना ने कहा, “यह बदमाश है। इसने रानी जी की तौहीन की।”

सिपाही क्रोध से जमादार को देखने लगा।

मुन्ना ने कहा, “सिपाही कुछ मत बोलो, रानी जी मुआफ़ करना भी जानती हैं। अभी देखो और समझो।”

मुन्ना मालखाने में रुस्तम के पास गई। कहा, “तुम्हारी तौहीन हुई इसलिए आज ही तुम जमादार बनाये जाओगे। अपनी वर्दी उतारो।” सिपाही ने उतार दी। मुन्ना ने वर्दी पहनी। कहा, “चलो।”

सिपाही डरा। पर हिम्मत बाँधकर चला। दोनों नीचे खजाने के पहरे पर आये। मुन्ना को देखकर सिपाही और जमादार दोनों घबराये जैसे राज्य उलट गया हो। मुन्ना ने तलवार को सलामी दी, कहा, “यह रानी जी की सलामी,” फिर जमादार की सलामी दी, कहा, “यह जमादार की सलामी।”

फिर खजाने के सिपाही से कहा, “अब इसको देखो।” रस्तम की तरफ उँगली उठाई। रस्तम काला पड़ गया था, झुका हुआ टूटा जा रहा था जैसे कोई बोझ सँभाला न सँभलता हो।

मुन्ना ने कहा, “यही पाप है रानी जी पर चढ़ाया हुआ। इसी को मारना है।”

फिर कहा। “सिपाही अब यह है, वहीं वहाँ मिलेगी।”

रस्तम पूरी शक्ति से लिपटकर खड़ा हो गया।

खजाने के सिपाही से मुन्ना ने कहा, “जबतक यह पाप नहीं मारा जाता, यह बात किसी से न कहना। कहने पर अच्छा न होगा।”

रस्तम को तलवार देकर मुन्ना ने कहा, “यह शक्ति लो और पहरे पर चलो, हम आते हैं। अभी रानी जी का काम बाकी है। रानी जी की निगाह में अब तुम्हीं जमादार हो।”

रस्तम ने तलवार ले ली और चला गया। मुन्ना ने जमादार को देखकर कहा, “सिपाही, इधर आओ।”

जमादार ने कहा, “हृद हो गई।” खजाने के सिपाही की त्योरियाँ चढ़ीं। पर कुछ कहते न बना। मुन्ना ने कहा, “वह सिपाही

ही था। उसकी भी तौहीन हुई। तुम भी कुछ कर चुके होगे। रानी जी कुछ नहीं, क्यों?"

"इधर आओ" कहकर मुन्ना आगे बढ़ी। जमादार पीछे-पीछे चले। दूसरी मंज़िल के सदरवाले ज़ीने के पास मुन्ना ने जमादार से कहा, "घन्टे भर बाद बगीचे में आओ। छिपे रहना। वह औरत इस मुसलमान के बच्चे से फँसी है। देख लो। साथ गवाह भी लेते आना इसी सियाही को। खज़ाने का सदर फाटक बन्द कर देना, यहाँ कौन है? लेकिन कुछ कहना मत। तुम नहाने वाली सीढ़ी की दीवार की बगल में छिपे रहना और अपने आदमी को उसी तरफ़ के आम के पेड़ पर चढ़ा देना। तुम पहले आना। उस आदमी को आधे घन्टे बाद उतरने को कहना।

मालखाने में आकर रुस्तम से कहा, "यहाँ तो कोई आता-जाता नहीं। यह जमादार इस औरत से फँसा है। यह नहाने जायगी। नहाते वक़्त मुझे भेज देगी। तभी दोनों अपना काम करेंगे। मैं तुझे भेजूँगी। लेकिन गवाह ले जाना तम्बू वाले पहरेदार को। खिड़की के पास उसको छिपा देना। वह कुछ कहे नहीं। फ़ैसला रानी जी करेंगी। वह गवाही देगा। जमादार लौटेगा तो वह देखेगा ही। खिड़की से आवाज़ दे देना, देख लिया।

"बिना देखे?"

"अरे गधा बाद को तो देखेगा। निकलेगा कहाँ से? और राह नहीं। तम्बू वाले को समझा देना।"

मुन्ना ने आधे घण्टे तक विश्राम किया। फिर प्रणाम लेकर बुआ को पीछे लगाकर बागीचे चली। बुआ का दो ही रोज़ की क़वायद में इतना बुरा हाल हुआ कि सर पर जैसे मनो का बोझ लद गया हो; जैसे गन्दे पनाले से नहलाई गई हों। रिश्ते का गौरव कहीं गायब हो गया। मौसी का पहले ही अपमान हो चुका था, आज्ञा मिल चुकी थी कि ज़बान खोलने पर मठा डालकर सर घुटाकर गधे पर चढ़ाकर निकाल दी जायगी और साथ-साथ जीवन-चरित जनता को सुनाया जाता रहेगा; वह कैसी थीं; यह मालूम हो चुका है। अगर खामोश रहीं तो समझ में आ जायगा कि अपमान उनका नहीं, उनके दुश्मन का हुआ है।

बुआ मुन्ना के साथ कोठी से उतरकर बागीचे गई। धूप प्रखर हो गई है, फिर भी सुहानी है। तरह-तरह की चिड़ियाँ चहक रही हैं। रंगबिरंगी सुरीली आवाज़ वाली; भँवरे, सुए, रुकमिनें, बुलबुल, पीली गलारें, कोयलें, पपीहे, कौए। स्वच्छ जल वाले विशाल सरोवर पर राजहंस तैरते हुए। कहीं-कहीं बगले ताक लगाये बैठे हुए। गिलहरियाँ टहनी से टहनी पर उछलती हुई। धीमी-धीमी हवा चल रही है जैसे साक्षात् कविता बह रही हो। सरोवर पर हल्की-हल्की लहरियाँ उठती हुई उस किनारे से इस किनारे आ रही हैं।

चारों ओर विशाल उद्यान १३-१४ हाथ की ऊँची चारदीवार

से घिरा हुआ। सरोवर और चारदीवार के किनारे नारियल के पेड़। बीच में, अलग-अलग, निम्बू, नारंगी, सन्तरे, सुपारी, अनानास लीची, आम, जामुन, गुलाब जामुन, कटहल, बड़हर, बादाम, हड़-बहेड़, आँवले, अनार, शरीफे, शहतूत, फ़ालसे, अमरूद आदि फलों के पेड़ एक-एक घेरे में लगे हुए। कितने फूले हुए, कितने पकते हुए, कितनों में बौर, कितने खाली। एक तरफ़ फूलों का बागीचा उजड़ा हुआ क्योंकि अब रनवास यहाँ नहीं। कहीं जंगली पेड़ों के झाड़। बीच-बीच बेला, जुही, गुलाब, गन्धराज, नेवाड़ी, चमेली, कुन्द आदि उगे हुए जीने का व्यर्थ प्रयत्न करते हुए आज भी फूलों के अर्घ्य दे रहे हैं। पक्की सुथरी राहों पर वर्षा की काई जमी हुई है। कटीले झाड़ उग रहे हैं। एक तरफ़ चारदीवार में दरवाज़ा है। इस तरफ़ से भी ताला लगा है, उस तरफ़ से भी। इस तरफ़ की ताली जमादार के पास है, उस तरफ़ की माली के पास। H83/T83C

जिस तरफ़ जमादार को छिपने के लिए कहा था, उस तरफ़ मुन्ना नहीं गई। कहा, “आज चलो, इधर का बागीचा देख लो। एक रोज़ में पूरा देखा न देख जायगा।” P.G.H 2832

हवा के मन्द-मन्द झोंके लग रहे हैं। दुःख के बाद सुख का अनुभव हुआ। मुन्ना ने पूछा, “कैसी हवा है?”

“बहुत अच्छी।”

दिल इसी तरह खुला रक्खा करो। कोई दिलदार मिल जाय इस वक्त तो?”

“धत् ऐसा नहीं कहा जाता?”

“अच्छा, सखी, हम से गलती हुई। पर हमारा-तुम्हारा तो हँसी मज़ाक़ का ही रिश्ता है?”

“हाँ, है।”

बुआ की आवाज़ क्षीण होकर निकली।

“अगर हमारा अपमान हो तो क्या वह तुम्हारा भी है?”

बुआ भीतर से जल गई। उस जलन को दबाकर कहा, “हाँ। है।”

“हमारा इतना अपमान होता है कि हम किसी को सर पर नहीं रख सकते। बाद को सखी बनाकर, हँसाकर, रिझाकर समझा देते हैं कि हम सखी हैं और ऐसी।”

“हमारे भाग,” बुआ ने नम्रता से कहा।

“देखो, यह नारियल का पेड़ है। सरोवर के चारों ओर पहले इसी की क्रतार है। फिर उस किनारे से है। दोनों क्रतारों में नारियल की बीसियों क्रिस्में हैं। कच्चे नारियल को डाब कहते हैं। इसका पानी तुमने पिया है।”

“हमारे यहाँ यह पेड़ नहीं होता।”

मुन्ना आगे बढ़ी। कहा, “यह देखो, ये अनानास के झाड़ हैं।”

“अनानास क्या है?”

“यह लीचो है।”

“हाँ, हमारे यहाँ आती है।”

मुन्ना जल्दी कर रही थी। कहा, “यह शरीरू है।”

“यह भी हमारे यहाँ नहीं होता।”

“ये सुपारी के पेड़ हैं। वह देखो, सुपारी फली है।”

बुआ खुश हो गई। मुन्ना बढ़ती गई।

“यह बादाम का पेड़ है।”

“वही जो ठंडाई में पड़ता है?”

मुन्ना ठंडाई नहीं जानती थी। बढ़ती गई। कहा, “यह गुलाब-जामुन है।”

“कौन? जो बाज़ार में बिकता है?”

“तो क्या आसमान पर बिकता है?”

“वह तो मिठाई है।”

मुन्ना रुकी। गुलाब-जामुन कोई मिठाई है, यह उसको नहीं मालूम था। गुस्से में आकर कहा, “हम जैसा-जैसा सिखाते हैं, वैसा सीखो। सही है कि गुलाब-जामुन कोई मिठाई हो, पर यह फल है। कुल पेड़ तुम्हें दिखाएँगे, नाम बताएँगे, याद करके सीख लो। तुम्हें जो मिठाइयाँ जल-पान के लिए दी जाती हैं, उनमें कभी गुलाब-जामुन आई?”

“हाँ, रोज़ आती है।”

“तुम्हें कुल क्रिस्मों के नाम मालूम हैं?”

“नहीं।”

“गुलाब-जामुन कौन सी है?”

“काली-काली।”

“उसको यहाँ पान्तोआ कहते हैं।”

“वह हमारे वहाँ की—ऐसी नहीं।”

“यहाँ छेने की मिठाई बनती है। तुम्हारे उधर मैं जा चुकी हूँ।

वहाँ की मिठाई इन लोगों को कम पसन्द है। यहाँ घर का दूध, घर का छाना है, और होशियार हलवाई नौकर है, यहीं बनाता है, यहीं का घो। तुम कभी त्योरी न चढ़ाया करो। यह इतना बड़ा बागीचा है। इसमें सैकड़ों किस्मों के फल हैं। तुम्हें आम, जामुन, अमरूद, जैसे थोड़े ही फलों की पहचान है। यह रानी जी की सास और पहले की रानियों का बागीचा है। इनका बागीचा और बड़ा है, पेड़ जैसे हीरे और नीलम-जड़े पत्थरों पर खड़े हों, उनके थालों की नई कारीगरी है। फलों की भी सैकड़ों किस्में हैं। तुम जहाँ गई थीं, वह रानी जी का शयनागार नहीं। वहाँ बेशक्रीमत हज़ारों जिन्से हैं। तुम्हें दस साल में भी कुल नाम न याद होंगे। जो बड़ी अनुचरी हैं, वह जानती हैं। १५ साल से कम की नौकरी वाली दासी का यह पद नहीं होता। वह जमादार की तरह दासियों से काम लेती है। तुम्हें नहीं मालूम कि बड़प्पन यहाँ नामों की जानकारी से है। रानी जी हज़ारों चीजों के नाम जानती हैं। कभी इनके मुँह न लगना। अब नहा लो। धोती घाट से सौ गज के फ़ासले पर उतारकर डाल दो और आधे घन्टे तक नहाओ। फिर निकलकर बिना किसी की परवा किये ऊपर चली आओ। तुम्हें तुम्हारा प्यार मिलेगा। तुम्हें इसकी ख्वाहिश है। शरमाओ नहीं। डटी खड़ी रहना। साड़ी बिना लिये चली आना। हमें दूसरा काम है। खबरदार हुक्म की तामील सीखो। बाद को समझ में आएगा कि रानी जी कितनी अपनी हैं। उनका भी हाल मालूम होगा। सर चढ़ाचढ़ी तब न होगी जब दोनों एक। उधर जाओ।”

मुन्ना बिजली की तरह मालखाने में गई और रस्तम से कहा।

रुस्तम तम्बू के पहरेवाले के साथ तैयार हो गया। और जीने से जल्द-जल्द उतरकर अपनी जगह पर, खिड़की के दरवाजे पर गया। उसका साथी एक अँधेरी कोठरी में छिप रहा। रुस्तम अवसर ताक रहा था। खजाने का सिपाही राजाराम आम के पेड़ पर घने पत्तों वाली डाल के बीच में बैठा देख रहा था।

रुस्तम के जाने के साथ मौसी को बुआ के शयनागार में भेजकर और जबतक बुआ न आएँ वहीं रहने के लिए कहकर मुन्ना खजाने की तरफ़ बढ़ी। पैर की चाप सँभालकर दौड़ी। जीने से उतरकर देखा, फाटक बन्द है। कमर से एक ताली निकाली, जिसे सँदूक की ताली बताया गया था उसको देखा। गुच्छे की तालियों से उसका बाहर वाला ताला खोला, फिर अपनी ताली से भीतर वाला। खोलकर देखा, नोटों के बन्डल थे। कुल के कुल बाहर निकालकर डाल लिये। नोट नम्बरी भी थे और दस-पाँच रुपये वाले भी। जल्द-जल्द सँदूक बन्द कर दिया। तालियों का गुच्छा खूँटी से लटका दिया और अपनी ताली कमर की मुरी में लपेट ली। नोटों के बन्डल जीने के तले वाली अँधेरी कोठरी में डाल दिये। भगी हुई ऊपर गई। बुआ के बरामदे से देखा, वह नहाकर निकल रही थीं। जैसा कहा था, वैसी ही थीं।

रुस्तम तके हुए था। इसी समय निकलकर कुछ क्रदम बढ़ा और चिल्लाकर कहा, "चोर पकड़ लिया।"

बुआ की लाज दूर हो गई। वह तनकर खड़ी हो गई।

रुस्तम आवाज़ लगाकर भगा हुआ कोठरी में घुस गया। मुन्ना दूसरी मंज़िल की खिड़की के पास खड़ी होकर चली आने के लिए हथेली का इशारा करने लगी। बुआ चलीं।

राजाराम पेड़ से देख रहा था। मुलुककर जमादार ने भी देखा था। बुआ के जाने के कुछ अरसे के बाद जमादार और राजाराम चले। इनसे पहले मुन्ना ने नीचे उतरकर रुस्तम को आवाज़ लगाई, अगर वहाँ हो। उसके आने पर कहा, खजाने में चलकर बैठो और जमादार के आने पर कहो,—“हमारी जमादारी का हुकूम है, तुम बदमाश हो। हमारी जगह पर जाओ।”

१४

जमादार जटाशंकर और राजाराम जब खजाने को लौट रहे थे, तब आँगन से देखा कि फाटक खुला हुआ है और कुर्सी पर रुस्तम बैठा हुआ है। जमादार को बुरा लगा। राजाराम की भी भवें चढ़ गई। रुस्तम जानकारी की निगाह से देखता हुआ मुस्कराता रहा; जमादार पास आये तो डाँटकर कहा, “तुम बदमाश हो, रानी जी ने तुम्हें बरखास्त किया है। अब हम जमादार हैं। हमको उसी तरह सलाम करो और हमारे पहरे पर रहोगे। इसी वक्त चले जाओ, आँख से ओझल हो जाओ।” रुस्तम कुर्सी पर बैठा हुआ आराम से टाँगें हिलाने लगा। मुसलमान की पूरी शान में आकर कहा “अब तुमको मालूम होगा कि सिपाही पर क्या आफत गुज़रती है जब वह अफ़सर और जमादार को सलाम करता है।”

जमादार के मुँह में जैसे ताला पड़ गया। वह हक्के-बक्के हो गये।

“उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।” राजाराम ने डपटकर कहा।
“उठ, नहीं तो ठोंकता हूँ अभी।”

“तू, नीम-बदमाश है, इसका साथी है, वहाँ तू क्यों गया?”

“तुझको पकड़ने। मैं गवाह हूँ।”

“तू गवाह है, बदमाश, नगी नहा रही थी, तब तू देख रहा था या नहीं? और बहुत कुछ किया है, तुम दोनों ने।”

“हमको सब मालूम है।” नेपथ्य से मुन्ना ने कहा।

“तो फिर अब तुम्ही फैसला कर दो।” जमादार ने काँपते हुए कहा। मुन्ना चुप हो गई! रुस्तम ने कुर्सी नहीं छोड़ी।

“बदमाश कही का। फैसला कर दो!”

राजाराम कुर्सी के पास आ गया। “उठता है या नहीं?”

तुराब तम्बू का पहरेदार था। दोषांजिले की खिड़की से नीचे को देखते हुए कहा, “खबरदार, राजाराम, मैं भी गवाह हूँ। तुम दोनों बदमाश हो। जमादार रुस्तम पकड़ने वाले हैं। मैं उनके साथ था।”

“तुम यहाँ से क्यों गये?” राजाराम ने पूछा।

“तुम यहाँ से क्यों गये?” तुराब ने डाँटा।

“हम बदमाश पकड़ने गये।”

“बदमाश पकड़ने नहीं गये, बदमाशी करने गये। उस वगोचे के अन्दर मर्द के जाने का हुक्म नहीं, यह सब को मालूम है। तुम गये। जमादार रुस्तम भीतर नहीं गये।”

इती समय मुन्ना आ गई। कहा, “रानी जी का फैसला सब को मंज़ूर होगा।”

सब ने समस्वर से कहा, “हाँ, होगा।”

मुन्ना ने कहा, “राजाराम आपस में लड़ो नहीं, अपना काम करो।” फिर जमादार से कहा, “जटाशंकर, इधर आओ।”

जटाशंकर को उसी जगह ले गई जहाँ पहली बातचीत हुई थी। रस्तम मुस्कराता हुआ बैठा रहा। तुराब ने कहा, “भाई, आपकी किस्मत खुल गई। हमारा ही पहला सलाम है।” रस्तम ने टाँगें हिलाते हुए कहा, “हमको याद रहेगा।” राजाराम ने जमादार को डिसमिस हुआ जानकर पहरे की वर्दी पहनते और तलवार बाँधते हुए कहा, “लेकिन जमादार का कोई क्रसूर नहीं।”

“जमादार तो हम है” रस्तम ने स्वर चढ़ाकर कहा, “हमारा कौन सा क्रसूर है?”

अड़गड़े में पहुँचकर मुन्ना ने कहा, “जटाशंकर, क्या तुम अब भी हमको चाहते हो?”

जटाशंकर राँड़ की तरह रोने लगे।

“एक बात” मुन्ना ने कहा, “तुम मुझे चाहते हो या जमादारी?”

“अरी, बड़ी बेइज्जती हुई; हमारी जमादारी रहने दे।”

“अब तुम समझे, हम समझ जाते हैं, कौन कैसा है। तुम हमारी तरह उतर नहीं सकते, यह तुम्हारा खयाल था; मगर तुम इतना उतर जाओगे कि यहाँ जमना दुश्वार होगा। जब किसी को पकड़ो तब उसी को पकड़ें रहो, यह क्रायदा है। तुम समझे थे, मैं तुम्हारी रखेली की तरह रहूँगी; अपनी स्त्री बनाकर तुम मुझको खुश किये रहोगे। मैं जैसी औरत हूँ, मैं तुम्हें रखवाले की ही तरह रख सकती हूँ;

मगर राजा ही बनाये रहती। यह न समझना कि मैं गरीब हूँ। मैंने कहा, मैं रानी हूँ। तुम्हारा यह खयाल कि एक औरत को रखेली बनाकर रहने वाला वैसा ही ब्राह्मण है जैसे तुम, बिलकुल गलत है। हमारे दिल में ब्राह्मण का सम्मान है, पर चैतन्यदेव जैसे ब्राह्मण का, जो बाद को वैष्णव हो गये, और सब को अपनी तरह का आदर दिया। मैं वैष्णव हूँ। तुम पर मुझे प्यार नहीं होता, दया आती है। तुम इतने बड़े मुख हो कि अपनी तरफ़ से कुछ समझ नहीं सकते। खज़ाने का जो जमादार होगा, कुछ दिनों में उसकी जान की आफ़त आयेगी।”

जमादार काँपे। आँखों से तरह-तरह की शंकाएँ भय, उद्वेग, पाप, अत्याचार, क्षुद्रता, हृदयहीनता आदि निकल पड़ी। राज़ लेने के लिए मित्र बनने की कोशिश करते हुए कहा, “क्यों?”

“तुम हमारे आदमी हो?”

जमादार की जान चोटी पर आ गई। कहा—“अब जो कुछ भी हो, हम हुज़र के आदमी हैं।”

“अब तुम समझे। अच्छा बताओ, अगर खज़ाने का रुपया चरा गया हो?”

जटाशंकर को जान पड़ा, वज्र टूटा; धड़ाम से गिर पड़े। “अब सही-सही मरा।—मुझको भगा दो। दया करो, दया करो, देवी, कहीं का नहीं रहा।”

“यही रुपया तुमको देना चाहती हूँ, लेकिन तुमको हमारी जाति और हमारी दासता लेनी पड़ेगी।”

“हमको रुपया नहीं चाहिए।” तनकर जटाशंकर ने कहा।

“यही तुम्हारा बड़प्पन है। हम इसी को प्यार करते हैं। मेरे प्यारे, मझे चूम लो।” मुन्ना ने जीभ लपलपाई।

जटाशंकर को जान पड़ा, काल है। खजाने की चोरी की बात सोचते हुए तनकर सिपाहिया ने स्वर से कहा—“शलत बात है; खजाने की चोरी नहीं हो सकती।”

“क्यों?”

“अब तू ही बता,” कहकर फिर उन्होंने एक कड़ी निगाह गाड़ी।

“यह जो जमादार बना है, इसी ने चरवाया है, यह रानी का प्यारा है।”

“झूठ बात, हम रपोट करेंगे।”

“क्यों रपोट करोगे?”

“यही, तू जो कुछ कहती है।”

“तुमको और तुम्हारे पहरेदार को ये दूसरे पहरेदार पकड़े हुए हैं कि तुमलोग बदमाश हो। मैं इनकी गवाही गुज़ार दूँगी। तुम ठोंके जाओगे, नौकरी से भी हाथ धोओगे।”

“हम कहेंगे, खजाना चुराने का इसने जाल किया है। हमसे पहले ऐसा-ऐसा कह चुकी है।”

“खजाना चुरा गया है, तुम्हें इसका क्या पता? अगर न चुरा गया हो—?”

जमादार ने करुण दृष्टि से देखा। मुन्ना ने कहा—“अच्छा लाख-दो लाख दे दिये जायँ तो तुम क्या करो?”

“हम ख़ज़ाने में रखा देंगे।”

“कैसे?”

जमादार फिर हक्के-बक्के हुए।

मुन्ना ने कहा—“जमादारी चाहते हो तो चलो, बैठो, लेकिन याद रखो, जिस दिन ख़ज़ानची आयेगा, उस दिन तुम्हारा कोई कर्म वाकी नहीं रहेगा। बात मानोगे तो बचे-बचाए चले जाओगे। चोरी और छिनाले का भेद तबतक नहीं खुल सकता जबतक रानी का मान वापस नहीं आ जाता।”

रुस्तम की वर्दी पहनकर रुस्तम की जगह पहरा दो और रुस्तम को जमादार मानो।” कहकर मुन्ना नये गढ़ की तरफ़ चली।

जमादार जटाशंकर ख़ज़ाने आये। वहाँ से मालखाने गये। रुस्तम की वर्दी पहनी। वाकी रहा थोड़ा समय पहरा देने लगे।

पहरा बदला। दूसरे सिपाही आये। बात फैली कि रुस्तम जमादार हो गया। रानी जी ने बनाया है। जमादार और राजाराम बदमाशी में पकड़े गये हैं।

जटाशंकर मुँह दिखाने लायक न रह गये। कुल सिपाही बराबरी का दावा करने लगे और उन्हीं के दिल से क्रसूरवार करार देने लगे।

राजाराम भी मुरझाया था। फुर्सत के वक़्त एकान्त में जमादार से बातचीत करता हुआ राज़ लेने लगा—“जमादार, बड़ा अपमान हुआ। अब तुम सिपाही हो, रुस्तम जमादार। हुक़म राजा का नहीं। धाजरा समझ में नहीं आता।”

जमादार ने पूछा—“तुमको क्या जान पड़ता है?”

“या तो तुम फँसे थे, इस औरत ने झूठमूँठ हमको भी फँसाया या बुआ की तौहीन की गई और करनेवाला मुसलमान, इसमें राजा की राय हरगिज़ नहीं मालूम देती। बुआ राजा की मान्य की मान्य हैं।”

“इसके बाद इस मुसलमान का हाल क्या होता है, देखना। राजा एक मुसलमान तवायफ़ लिये ही पड़े रहते हैं। इनके यहाँ बस इतना ही सम्बन्ध है। रानी का हाथ है, ऐसा हमारा विचार है। यह भी सम्भव है कि ख़ज़ाने की चोरी रानी ने कराई है। बोलो मत, इसमें बड़ा भारी भेद है। किसी को मालूम नहीं हो सका। रुस्तम का आगे चलकर बुरा हाल होगा। तुमको हम दूसरी जगह बदलने की कोशिश करेंगे।”

बात आग की तरह फैली।

१५

बाप से यूसुफ़ को एजाज़ का राज़ मिल चुका था। जब एजाज़ कलकत्ता रहती थी, खोदाबख़्श ख़ज़ानची तनख्वाह के रुपये लेकर कलकत्ते वाली कोठी में ठहरता था और वहीं से तनख्वाह चुकाकर रसीद लेता था; एजाज़ को डाक़ख़ाने के ज़रिये रुपये नहीं भेजे जाते थे; अली को यह ख़बर थी। उन्होंने लड़के को भेद बतलाया था।

इधर, राजा का रानी के पास आना-जाना घटा कि दासियों,

दूतियों और तरफ़दारों से पता लगवाना शुरू हुआ। खोदाबख़्श इस पते पर आ गये। ऐसे कई और। रानी तरफ़दारों की चालें मामूली ख़ज़ानची खोदाबख़्श, लालच और रानी के प्रेम में न काट सके; जाल में कुञ्जी डाल दी। प्रेम की कहानी बहुत-कुछ पहली जैसी, इसलिए घटना और दुर्घटना का बयान रोक लिया गया।

इसी समय उनके भाग्य के आकाश पर दूसरा तारा चमका। एजाज़ के मकान से चलकर यूसुफ़ राजधानी आये और बाज़ार में ठहरे। भेस बदले हुए थे। प्रभाकर को देखकर चौंके; दूकान में एक जाकेट सिला रहे थे। शाम के बाद से प्रभाकर का पता न चला।

मैनेजर ने बुलाया है, एक अजनबी आदमी से कहलाकर राह पर मिले और मैनेजर ने भेजा है कहकर भाव ताड़ने लगे। खज़ानची की कुञ्जी हाथ से छुट चुकी थी, कलेजा धड़का। डरकर सँभले।

“हम आपका भला कर सकते हैं” यूसुफ़ ने कहा।

खोदाबख़्श रानी की मैत्री की ताक़त से आगन्तुक को देखते रहे।

“आपका राज़ बिगड़ा है, मान जाइए”, यूसुफ़ ने कहा।

खोदाबख़्श का दिल बैठ गया। मैनेजर उससे बड़ा है; कुछ गड़बड़ मालूम हुई हो, सोचकर दहले। उठा कि कह दें, पर सँभाल लिया।

यूसुफ़ ने कहा—“आपको अब मैनेजर के पास न जाना होगा हमीं उनकी मारफ़्त आपने मिलने आये हैं। उनसे हमारा हाल मालूम करने की हिमाक़त न कीजिएगा। हम सरकारी। आप हमसे फ़ायदा उठा सकते हैं? फिर हम भी मुसलमान हैं।”

खजानची को बहुत खुशी न हुई, क्योंकि एक फायदा अभी पूरा-पूरा नहीं उठा पाये थे। फिर भी, यह सोचकर कि आगे क्या आने-वाला है और खुदगर्ज अपनी ओर से फ़ायदे में ला रहा है, बात सुन लेनी चाहिए।

यूसुफ़ जानते थे, कहकर भी राज़ निकाला जाता है; अगले सवाल से काम हासिल होगा। कहा, “हमें आपसे राज़ मिलता रहना चाहिए। हम आपकी निजी उलझनों की मदद करेंगे।”

खोदाबख़श को जी मिला। पूछा, “जनाब का निजी और भी कुछ अगर मालूम किया जा सके?”

“बाद को, जब गठ जाय। आप समझें, हम कोई?”

“माजरा क्या है?”

“वह यह कि एजाज़ से सरकार की तरफ़ की सिखाई औरत भेजकर यह मालूम करना है कि क्या हालात है; बस। अपनी तरफ़ से आप भी पता लगायें कि सरकार के ख़िलाफ़ क्या कार्रवाई है। मुसलमान और नीची-कौम-वाले हिन्दू मिट्टी में मिल जायेंगे। आप याद रखिए। पहले किसी नीची-क़ौम-वाले को फँसाइये।”

खजानची को जँच गई। फड़ककर कहा, “कुछ पता भी आपका...”

“अभी नहीं। अस्सलाम वालेकुम्। खयाल में रखें।”

“वालेकुम्।”

प्रभाकर बैठा था। यूसुफ़ ने अतिथि-भवन की बैठक में झाँका। कहा, “आपके मिलने के लिए मैनेजर साहब खड़े हैं।”

प्रभाकर चौंका। देखकर चुपचाप बैठा रहा। कुछ देर ठहरकर

यूसुफ़ भीतर चलकर कुर्सी पर बैठे, कहा,—“मैं उनका नौकर नहीं। खड़े हैं, कहा, कह दिया, अब आप समझें।”

प्रभाकर ने रोड़ सीधी की और बैठा हुआ टुकुर-टुकुर देखता रहा।

दिलावर बाहर पहरेदार के पास बैठा था। यूसुफ़ को घुसते हुए देखा कि गारद से एक आदमी बुला लाया और लगा दिया। यूसुफ़ की निगाह चूक गई।

“जनाब का दौलतखाना?” यूसुफ़ ने पूछा।

“जनाब का शुभ नाम?” प्रभाकर ने पूछा।

“नाचीज़ हुज़ूर की खिदमत में,” यूसुफ़ ने जवाब दिया।

“रहमदिली?” प्रभाकर ने, मुस्कराकर कहा।

“रहमदिली—अलअमाँ।” यूसुफ़ ने दोहराकर दोस्ती जताई।

प्रभाकर दबा। उभरकर पूछा, “किस अन्दाज से हैं?”

“सिर्फ़ दोस्ती।”

प्रभाकर ने हाथ बढ़ाया।

“यों नहीं।” यूसुफ़ ने बड़प्पन रक्खा।—“आप कैसे तशरीफ़ ले आये?”

“यह तो आपको मालूम हो चुका है।”

“कहाँ?”

“यह भी मालूम होगा।”

“कुछ भी नहीं बदला हुआ नज़र आया?”

“आपका मतलब?”

“मैंने कहा, कुछ आपसे हल हो।”

“आप तो जवाब नहीं देते।”

प्रभाकर चुप हो गया।

“आप बड़े सयाने। पर खुलकर रहेगा।”

प्रभाकर को ताव आया, पर सँभाल लिया।

इसी समय दिलावर घुसा। यूसुफ़ के पीछे आदमी लगा रहा।

“चलिए।” दिलावर ने प्रभाकर से कहा।

प्रभाकर चले।

दिलावर ने यूसुफ़ से पूछा, “जनाब का कहाँ से आना हुआ?”

“मैनेजर साहब के कहने से।” यूसुफ़ साथ-साथ चले।

दिलावर कुछ न बोला। प्रभाकर और दिलावर मुड़कर एजाज वाले महल की तरफ़ चले, यूसुफ़ दूसरी तरफ़ से अपने डेरे की ओर।

यहाँ थाना है, यह पहले से जानते थे। दिल में कोई धड़कन न थी।

पीछे-लमा आदमी आँख बचाकर चला। यूसुफ़ ताड़ न पाये, दिल में खटक न थी। आदमी ने यूसुफ़ की कोठरी का पता लगा लिया।

१६

कमरे में सनलाइट जल रही थी। राजा साहब अपनी बैठक में थे। मसनद लगी हुई। गाव-तकिये पड़े हुए। एक तकिये का सहारा

लिये हुए प्रतीक्षा कर रहे थे कि बेयरा सिपाही से खबर लेकर गया। कहा, प्रभाकर बाबू आये हुए हैं। राजा साहब ने आदरपूर्वक ले आने के लिए कहा। दिलावर बाहर रास्ते के पहरे पर रह गया, प्रभाकर उसी पुलनुमा राह से सरोवर की कोठी को चले। कोठी में पहुँच कर राजा साहब का कमरा, अन्दर जाने के लिए, बेयरा ने प्रभाकर को दिखा दिया। प्रभाकर गये। राजा ने उठकर स्वागत किया और नवयुवक को पास बैठा लिया। स्नेह से कहा, “हम आपसे उम्र में..”

प्रभाकर सर झुकाये रहे।

“बड़ी जिम्मेवारी है।” राजा साहब ने स्वागत कहा।

प्रभाकर स्थिर भाव से बैठे रहे।

“आपका प्रबन्ध हो गया है। आप वहाँ चलकर रह सकते हैं।”

प्रभाकर को साहस से प्रसन्नता हुई।

“आप तो हमारे गवैये के रूप में हैं।”

“गा लेता हूँ,” प्रभाकर ने सीधे स्वर से कहा।

“कुछ पान?”

“जी नहीं।”

“भोजन तो कीजिएगा?”

“जी हाँ।”

“मांस-मछली?”

“हाँ।”

“आप कुछ सुनिए और कुछ सुनाइए।”

राजा साहब ने एजाज़ के आने के लिए खबर भेजी, साजिन्दे भी

बुला लाने को कहा। फिर प्रभाकर से ाप लड़ाने लगे।

समय पर साजिन्दे आ गये। एजाज् भी तैयार हो गई। साज् बाहर से मिलाकर लाये गये। प्रभाकर देखते रहे।

प्रभाकर को राजा साहब नाप न सके, कितना गहरा है।

एजाज् तैयार होकर आई। राजा साहब को सलाम किया और बाल में एक तकिया लेकर बैठ गई। प्रभाकर को देखा, फिर देखा, फिर चुपचाप राजा साहब से पूछा, “आपकी तारीफ़?”

उसी फिसफिसाहट से राजा साहब ने जवाब दिया, “आपके खानदान के। गवैये हैं। देखा जाय, कैसे हैं?”

“तगड़े जान पड़ते हैं।”

“शिक्षित है।”

“यहाँ कैसे?” एजाज् को शक हुआ।

“गायेंगे, रहेंगे। जब चाहेंगे, चले जायेंगे।”

एजाज् को राजा साहब की बात का विश्वास न हुआ, उनके स्वर में ऐसा ही, कटता हुआ आदमी मिला। खामोश हो गई। एक दफे कमर सीधी की, फिर एकटक देखती हुई बैठी रही।

प्रभाकर ने मुद्रा को और अच्छी तरह देखा, दिल में गाँठ ली।

साजिन्दे नौकर, रह-रहकर एक नज़र राजा साहब को देख लेते थे।

राजा साहब की कठिन अवस्था हुई। न एजाज् को गाने के लिए कह सकते थे,—अविश्वास की ऐसी प्रतिक्रिया हुई, न प्रभाकर को, प्रभाकर का गुस्त्व ऐसा गालिब था।

उन्होंने नौकर रखने के भाव को काफी मुलायम करके एजाज् को

देखा। एजाज ने अनुभव किया कि वह दब गई। बड़ा खुरा लगा। अपने से घृणा हुई। पर दबाकर, सैकड़ों पेंच कसने और मुलझाने वाली मुसकान से प्रभाकर को देखकर कहा, “जनाब ही क्यों न श्रीगणेश करें?”

प्रभाकर समझा। नम्रता से स्वीकार कर लिया। पूछा, “क्या गाऊँ?”

“जो जी में आये, कोई ऊँचे-अंग-वाली।”

तानपुरा स्वर भरने लगा। एजाज के गले से मिलाया हुआ। राजा साहब ने कहा, “आपके स्वर में नहीं मिला। दिक्कत हो तो अभी ठहर जाइये।”

एजाज कुछ और दबी। प्रभाकर न कहा, “चल जायगा। घटा लूंगा।”

“अच्छा, मैं ही बिसमिल्लाह करती हूँ।” एजाज मसनद के बीच में आ गई। दिल को चोट लग चुकी। पूरा-पूरा व्यवसाय-वाला रुख लेकर बैठी। साजिन्दे खुश होकर अनुपम रूप देखने लगे। प्रभाकर ने भी देखा, जैसे पत्थर को देख रहा हो। एजाज की हार्दिक सहानुभूति उस क्षण कलाकार प्रभाकर के लिए हुई। भरकर, राजा साहब से बदली हुई, एजाज ने अलाप ली।

प्रभाकर मुग्ध हो गया। चुपचाप दैठा खयाल सुनता रहा। तानों की तरहें दिल में समा गई। साजिन्दे काम करते हुए प्रभाकर को देख लेते थे। राजा साहब निर्भीक कद्रदाँ की तरह बैठे रहे।

खयाल गाकर एजाज हट गई। इसका मतलब था, अब नहीं

गायेगी। राजा साहब समझकर खामोश रहे। साजिन्दे उसको कुछ कह नहीं सकते थे। प्रभाकर आगन्तुक।

एजाज़ पहले की तरह राजा साहब की बगल में नहीं बैठी। गाने के लिए प्रभाकर का जी उठ नहीं रहा था। फिर भी रस्म पूरी करनी थी। शिक्षित घराने का शिक्षित युवक सुकण्ठ और संगीतज्ञ था। ढर्रा छोड़कर उसने धमार गाया। काफी जमी। राजा साहब उछल पड़े।

एजाज़ समझ गई, यह पेशेदार गवैया नहीं। इसका राज लेना चाहिए, दिल में बाँधा। डटी बैठी रही। कलकत्ते-वाली सरकार के आदमी से हुई, बातचीत याद आई। धीरज हुआ। पर राजा की तरफ़ से सदा के लिए पेट में पानी पड़ गया।

राजा साहब ने देखा, प्रभाकर की तारीफ़ से एजाज़ का दिल छोटा नहीं पड़ा। वह और बढ़कर बोले, “अभी आप थके-माँदे आये हैं।”

“अच्छा, कहाँ से?” एजाज़ ने पूछा।

“क्यों, साहब?” राजा साहब ने प्रभाकर को देखा।

“वर्धमान से” प्रभाकर ने कहा।

“जनाब का नाम?” एजाज़ ने पूछा।

“प्रभाकर।”

“उस्ताद हैं?”

प्रभाकर ने साधारण नमस्कार किया।

“अरे भाई, बोस साहब बैरिस्टर हैं, उनके भाई हैं। आये हैं।

एजाज़ और दूर तक गाँठ गई।—“कुछ रोज़ रहेंगे, यानी बहुत कुछ सुनने को मिलेगा। राजा साहब का दरबार है।” खिलखिला-कर हँसी।

आज के बर्ताव से एजाज़ को इच्छा हुई, दूसरे दिन कलकत्ता खाना हो जाय और नौकरी छोड़ दे, मगर बड़ा रहस्यमय रूप सामने देखा, जिसको खानदानी पढ़ी-लिखी वेश्या छोड़कर न भोगेगी; आखिरी दम तक सुलझाएगी।

१७

राजा साहब ने देखा कि एजाज़ का मिजाज उखड़ा-उखड़ा है, उन्होंने साञ्जिन्दों को रुखसत कर दिया। प्रभाकर को भोजन कराना था, इसलिए बैठाले रहे। काट कुछ गहरा चल गया था; यानी एजाज़ को राजा साहब चाहते थे, पर दिल देकर नहीं; अगर दिल देकर भी कहें तो भेद बतलाते हुए नहीं। सिर्फ कला-प्रेम था या रूप और स्वर का प्रेम जो रुपये से मिलता है। यही हाल एजाज़ का। उसके पास धन था, रूप और स्वर भी, पर तारीफ़ न थी, यह दूसरों से मिलती थी, और उन्हीं लोगों से जो रूप, स्वर और यौवन ख़रीद सकते हैं। षोड़शी होकर जिस समूह में वह चक्कर काटती थी, वह कैसा था, आज प्रभाकर को देखकर उसकी समझ में आया। वह बड़प्पन कितना बड़ा छुटपन है, राजा साहब के बर्ताव से परिचित हुआ। प्रभाकर को न देखने पर वह समझ न पाती कि आदमी की असलियत क्या है। आजकल जैसे उस छुटपन

वाले बड़प्पन से उसका छुटकारा न था। आज के परिवर्तन के साथ प्रभाकर का प्रकाश उसके दिल में घर करता गया। खेल और मजाक दिल नहीं। किसी को बनाना और किसी को विगाड़ना दिलगीरी नहीं, सौदा है। जो कुछ भी अबतक उसने किया वह एक वचत थी। असलियत क्या थी, कहाँ थी, वह नहीं समझ पाई। आज भी नहीं समझी। सिर्फ उसे दिल नहीं माना। टूटी जा रही थी। असलियत असलियत से मिल गई। प्रभाकर की जैसी शालीनता उसने किसी में नहीं देखी। जो बातचीत सुन चुकी है, उससे अगर इस आदमी का तअल्लुक है तो गजब है यह आदमी।—“स्वदेशी !”

एजाज रहस्य मालूम करने के लिए उतावली हो गई। प्रभाकर ने जो गाना गाया, उसमें प्रदर्शन न था, किसी की परवा नहीं, फिर भी किसी से नफरत नहीं। यह अच्छा गाना जानता है, पर अच्छी का प्रभाव नहीं रखता। गाने के सम्बन्ध में चढ़ी रहकर भी एजाज चढ़ी न रह सकी। राजा साहब से जो दुराव हुआ था, वह उनके प्रभाकर के लिए हुए प्रेम के कारण था। अब वह एक हार बनकर रह गया। उसको खुशी हुई।—“एक कुंजी उसके पास भी है।”

अपमान को भूलकर उसने राजा साहब से कहा, वड़ा-रूखा-रूखा लग रहा है—“मत्रकशी ?”

“क्या बुरा ?”

राजा साहब जो बाजी लगा चुके थे, वह प्रभाकर को बाहर का आदमी नहीं समझ सकती थी।

एजाज का इशारा मिलते ही गुलशन शीशा और पैमाना ले आई। उसी तरह ढालकर एजाज को दिया। एजाज ने राजा साहब को। प्रभाकर के लिए लेमनेड आया। एक प्याला पिलाकर दूसरा भरा, तीसरा भरा। राजा साहब खाली करते गये। एजाज भी साथ देती गई। पूरा नशा आ गया। भोजन की थाली आने लगी। तीनों भोजन करने लगे।

“प्रभाकर बाबू से दो गहरे तअल्लुकात हैं।”

“हाँ।” राजा साहब ने कहा।

“हमारे कौन-कौन से फ़ायदे आपसे हैं, हमें मालूम हो तो हम भी साथ हो जायँ। बात हम तीनों की है। हमारी मदद काम कर सकती है।”

“इसमें क्या शक।”

प्रभाकर ने मधुर स्वर से पूछा, “आपके ज़मींदारी है?”

राजा साहब को प्रश्न बहुत अच्छा लगा। वह स्वयं इतना साधारण प्रश्न नहीं कर सकते थे।

एजाज को जवाब देते हुए झेप हुई। कहा, “अब हमें आप लोगों के सवाल का जवाब देना पड़ता है। पहले हमीं जवाब लेते थे। आते-जाते हमीं पहले बोलते थे। हिन्दू जवाब देते थे।”

“इसी डर से हमने हुज़ूर से बातचीत नहीं की कि हुज़ूर खुद पूछें।” राजा साहब ने चुटकी लेते हुए कहा।

“ऐसी बात का हमें कोई खयाल न था।”

“कुछ तो होगा ही।” राजा साहब डटे रहे।

“वह बहुत अनुकूल नहीं।”

“हमारे ?”

“हाँ।”

“आपके ?”

“राज्य देते रहें तो सरकारी तौर से हो सकती है।”

“राज्य तो आपने हमें दे दिया।”

एजाज प्रभाकर को देखती रही। प्रभाकर ने कहा, “अब हमारा फ़र्ज है, हम आपकी सेवा करें। अभी इतना ही कि हम स्वदेशी।”

“इस राज्य से हमारी सरकार के यहाँ क्रम बढ़ सकती है।”

राजा साहब की आँखें झप गईं।—“इससे दिल का हाल नहीं कहा।”

एजाज प्रभाकार से सुनने के लिए बैठी रही। प्रभाकर ने कहा, “मैं स्वदेशी का सक्रिय हूँ। सूत, चरखा, करघा, कपड़े तथा ग्रामीण वस्तुओं के प्रचलन का बीड़ा उठाया है। काम करता हूँ। राजा साहब की सहानुभूति है।”

“जमींदार छोटे-मोटे हम भी हैं। आपसे हमारा स्वार्थ है, हम समझते हैं। हमारे यहाँ एक डाट लगा दी गई है। हमसे आपका उपकार हो सकता है। कुछ राज्य हमें काम करने के लिए दीजिएगा।”

राजा साहब बहुत खुश हुए। कहा, “हमारा एक ही रास्ता है।”

“हम बातें आपसे नहीं कर सकते, आज्ञा है। आपने जो कुछ कहा है, उसका कुछ प्रमाण भी हमें चाहिए। यहाँ हम कपड़े के केन्द्र मजबूत करेंगे। व्यवसाय बढ़ायेंगे। आपको अर्थ और अनर्थ के सम्बन्ध में काफ़ी जानकारी है।”

“उस तरफ़ से तो कुछ मिलेगा नहीं।” एजाज़ ने कहा।

“इस तरफ़ का भी कुछ न जाना चाहिए। इतना स्रयाल रखिए, उनके आने के दिन की बातचीत मिल जानी चाहिए।”

“मिलेगी। ज़मींदार तो हम भी हैं, इतना काफ़ी है। कोई दूसरी मदद?”

“क्या पार्टी को दस्तख़त करके नाम दे सकती हैं?”

“यह सोचूँगी, शायद नहीं। पहले की बात होती तो हिम्मत बाँधकर देखती।”

“पुलिस या खुफ़िया का राज़ यहाँ का है या कलकत्ता का?”

“कलकत्ता का”

“एक आदमी यहाँ आया है, आपको बता रहा हूँ।” प्रभाकर ने यूसुफ़ के चेहरे का वर्णन किया।

“ऐसा ही आदमी वह भी था। पहले ही पहल आया था।” एजाज़ ने कहा।

“आप को यह आदमी कहाँ मिला?”

“गेस्ट-हौस में।”

“किसी दूसरे ने भी देखा?”

“हाँ, उसने देखा जो हमारे साथ है।”

एजाज़ ने बड़ी-बड़ी आँखें निकाली।

राजा साहब ने खिदमतगार को भेजा। कुछ ही अरसे में दिलावर आया। भीतर बुलाकर राजा साहब ने पूछा, “आपके पीछे किसी को देखा?”

“राज मिल गया है। बाजार में ठहरा है। बाहर का आदमी है।”

“जहाँ-जहाँ जाय, आदमी लगा रखो, देखे रहे, मालूम कर ले, असली कौन है।”

“जो हुकम।” कहकर दिलावर बैठक छोड़कर चला।

“हमारे लिए अच्छा होगा, अगर आप कलकत्ता चली जायँ, आप इस तरह हमारी ज्यादा मदद कर सकती हैं। यह आदमी आपके कारण आया है। क्या राजा साहब यह बतलाएँगे कि हमारा राज किसी को उनसे नहीं मिला।”

“नहीं, नहीं मिला। इनसे हम कहते, लेकिन दूसरे की बात है, इसलिए नहीं कहा।”

“हमें इसका दुःख नहीं।” एजाज दृढ़ हुई।

“हमारी किस्मत।” प्रभाकर ने कहा, “यह आदमी आपके लिए (एजाज की ओर उँगली उठाकर) आया है। यहाँ इसका कोई आदमी होगा। मुझसे मैनेजर का नाम लिया, मगर मैनेजर से इसकी जान-पहचान भी न होगी।”

राजा साहब सीधे होकर बैठे। प्रभाकर कहता गया, “जिस तरह भी हो, आप-लोगों में किसीसे कोई आदमी मिलेगा। अब होशियारी से चलना है।”

राजा साहब चौंके।

“इसलिए कुछ रोज़ जाने की बात न करें। लेकिन जाना बहुत जरूरी है। नसीम यहाँ नहीं। इस मामले की वही मुखिया है।”

“यानी।” प्रभाकर ने पूछा।

“अभी हमारी चड्डी नहीं गठी। यह राज बर बाद को। आपका अस्ली नाम प्रभाकर है?”

“मैं प्रभाकर हूँ। और मैं कुछ नहीं जानता।”

“आप, कलकत्ते में मुझसे मिलेंगे।”

“प्रभाकर ही आपसे मिलेगा।”

राजा साहब, को ताल कटती हुई-सी जान पड़ी। हृदय में कोई रो उठा, मगर बैठे रहे।

प्रभाकर ने बिदा माँगी। देर हो गई थी। उसके साथी अभी छूटे हुए थे। रहने के लिए उन्होंने सम्भवतः दूसरा कमरा दूसरे मकान में लिया हो। एक तरह से पकड़ा जाना ही समझना चाहिए। प्रभाकर सोचकर बहुत घबराया।

राजा साहब ने पालकी मँगा दी। प्रभाकर बैठे। राजा साहब ने अतिथि-भवन में रखने की आज्ञा दी। दूसरे दिन सबेरे जगह पर भेजने के लिए कहा। दिलावर ने सुन लिया। प्रभाकर ने कहा, “मैं पता लेकर ही जाऊंगा। ये मेरी पूरी मदद करें। ऐसी आज्ञा दे दीजिए।”

राजा साहब ने दिलावर को बुलाकर हुक्म दे दिया।

एजाज के मन से संसार का प्रकट सत्य दूर हो गया। कल्पना-दर्श में रहने की आकांक्षा हुई। प्रभाकर का ऐसा व्यक्तित्व लगा जैसा कभी न देखा हो। इसके साथ जिन्दगी का खेल है, खिलाफ़ मौत का सामाँ।

रुस्तम बहुत ख़श थे कि रानी साहबा ने उन्हें जमादारी दी। जटाशंकर जान बचाने के लिए रुस्तम की जगह पहरा दे रहे थे। राजाराम रहस्य का भेद न पाकर ख़ामोश हो गया। दूसरे पहरेदारों ने सुना और रुस्तम के तरफ़दार हो गये। जटाशंकर यह उड़ाये हुए थे कि वे शौकिया सिपाही का काम नहीं कर रहे। जल्द रुस्तम पर आफ़त आती है और ऐसी कि सँभाली न सँभलेगी। तीनों पहरों के सिपाही जो मौक़े पर नहीं थे, तरह-तरह की दीवार उठाते और ढहाते रहे।

सुबह का वक़्त। रुस्तम कुर्मी पर बैठे थे। मन्ना आई। राजाराम के सामने कहा, “रानी जी की सलामी दो।”

रुस्तम झेंपा। बोला, “रानी जी यहाँ कहाँ हैं?”

राजाराम तनकर देखने लगा। तम्बू के उसी सिपाही को पुकारकर कहा, “देख लो, जमादार का हाल।”

मालखाने से जमादार जटाशंकर भी तद्गतेन मनसा देखने लगे।

मुन्ना ने कहा, “सलामी नहीं देते तो जमादारी से बरखास्त किये जाओगे।”

रुस्तम घबराया। उठकर झेंपकर सलामी दी। देखकर मुन्ना ने कहा, “एक दिन में तुम्हारी चर्बी बड़ गई। जमादारी के लिए तुमने कहा था, जमादारी तुमको दी गई। लेकिन तनख़्वाह तुम्हारी वही रहेगी।”

राजाराम और तम्बू-वाला सिपाही हँसा। तम्बू-वाले ने कहा, “जमादार साहब ने इतनी मिहनत से चोर पकड़ा, जमादारी मिली, लेकिन अब तो कुछ और ही बात जान पड़ती है।”

मुन्ना ने कहा, “रानी जी की इच्छा। जमादार जटाशंकर को उन्होंने सिपाही बना दिया, लेकिन तनख्वाह वही रखी। आज हुक्म हुआ है, जमादार को २०) का इनाम मिले, क्योंकि काम बहुत अच्छा किया।”

राजाराम ने अपनी तरफ़ से समझा और खुश होकर दोमंजिले के मालखाने-वाले पहरेदार जमादार जटाशंकर को, जो आँगन की ओर खड़े थे, आवाज़ लगाकर कहा, “जमादार, कैसा सच्चा फ़ैसला आया है!” तम्बू-वाला, रुस्तम का तरफ़दार, कुछ न समझा। आवाज़ बैठाकर कहा, “बड़े आदमी का फ़ैसला बड़े आदमी जानें।”

“अगर सही मानी में तरक्की चाहते हो तो चलो उठकर,” मुन्ना ने कहा। रुस्तम उठकर चला। जीने पर मुन्ना ने कहा, “अगर खजाने में उसी वज़त चोरी हो गई हो तो छांट दिये जाओगे या बचोगे?”

रुस्तम उछलकर सहम गया—“ऐं!”

“रानी के हथकंडे हैं, कुछ समझता भी है? जैसा-जैसा कहा जाय, कर।” कहकर मुन्ना ने पाँच रुपये का एक नोट निकालकर दिया। शरमाकर रुस्तम ने ले लिया, कहा, “बस?”

मुन्ना ने कहा, “काम तुम्हारा चार आने का भी नहीं। जब काम पसन्द आयेगा, तब। यह तुम्बा-फेरी किस लिए हो रही है,

यह न तुम जानते हो, न हम। यह सिर्फ रानी जी को मालूम है। चलो, अभी तुमसे बहुत काम है। अपनी वर्दी पहनो, अब तुम फिर सिपाही के सिपाही।”

जमादार जटाशंकर ने वर्दी उतार दी। रुस्तम ने खीस निपोड़कर पहनते हुए कहा, “जमादार, जो कुछ भी आपने किया, आप समझें; जमादारी में आपसे हमने सलामी ली, इसका ख्याल न करें, मुआफ़ कर दें।”

जमादार खुश हो गये। कहा, “यह राजा-रानी का खेल है। कभी घोड़ पर चढ़ना पड़ता है, कभी गधे पर।”

मुन्ना ने कहा, “चलो।” कुछ आगे बढ़कर तीस रुपये दिये। कहा, “दस राजाराम को दो और बीस तुम लो। रानी जी ने इनाम दिया है।”

रुपये लेकर जटाशंकर ने कहा, “लेकिन वहाँ ताला टूट गया होगा, तो क्या होगा?”

“देखो, जमादार, तुम्हारे पास बचत है, तुम्हारे पास एक ही कुंजी रहती है। दूसरी कुंजी कहाँ से आई, खजानची से पूछोगे तो नौकरी जायगी। खजानची भी क्या जाने? वह खजाने का ताला तोड़वायेगा? जिनका रुपया है, वे ऐसे निकालें या वैसे; किसी का क्या?”

“यह भी ठीक है।”

“चुपचाप बैठे रहो। अब चढ़ाई होगी।”

“चढ़ाई क्या?”

“रानी जी की विजय।”

“उनकी तो विजय ही है।”

मुन्ना खजानची खोदाबरूश के यहाँ गई। दूसरी औरत से खजानची का तअल्लुक कराकर, दूसरे मर्द से रिश्वत दिलाकर, 'एक औरत से उसका तअल्लुक हो गया है' उसकी बीबी से कहकर लड़ाकर, बिगड़ाकर, राजा साहब के नरुली दस्तखत से इम्प्रेस्ट से रुपया निकलवाकर, गवाह तैयार करके मुन्ना ने खजानची को कहीं का न रक्खा था। उसको पुरस्कार भी मिलता था। इन कामों में रानी साहबा का हाथ था। धीरे-धीरे रानी का प्रेम घनीभूत किया गया। दो-एक बार रात को कोठी में बुलाकर खिलाया-पिलाया गया। खजानची की कल्पना दूर तक चढ़ गई। रानी का चरित्र जैसा था, उससे उन्हें जल्द सफल होकर राज्य करने में अविश्वास न रहा।

कुंजी देते हुए मुन्ना ने कहा, "रानी साहबा ने कहा है, अब तुम यहाँ तक आ गये।" कहकर उसने अपनी छाती पर हाथ रक्खा।

खोदाबरूश खुश होकर बोले, "मेहरबानी।"

मुन्ना ने कहा, "आप आज ही जाइए और हिसाब लगाकर मुझे बताइएगा, मैं राह पर पीपल के नीचे मिलूँगी, कितना रुपया निकाला गया। आपको तो मालूम है, काम दूसरे से कराया जाता है, हिसाब दूसरे से लिया जाता है। जिसने रुपया निकाला वह खा नहीं गया, मालूम हो जायगा। फिर उसी तरह बिल बनाकर जरूरी लिखकर सही करा लीजिए। रानी साहबा वह बिल देखकर वापस कर देंगी। अकौन्टन्ट

के पास बाद को भेज दीजिए। काम हो जाने पर इनाम मिलेगा।”

कहकर मुन्ना लौटी। खजानची देखते रहे। सोचते रहे। उनसे नोटों-वाले सन्दूक की कुंजी ली गई थी। अन्दाज़न दो लाख रुपया था। सोचकर कपि। दो लाख रुपये का जाल। इम्प्रेस्ट से हज़ार-पाँच सौ रुपये निकाल लेना बड़ी बात नहीं। अकौन्टेन्ट को शक नहीं होता। दो-दो लाख का बिल! इतना रुपया तो मालगुजारी के वक़्त ही जाता है।

मुन्ना ने यह रुपये-वाला जाल अपनी तरफ़ से किया था। रानी साहबा को इसकी ख़बर न थी। बुआ को झुकाने के लिए उन्होंने आज्ञा दी थी कि किसी सिपाही या जमादार से फँसा दी जायँ, कुंजी उनके हाथ में रहे; लेकिन मुन्ना ने लम्बा हाथ मारा।

खजानची ग्यारह बजे के करीब खजाने आये। जटाशंकर बैठे थे। खजाने में उस समय राजाराम का पहरा बदल चुका था। रामरतन था। उसने बहुत तरह की बातें सुनी थीं। पर वह आदी था। खड़ा रहा। खजानची ने वही सन्दूक खोला। सन्दूक में एक भी नोट न था। सन्दूक का बीजक निकालकर देखा दो लाख तेरह हज़ार के नोट थे।

जटाशंकर तके हुए थे। रामरतन पहरे पर टहल रहा था। क्या हो रहा है, क्या नहीं, इसकी उसको ख़बर न थी। खजानची ने चुपचाप बीजक निकालकर जेब में किया और सन्दूक में ताली लगाई, फिर बाहर-वाला ताला लगाया। जटाशंकर फाटक की आड़ से साधारण भाव से देख रहे थे। सिपाही चौंका, पर सँभलकर टहलने लगा।

खजानची ताला लगाकर चले। पीछे-पीछे जटाशंकर हो लिये। खजानची घबराये हुए थे। जटाशंकर के लिए इतना काफी था। अभी तक कोई पकड़ उन्हें न मिली थी। खजाने से कुछ दूर निकल जाने पर खजानची ने उन्हें देखा, घबराहट को दबाकर पूछा, “क्यों जमादार, क्या बात है?”

जटाशंकर ने जवाब नहीं दिया। खजानची की जब पकड़ ली। “हाथ-पैर हिलाये कि उठाकर दे मारा और हड्डी-हड्डी अलग कर दी।” गरजकर कहा।

“यहाँ तुम्हारा क्या है?”

“यहाँ हमारी रोटियाँ हैं और आपकी भी।”

“हम पर हाथ उठाने का नतीजा मालूम होगा?”

“बहुत अच्छी तरह।”

“जबान हिलाई तो...”

“चुप रहिए।”

“हम वही जिन्होंने रानों के नीचे रक्खा और सदियों। यहाँ कुछ ऐसा ही।”

जटाशंकर फ़ौजी आदमी थे। धोखे पर धोखा खा चुके थे। ताब आ गया। चाहा कि उठाकर पटक दें। लेकिन सँभल गये। कहा, “खजानची साहब, हमको यही हुक्म है। आप तो अब वही हैं। सलाम।”

खजानची ने कहा, “रा...”

“हुजूर, निकालने वाले तो हमी हैं। यह फ़र्द हमको दे दीजिये।”

“उन्हीं का हुक्म?”

“हुजूर। लेकिन उससे न कहिएगा, और आगेवाली काररवाई पहले हमसे। यहाँ भी तो एक कुंजी रहती है?”

“हाँ, हाँ, ठीक है। यह लो।” खजानची ने बीजक दे दिया। देना नहीं चाहते थे, हाथ काँपा। पर काँटा ऐसा ही था। सोचा, “रुपये इसीने निकाले हैं। दो आदमियों के सामने कहला लेना है।”

जटाशंकर ने बीजक लेकर कहा, “इसकी बात उससे मत कहिएगा। नहीं तो हम पकड़ जायँगे। उससे यह मालूम कीजिए कि कहाँ रक्खा है? आपसे कहे देते हैं कि निकालकर हमने दिये।”

“तो वे पहुँच गये।”

“कितने लिखे हैं? बताइए, नहीं तो हमें पकड़वाना पड़ेगा।”

“दो लाख तेरह हजार। जमादार, बहुत नाजुक मामला है। भेद न खुले। तुम्हें भी मिलेगा।”

“आगेवाली लीपापोती भी हमें मालूम होनी चाहिए। रुपया रक्खा कहाँ है, पूछ लीजिएगा, नहीं तो हम पुछवाएँगे। कल हुजूर इसी वक्त खजाने में तशरीफ़ ले आने की मिहरबानी करें, नहीं तो रा—के पास मामला दायर होगा। खूब खयाल रहे (बीजक दिखाकर) इसका हाल किसीसे कहिएगा तो बचिएगा नहीं। हमी आपतक इसका भेद है।”

“यह तै रहा। लेकिन तुम भी इसका जिक्र न करना।”

“हुजूर का मामला, जिक्र किससे किया जायगा?”

जमादार राजा को सम्बोधन कर रहे थे, खोदाबक्श अपने को समझते थे। सलाम करके जमादार वापस आये, खजानची आगे बढ़े। पीपर के चबूतरे पर मुन्ना बैठी थी। देखकर मुसकराती हुई सामने आई। “कितनी है?” होठ रंगकर पूछा।

“पाँच लाख।” खजानची ने छूटते ही कहा।

मुन्ना ने अंक को मन में दोहराये।

“तो जल्द बिल तैयार हो जाना चाहिए। राजा साहब के दस्तखत बनाकर अकौन्टेन्ट के पास पहुँचा दिया जाना चाहिए।

खजानची मन में कुढ़ा। सोचा, इस बेवकूफ को कौन समझाये, दो-दो, ढाई-ढाई लाख रुपये, ज्यादा रुपये होने पर छिपा रखने के सिवा, सीधे रास्ते से हज्म नहीं किये जा सकते। वे राजा की निगाह पर आएँगे। बिल जाली बना लिया जा सकता है, पर खर्च का मेमो राजा की नज़र से गुज़रेगा। इम्प्रेस्ट का रुपया एक साथ मेमो बनकर निकलता है घर के खर्च के लिए। उससे हजार-पाँच सौ साल-छः महीने में निकाल लिया जा सकता है। उसके बिल सही होकर अकौन्टेन्ट के पास भेजे जाते हैं तो कैश-लेजर कर लिया जाता है, उसका अलग से मेमो में उल्लेख नहीं आता।

खुलकर खजानची ने कहा, “अच्छी बात है” फिर पूछा, “रुपये रानी साहबा के पास पहुँच गये?”

“उसी वक्त” स्वर को मुलायम करके मुन्ना ने कहा, “नहीं तो रक्खे कहाँ जायेंगे?”

“बिल बनाकर अकौन्टेन्ट के पास भेजने

साहबा ने हुक्म दिया है?"

"हमसे सवाल करने के क्या मानी? हम जैसा सुनते हैं, वैसे कहते हैं।"

"अच्छा तो उसी तरह बिल भेज देंगे।" खजानची को अँधेरा दिखा। वह रास्ता काटकर चले।

मुन्ना को जान पड़ा, कुछ बिगड़ गया। कुछ अप्रतिभ हुई। मगर फिर चेतन होकर कहा, "आप इतना नहीं समझते जब लोहे के सन्दूक से नोट गायब हो सकते हैं, तब बाकी काररवाई भी हो सकती है।"

"कैसे?"

"जैसे आपसे कुंजी ली गई।"

"वैसे ही मेमो पर राजा के दस्तखत करा लिए जायँगे और पाँच लाख रुपये के एक खर्च पर?"

"जहाँ पाँच लाख की चोरी होती है, वहाँ एक लाख की कम-से-कम रिश्वत होगी, और इस रकम से कम न हो, ऐसा काम अभी संसार में नहीं रचा गया।"

"यह तो हम समझे, लेकिन मेमो पर राजा के दस्तखत कैसे होंगे?"

"मेमो क्या है?"

"जिस पर बिल के रुपये लिखे जाते हैं।"

"राजा की सही हो जाने पर ये रुपये दर्ज कर दिये जायँगे।"

"खजानची खुश हो गये। कहा, हाँ, ऐसा हो सकता है। लेकिन वहाँ भी लगाव होगा।"

“राज्य रानी का भी है, लगाव सबसे है, जो उनका काम करेंगे, उनपर वे मिहरबान रहेंगी।”

“अच्छी बात है; अब कुल कररवाई कर ली जायगी, लेकिन अकौन्टन्ट समझ जायँगे।”

“कौन समझेगा, कौन नहीं, इसकी चिन्ता व्यर्थ है।”

“यह भी ठीक। हमें क्या मालूम, कौन-कौन नेक नज़र पर हैं।”

मुन्ना खजानची की नुकीली दाढ़ी देखती रही। खजानची ने खुश होकर रास्ता पकड़ा।

२०

यूसुफ़ के पीछे तीन आदमी लगाये गये। होटल में यूसुफ़ ने कलकत्ते के एक मित्र का पता लिखाया था। रात को प्रभाकर अपने मित्रों की तलाश में बाज़ार में गये। पालकी के अन्दर बैठे रहे। पालकी के दरवाज़े बन्द। दिलावर ने साथियों के साथ यूसुफ़ का पता ला दिया। बाज़ार के लोगों पर राजा के लोगों का प्रभाव था। जिस कमरे में सामान था, उसमें प्रभाकर के साथी नहीं मिले। प्रभाकर लौटे। अतिथिशाला के कमरे में आकर पूछा, “बाज़ार में रहने के कितने होटल हैं?”

दिलावर ने कहा, “सिर्फ़ तीन।”

“और कोई रहने की जगह है?”

“और रंडियों के मकान हैं।”

निश्चय करके प्रभाकर ने पूछा, “क्या नाम इस आदमी ने लिखाया है?”

“शेख नज़ीर”

कलकत्ते का पता दिलावर ने लिखा लिया था। प्रभाकर ने कहा, “सावधानी से इस आदमी का पीछा किया जाना ज़रूरी है। वहाँ तीन आदमी जायँ। एक पहले ही उस पते पर पहुँचे। साथ वकील और पुलिस का अच्छा आदमी, कम-से-कम इन्स्पेक्टर होना चाहिए। हम चिट्ठी देंगे, वकील आदमी ले लेगा। इस पते का आदमी अगर यह नहीं, तो वह मिलेगा। इसके पहुँचने के पहले वहाँ पहुँचना चाहिए। यह भी बाद को वहाँ जायगा, और यह कहेगा कि वह स्वीकार कर ले कि वह यहाँ आया। तुम समझे?”

“हाँ, लेकिन यह अगर कहकर आया होगा तो सब-का-सब गुड़-गोबर हो जायगा। बड़ा नीचा देखना होगा। वह इसीका नाम बतलाएगा, या नहीं मिलेगा। यह सरकारी आदमी है, वह भी होगा। इस तरह न बनेगा। अभी आप कच्चे हैं, बाबू। हम होटल वाले से कह आये हैं, कल वह इनसे इनके एक रिश्तेदार का नाम पूछेगा, अपने मन से पूछेगा, जैसे साले का नाम या मामू का या मौसी का। इन्हें जवाब देना होगा, अगर जवाब न दिया तो कहा जायगा कि ये राजा के सिपुर्द किए जायँगे। ये गलत नाम बतलाएँगे। इस तरह यहीं गवाही पक्की हो जायगी। फिर कलकत्ते का हाल हम मालूम कर लेंगे। राजा भी सरकार के हैं। अगर इन्होंने बात न मानी तो इनसे इतने सवाल किये जायँगे कि होश फ़ास्ता हो जायँगे।”

दिलावर की बातों से प्रभाकर को खुशी हुई। सर झुका लिया। कहा, “आप लोगों से बहुत सीखना बाकी है।” मन में कहा, “काम उस तरह भी पक्का था, झूठ से कहाँ बचाव है?”

“बाबू, आपकी शराफत के हम कायल हो गये। आप हमें अपने आदमी मालूम होते हैं। हमी आपके साथ रहेंगे। छोटी-सी तनखाह में ऐसी गिरह लगानी पड़ती है, नहीं तो लोग बिना शहद लगाये राजा को चाट जायँ। अब आप आराम कीजिए।”

प्रभाकर लेटे। रात का तीसरा पहर बीत रहा था।

सबेरे होटल-वाले ने यूसुफ़ से एक रिश्तेदार का नाम पूछा। यूसुफ़ चौकन्ने हुए। मगर मामला तूल पकड़ जायगा सोचकर अपने रिश्तेदार का नाम बतलाया। होटल-वाले ने यूसुफ़ के दस्तखत कराये। यूसुफ़ ने बिगाड़कर दस्तखत कर दिये। फिर कलकत्ते-वाले जहाज़ के लिए रवाना हुए। खबर लेकर उनके पीछे तीन आदमी लगे। बहुत से यात्री थे। उन्हें मालूम नहीं हो सका, कौन उनकी गरदन नाप रहा है।

कलकत्ते में उतरने के साथ उन्होंने अपने नाम के साथ जो पता लिखा था, उस पर पहुँचने के लिए एक आदमी तीर की तरह छुटा। पहले दरजे की बग्घी किराये की की और जल्द चलने के लिए कहा। उसके दो साथी, रास्ते पर यूसुफ़ को तीसरे दरजे की टूटी बग्घी ठहराते हुए देख कर, पूछताछ करने लगे, “कहाँ जाना है—जनाब कहाँ से तशरीफ़ ले आये?” मतलब जवाब लेना नहीं, रोके रहना था। यूसुफ़ सस्ते भाव चढ़ना चाहते थे, जन्दबाजी नहीं की। एक बग्घी-वाले

निश्चय करके प्रभाकर ने पूछा, “क्या नाम इस आदमी ने लिखाया है?”

“शेख नज़ीर”

कलकत्ते का पता दिलावर ने लिखा लिया था। प्रभाकर ने कहा, “सावधानी से इस आदमी का पीछा किया जाना जरूरी है। वहाँ तीन आदमी जायँ। एक पहले ही उस पते पर पहुँचे। साथ वकील और पुलिस का अच्छा आदमी, कम-से-कम इन्स्पेक्टर होना चाहिए। हम चिट्ठी देंगे, वकील आदमी ले लेगा। इस पते का आदमी अगर यह नहीं, तो वह मिलेगा। इसके पहुँचने के पहले वहाँ पहुँचना चाहिए। यह भी बाद को वहाँ जायगा, और यह कहेगा कि वह स्वीकार कर ले कि वह यहाँ आया। तुम समझे?”

“हाँ, लेकिन यह अगर कहकर आया होगा तो सब-का-सब गुड़-गोबर हो जायगा। बड़ा नीचा देखना होगा। वह इसीका नाम बतलाएगा, या नहीं मिलेगा। यह सरकारी आदमी है, वह भी होगा। इस तरह न बनेगा। अभी आप कच्चे हैं, बाबू। हम होटल वाले से कह आये हैं, कल वह इनसे इनके एक रिश्तेदार का नाम पूछेगा, अपने मन से पूछेगा, जैसे साले का नाम या मामू का या मौसी का। इन्हें जवाब देना होगा, अगर जवाब न दिया तो कहा जायगा कि ये राजा के सिपुर्द किए जायँगे। ये गलत नाम बतलाएँगे। इस तरह यहीं गवाही पक्की हो जायगी। फिर कलकत्ते का हाल हम मालूम कर लेंगे। राजा भी सरकार के हैं। अगर इन्होंने बात न मानी तो इनसे इतने सवाल किये जायँगे कि होश फ्रास्ता हो जायँगे।”

दिलावर की बातों से प्रभाकर को खुशी हुई। सर झुका लिया। कहा, “आप लोगों से बहुत सीखना बाकी है।” मन में कहा, “काम उस तरह भी पक्का था, झूट से कहाँ बचाव है?”

“बाबू, आपकी शराफत के हम कायल हो गये। आप हमें अपने आदमी मालूम होते हैं। हमीं आपके साथ रहेंगे। छोटी-सी तनख्वाह में ऐसी गिरह लगानी पड़ती है, नहीं तो लोग बिना शहद लगाये राजा को चाट जायँ। अब आप आराम कीजिए।”

प्रभाकर लेटे। रात का तीसरा पहर बीत रहा था।

सबेरे होटल-वाले ने यूसुफ़ से एक रिश्तेदार का नाम पूछा। यूसुफ़ चौकन्ने हुए। मगर मामला तूल पकड़ जायगा सोचकर अपने रिश्तेदार का नाम बतलाया। होटल-वाले ने यूसुफ़ के दस्तखत कराये। यूसुफ़ ने बिगाड़कर दस्तखत कर दिये। फिर कलकत्ते-वाले जहाज़ के लिए रवाना हुए। खबर लेकर उनके पीछे तीन आदमी लगे। बहुत से यात्री थे। उन्हें मालूम नहीं हो सका, कौन उनकी गरदन नाप रहा है।

कलकत्ते में उतरने के साथ उन्होंने अपने नाम के साथ जो पता लिखा था, उस पर पहुँचने के लिए एक आदमी तीर की तरह छुटा। पहले दरजे की बग्घी किराये की की और जल्द चलने के लिए कहा। उसके दो साथी, रास्ते पर यूसुफ़ को तीसरे दरजे की टूटी बग्घी ठहराते हुए देख कर, पूछताछ करने लगे, “कहाँ जाना है—जनाब कहाँ से तशरीफ़ ले आये?” मतलब जवाब लेना नहीं, रोके रहना था। यूसुफ़ सस्ते भाव चढ़ना चाहते थे, जन्दबाज़ी नहीं की। एक बग्घी-वाले

से तै न हुआ, दूसरे के पास चले।

आगन्तुकों ने स्थान का नाम न सुना था। ज़रा देर करके आये थे। वे दूसरे के पास गये, साथ-साथ यह भी गये।

यूसुफ़ ने कहा; “तालतला?”

“हाँ, बाबू।” बग्घीवाले ने जवाब दिया।

“क्या लोगे?”

“डेढ़ रुपया।”

“वह क्या है थोड़ी दूर पर। डेढ़ रुपया बहुत है। ठीक-ठीक बतलाओ।

‘अरे साहब, हम भी साथ हो जायेंगे क्या बुरा है? तै कर लीजिए। आप बड़े आदमी हैं। पीछे बैठिए। हम आगे, पिछोड़े रहेंगे। आधा आप दीजिए, आधा हम।’

बात यूसुफ़ को जँच गई। पूछा, “आप लोग भी वहीं चलेंगे?”

“जी हाँ,” एक ने कहा, “कुछ दूर और चलना है। पैदल चले जायेंगे।”

“कहाँ से आ रहे हैं?”

“उलूबड़िया से।”

एक साथी मुसलमान था। यूसुफ़ मान गये। गाड़ी तै की। सवा रुपये की ठहरी। तीनों बैठे। मुसलमान दोस्त असल में हिन्दू था, फ्रेंचकट दाढ़ी रखाये हुए। चुपचाप बैठ रहे। गाड़ी चलती गई।

पहले के गये हुए आदमी ने राज ले लिया। यूसुफ़ उससे कहकर नहीं गये। बतलाने जा रहे थे। राज लेकर और यह कहकर, “आप फँसाए गये हैं अपने किसी दोस्त से, उन्होंने अपने नाम की जगह

आपका नाम लिखाया है और किसी मामले में फँस गये हैं; अगर आप हमारे पूछने का राज उन्हें न दीजिएगा, वे कहाँ गये थे, क्यों गये थे, किससे-किससे मिले थे, आगे का क्या इरादा है, उनसे दोस्त की हैसियत से मालूम करके हमें बतला दीजिएगा, तो बच जाइएगा, कुछ फ़ायदा भी होगा, वे कोई हों, एक आदमी हैं, अपने को पहले बचाएँगे, सरकारी आदमी खास तौर से आपको फँसा देंगे और खुद पर मारकर अलग हो जायँगे। याद रखिएगा। हम आपसे फिर मिलेंगे।” यह कहकर वह आदमी अलग हो गया। दूर चलकर खड़ा हुआ। बातचीत हो चुकी थी कि यह आदमी अगर उधर जायगा तो पीछा करने वाले, साथी दो घण्टे के अन्दर उस जगह पहुँच जायँगे। यह साथी दो घण्टे तक प्रतीक्षा करेगा। यह पढ़ा-लिखा मुसलमान था।

यूसुफ़ तालतल्ले पहुँचे। गाड़ी रोक़ी। दोनों साथी आधा दाम देकर उतर पड़े और सलाम-वालेकुम् करके चल दिये। तीसरा साथी प्रतीक्षा कर रहा था। तपाक से मिला। पूछा, “वह कहाँ है?”

“साथ आया है।” एक ने कहा।

राज मिल गया।”

“फँस जाया ग?”

“अब इसको कौन छोड़ता है?”

“यहाँ जड़ जमानी पड़ेगी?” एक ने पूछा।

“मानी बात है।” उस मुसलमान साथी ने कहा।

“गुंजाइश है?”

“बहुत।” पहले-वाले ने कहा।

“तुम्हारी किस्मत खुल गई।”

“मुमकिन, गहरी रकम हाथ आये।”

२१

“भाई नज़ीर” यूसुफ़ ने पुकारा।

नज़ीर बैठे थे। अभी ही फ़ुर्सत मिली थी। सोच रहे थे। कहने वाले आदमी की बात पक्की मालूम हो रही थी। घबराये भी थे। गरीब थे। यूसुफ़ की दोस्ती से फ़ायदा न हुआ था। कटने की ठान ली। आवाज़ पहचानकर उठे। दिल से नफ़रत थी, मगर मुस्कराहट से होंठ रंग लिये। थानेदार की निगाह से निगाह भी नीची रखी।

“अस्सलामवालेकुम्।”

“वालेकुम् अस्सलाम।”

“भाई, तुम्हारा नाम एक जगह लिखाया है।”

“किस जगह?”

“तुम पुलिस से राज़ लेने लगे।”

“क्या हमसे पूछा गया?”

“यह बातचीत तो पहले हो चुकी है।”

“इसका यह मतलब नहीं कि हम खुदा के लिए मुसलमान न रह जायें।”

“स दफ़े के लिए मान जाओ।”

“आप पूरा-पूरा हाल बयान कीजिए, वरना...”

“वरना?”

“हाँ।”

“वरना आप सरकार से बदला चुका लेंगे।”

“नहीं चुकवा लूँगा।”

“तुम तो बहुत बिगड़े।”

“बात भी कोई बनाई?”

“बात तो बनाई?”

‘ बातें बनाते हैं।’

“अच्छा तो जो जी में आये कर लो” कहकर थानेदार साहब ने नक्र ली ठहाका लगाया।

“मैं मज्जाकर नहीं कर रहा।”

थानेदार साहब गर्म पड़े। कहा, “ऐसा भी होगा कि हम तुम्हारा दिल देख रहे हों और अस्लियत कुछ हो ही नहीं।”

“मुमकिन।” नज़ीर के स्वर में निवेदन न था।

“अच्छा तो आखिरी बात। अगर आप नहीं माने तो आज ही आपका चालान करा दूँगा।”

नज़ीर घबराये। कहा, “हमारी बात और हमें मालूम भी न हो, क्या तमाशा है।”

“अच्छा तो आप तैयार रहिए।”

“आप भी तैयार रहिए।”

थानेदार घबराये। अज़ीजी से कहा, “पुलिस राज़ दे देती है तो

उसका बल घट जाता है। काम हासिल नहीं होता। आप मान जाइएगा तो वक्त पर मीठा फल खाने को मिलेगा। नहीं माने तो हाथ मलते रह जाइएगा।”

“पर हमें मालूम कर लेना है।”

यूसुफ हार गये। कहा, “हम एक जगह गये थे, कहाँ आपका नाम हमने लिखाया है।” फिर न बताया।

“कहाँ गये थे?”

यूसुफ ने एक दूसरी जगह का नाम बताया। कहाँ, “सरकारी काम था।”

“आप ऐसा कहते हैं तो हमारी छाती दूनी हो जाती है। फिर?”

“फिर और कुछ नहीं। यह याद रहे कि तुम्हारे मामू के तीन लड़के हैं, यह भी लिखाया है।”

“मेरे तो मामू ही नहीं। खुदा के फ़ज़ल से अब्बा जान के सालियाँ चार थीं, साला एक भी नहीं।”

“आपको हम बचाये हुए हैं, यह आप समझे या नहीं?”

“हाँ, यह तो है।”

“और आप नहीं गये, यह भी साबित है।”

“हाँ, यह भी।”

“आपको ज़िल्लत गवारा करनी पड़ी, इसका हमको अफ़सोस है।”

नज़ीर सर झुकाये खड़े रहे। यूसुफ़ गाड़ी खड़ी करके आये थे। उधर को चले। विचार में नज़ीर को सलाम करने की याद न रही। गाड़ी तै करके यूसुफ़ बैठे। गाड़ी चली। कुछ दूर पर एक एक दूसरी

गाड़ी किराये पर लो हुई खड़ी थी। कुछ फ़ासले से पीछे लगी वह भी चली।

यूसुफ़ के चले जाने पर नज़ीर के पास वही पहला आदमी गया। बुलाकर पूछा। नज़ीर ने दीन भाव से कहा कि यूसुफ़ की उनसे तना तनी हो गई है, उन्होंने बतलाया नहीं, जो कुछ कहा—यह वह करके, वह थानेदार हैं, उनसे जान-पहचान है, दूर के रिश्ते में आते हैं।

आगन्तुक न कहा—“आप हमारे आदमी हैं। इन्होंने आपको फँसा दिया है। हम आपको बचा लेंगे। कुछ रुपय भी देंगे। बाद को काम निकलने पर और मदद करेंगे। अभी आप एक चिट्ठी लिख दीजिए कि आपका यह नाम है, यह वलदियत, इतने मामू हैं, और इसके इतने लड़के—यह यह।”

नज़ीर ने, बात पक्की है, सोचा। ग़रीब थे। रुपये मिल रहे थे। दावात-क़लम लेकर कुल बातें सामने लिख दीं।

आगन्तुक ने उन्हें पच्चीस रुपये दिये। नज़ीर हर तरह से उसके आदमी बन गये। यूसुफ़ का पूरा-पूरा हाल आगन्तुक को मालूम हो गया—वह कहाँ रहते हैं, उनके वालिद क्या करते हैं, आजकल क्या रख है, किस कार्रवाई में लगे हैं।

आगन्तुक वहाँ से राजा की कोठी आया। उसके साथी भी आये। उन्होंने घर का पता और बाप का नाम मालूम कर लिया था। सामने के पान वाले ने बतलाया था, दोनों जगहों की बातें मिल गईं। लोग खुशी-खुशी टहलते रहे। अली को देखअली ने पूछताछ शुरू की। लोगों ने कहा, बर्दवान से आये हैं।

अली ने पूछा—“बर्दवान में सुदेशी का आन्दोलन कैसा है?”

“कौन सुदेशी?” एक ने पूछा।

“यही जो सरकार के खिलाफ़ बमबाजी हो रही है।”

“आप अख़बार तो पढ़ते होंगे?”

“हाँ, हमने कहा...”

दूसरे ने कहा, “बमवाले हैं।”

“कौन?” अली ने कहा—“हमारे साहबजादे थानेदार हैं।”

तीसरे ने कहा—“हमारे मामू के साले के ससुर इन्स्पेक्टर हैं।”

२२

प्रभाकर को जहाँ रक्खा है, उसी कोठी का पिछला हिस्सा है। दूसरी तरफ़ बुआ रहती थीं। प्रभाकर के दोमंजिले की छत, दूसरे छोर तक, बरगद और पीपल की डालों से छायादार है। भीतर, कोठों में, अँधेरा। इतना प्रकाश कि काम कुल हों। खुली तरफ़ खिड़की वाला बाग़। दूसरे किनारे मर्दों के लिए बड़ा जलाशय, गहरा, मछलियों की खान। किनारे नारियलों की क्रतार। दूसरी पर, आम, जामुन, कटहल, लीची, नारंगी, शहतूत, फ़ालसा, बादाम, रक्तचन्दन आदि के पेड़। कहीं-कहीं गुलचीनी. गन्धराज, अशोक, हींग, अनार, गुलाबजामुन, योजनगन्धा।

खुली, हवादार खिड़कियों के एक बग़ल पलंग बिछा है, मशहरी

लगी है। एक बड़ी मेज लगी है; काठ की; मगर अच्छी, कई कुर्सियाँ चारों ओर से रखी हैं। दो आलमारियाँ हैं जिनमें सामान, कपड़े और किताबें हैं। भीतर, दूसरी खमसार के रूप, बड़ा बैठक है। बत्ती से ही उजाला होता है। वहाँ प्रभाकर साथियों के साथ काम करता है। ब्रँठक की दूसरी दीवार अकेली है, बड़ी खिड़कियाँ लगी हैं, खोल दी जायँ तो गुप्त कार्य दिखें, लेकिन पेड़ों की घनी छाँह है। फिर भी काम चल जाय, दिये जलाने की दिक्कत न रहे, पर, डाल पर चढ़े अजनबी से दिख जाने की शंका, प्रभाकर खिड़कियाँ बन्द रखता है। जीने की तरफ़ के पहरे से, एक दूसरे आँगन के बरामदे से आने-जाने का रास्ता है। प्रभाकर के कमरे के छोर से तालाब को निकलने का एक बाहरी जीना है। पहले नीचे और ऊपर के दरवाजों में ताले पड़े रहते थे; लोहे के पात जड़े बाहर वाले और काठ के भीतर वाले में। यह उसका एकान्त रास्ता है। घिर जाने पर पहरेवाले जीने से उतरने का दूसरा रास्ता है, फिर कई तरफ़ फूटी दालानें, आँगन से आँगन को चलने वाली है।

वास निर्जन। निकलने और पैठने की राहें प्रभाकर देख चुका। सरोवर के दूसरी ओर मर्दाना बाग़ है, जिसमें तीन हज़ार पेड़। गढ़ की दीवार के दूसरी तरफ़ गाँव का रास्ता निर्जन। और भी राहें हैं। इससे वह एक रोज़ बाहर के लिए निकल चुका है। रासपुर, बड़ा गाँव, केन्द्र है, चर्खें और करघे का काम होता है, जनता और जुलाहों में प्रचार भी। सभी कमकरोँ का दिल बढ़ा हुआ। स्वदेशी-प्रचार के गीत गाते हुए। काम करते हुए। प्रभाकर का व्याख्यान हुआ। निरी-

क्षक-जैसे गये थे। बहुत-से दूसरे केन्द्र गये। फिर कलकत्ता चलने का बहाना बनाकर लौटे और रात को अपने प्रासाद-वास पर आये।

बंगाल और सारे देश में आन्दोलन की चर्चा है। सैकड़ों कर्मों प्रान्त में फैले हुए। संगठन और व्याख्यान और काम करते चले। विदेशी का बहिष्कार जोरों पर। जगह-जगह 'युगान्तर' की छिपकर बातें सुरेन्द्रनाथ और विपिनचन्द्र के व्याख्यानों की तारीफ़। अखबार रंगे हुए। वन्देमातरम का पहला समस्वर आकाश को चीरता हुआ। गीत; भिन्न कवियों-गायकों के भी संगठन, काम; दिन-रात काम; एक लगन।

प्रभाकर नहाने चला। सरोवर पर पक्के घाट हैं, लम्बान की दोनों पंक्तियों के बीचो-बीच दूसरा घाट निकट है। एकान्त रहता है। कोठी के पिछले छोर से दूसरी तरफ़ वाला घाट निकट पड़ता है। प्रभाकर उसीमें नहाता है। कोठी के सदर फाटक की बग़ल में सरोवर का राजघाट है। उसमें लोग आते-जाते हैं। दोनों घाटों के चारों ओर मौलसिरी के पेड़ लगे हैं और काफ़ी पुराने हो चुके हैं। बड़ी घनी छाया है। वैसे ही ठंढक भी।

प्रभाकर ने डुबकियाँ लगाकर स्नान किया। भीगे अँगोछे से बदन मला। हाथ-पैर रगड़े। कुल्ले किये। कुछ तैरा, कुछ खेला। इधर-उधर के दृश्य देखे, पानी से भीगी पलकों से कैसे दिखते हैं। फिर निकलकर धोती बदली, धोती धोई और निचोड़कर, गीली धोती और तौलिया लेकर चला।

खजाञ्ची खोदाबख्श, मुन्ना जटाशंकर के पेट में पानी था। तीनों ने बचत सोची। तीनों के हाथ में पकड़ है।

जटाशंकर से मिलने का वक्त आया। खजाञ्ची कलकत्ता और राजधानी एक किये हुए हैं।

दुपहर का समय। किरणों की जवानी है। हरियाली का निखार। मुन्ना कोठी की बगल वाले रास्ते से गुज़र रही है। रुपया रक्खा है, दूर से निगरानी रखती है। कई दफ़े वह अँधेरी कोठरी देखती है। सदर को तरफ़ वाले घाट की बगल से, किनारे-किनारे जो सड़क दूसरे घाट को जाती है, उसी पर टहलती हुई। प्रभाकर को दूसरे किनारे से कोठी की तरफ़ चलते, फिर कोठी के भीतर चले जाते देखा। पेड़ों की आड़ है और सिंहद्वार से दूर है। अन्दर-महलवाली दासी के लिए कोठी के दूसरे किनारे तक बढ़ जाना, अन्देशे के वक्त, स्वाभाविक है। उसकी प्रभाकर पर नज़र पड़ी कि तेज़ो आई। चौकन्नी हुई। अपने में पूछा। किसीको उधर से जाते नहीं देखा। वहाँ जीना है, नहीं मालूम। कभी गई नहीं। कोठी का उधर वाला हिस्सा नहीं दिखा। प्रभाकर को किनारे से भीतर जाते देखा।

खजाञ्ची अभी नहीं आया। आयेगा, कुछ ठहरकर चलेगी, राह पर मिलेगी। पूछना और काम लेना है। छिपी भी है, देखती भी है। यहाँ से सिंहद्वार और वह रास्ता नहीं देख पड़ता। अनुमान है, वक्त पर लौट पड़ेगी। सजग है—खजाञ्ची लौट न जाय।

खज़ाञ्ची बेचैन हैं। घटना घट चुकी। बीजक जमादार के हाथ पड़ा। परदा फाश हुआ। बँध गये। सरकारी आदमी की शरण ली। काम कर रखने की ठानी। एजाज़ से बातचीत करानी है। राज़ लेना है। निचले वर्ग की औरत से मदद चाहिए। मुन्ना आँख के सामने आई। सहारा मिला। आखिरी हिम्मत बाँधी कि इस जाल से छुट जायँ। सरकार की शिरकत के खयाल ने पाया जमाया।

जटाशंकर से मिलना आवश्यक है, खज़ाञ्ची यथासमय आये। खज़ाने की तिजोरियाँ खोलीं, बीजक देखे। जटाशंकर भी खड़े हुए देखते रहे। चपरासी के सन्दूक बन्द करने पर खज़ाञ्ची से जटाशंकर ने पूछा—“ठीक है?”

“ठीक है।” गम्भीर अप्रसन्नता से खज़ाञ्ची ने कहा। जटाशंकर सिपाही की गवाही तैयार कर रहे हैं। दोस्ती रही। लेकिन बीजक छिन गया है। बस नहीं। फँसे हैं। बचकर चले।

जमादार काम ले गये, खज़ाञ्ची से उतरते-उतरते न सहा गया। कहा—“जमादार, क्या यह गवाही अलग से पेश होगी?”

सिपाही समझ गया। पूछा—“कैसी गवाही?” बातें इधर-उधर सुन चुका था। खज़ाने की बातचीत ने जड़ जमा दी। खज़ाञ्ची के सामने सिपाही ने कहा, “मैं समझ गया।”

तेज़ पड़कर खज़ाञ्ची ने कहा—“नहीं सुना? हमने कहा, ठीक है।”

“बाद वाली बातें भी?” सिपाही ने फिर सवाल किया।

जमादार ने कहा—“हम सधे होते तो पूछते क्यों? सवाल मत करो।” मगर सिपाही का भूत न उतरा शंका-समाधानन हुआ। छुटकारा भी न था।

खज़ाञ्ची ने निकलते हुए धीरज दिया, सब लोग एक ही राह से गुज़रेंगे। जहाँ आपकी गवाही होगी? वहाँ हम भी होंगे।

सिपाही खड़ा रहा। जमादार और खज़ाञ्ची साथ निकले। रास्ते-रास्ते निकल गये। सिंहद्वार वाले घाट से कुछ फ़ासले पर एक कुंज में बातचीत करने लगे। मुन्ना ने देखा। छिपकर बातचीत सुनने के लिए, रास्ते के किनारे की मेंहदी की बेड़ों से बचती हुई पास पहुँची। खज़ाञ्ची से मिलने का मुकाम कुछ आगे है। जटाशंकर की नाड़ी छुट रही थी। पूछा, क्या खबर है?

खज़ाञ्ची ने कहा—“अभी दो रोज़ मत बोलो।”

“तब तो हमारी नौकरी चली जायगी।”

“तब और नहीं बचेगी। पहले की बातें भी हमसे बताओ।”

“आप यह बताइए कि आगे की कार्रवाई क्या होगी।” जटाशंकर ने पूछा।

मुन्ना समझ गई, इन दोनों का मेल मिल चुका है। कारण समझ में न आया। जमादार के रिपोर्ट करने के विचार से डरी। पर जमी बैठी रही।

“अभी कुछ नहीं कहा जा सकता, जमादार।” खज़ाञ्ची ने लाचार होकर कहा।

“अब हमारे मान की बात नहीं।”

“जमादार, सिर्फ़ इस कोठे का धान उस कोठे गया है। दबा जाओ।”

“दबा कहाँ से जायँ?”

जमादार रिपोर्ट न कर दे, इस डर से मुन्ना निकली। मिलने की ठानी। मेंहदी के किनारे से सड़क पर आ गई।

एकाएक उसके पहुँचने पर दोनों त्रस्त हुए। उसने कहा, सिपाही की ओर से मेरी गवाही होगी।

खजाञ्ची सकपका गया। जटाशंकर अपने बीजक की ढाल से तलवार झेल जाने को तैयार था। मुन्ना ने कहा, “मेरा हाल दोनों को मालूम है। हम तीनों का मिलना था। क्योंकि रानी जी हैं। रानी और राजा मिल गये। रुपया हमी लोगों में है, हमी लोगों का है। मिल्लत से चलना है, क्योंकि हमको बचना है। सिपाही को हम समझा लेंगे। क्या कहते हो जमादार?”

जमादार का बीजक-बल घट रहा था। चुपचाप खड़े थे।

मुन्ना ने सोचा, परदा फ़ाश हुआ तो बुरी हालत होगी, रिश्वत बे दी जायगी तो अभी मामला दबा रहेगा। कहा—“रानी जी जल्द आज-कल में रुपया देने वाली हैं। आप लोग रानी के तरफ़दार रहिए। यह काम इसीलिए किया गया है। राजा के कान में बात पड़ जायगी। तो बाँसों पानी चढ़ेगा। मामला बहुत बढ़ेगा। नौकरियाँ जायँगी। पुलिस के हाथ गया तो सज़ा की नौबत आयेगी। हमी लोग बँधेंगे। रानी और राजा को कुछ नहीं होगा। संगठन रहेगा तो मजे में चले चलेंगे क्या कहते हैं?”

“इससे अच्छी और कौन-सी बात है?”

जटाशंकर ने भी खजाञ्ची की बात दुहराई।

मुन्ना ने कहा—“जमादार, अब तुम चलो, उस सिपाही से मैं बात चीत कर लूँगी। यह बात हम तीनों की रही। रानी साहबा से तुम मिल नहीं सकते।”

ज मादार चलने को न हुए, फिर कुछ कहना चाहा, मुन्ना ने बीच में खुलकर कहा—“अब चलो जल्द, यह मालूम नहीं—ये रानी साहबा के क्या हैं और होंगे ?”

जटाशंकर चले। रास्ते पर सोचा—“राजा को बीजक लेकर न दिखायें। पहले का हाल कहना होगा; नहीं मालूम, मामला पलटा खाय। जाने दिया जाय।”

२४

खजाञ्ची और मुन्ना पीपल के पास गये। खजाञ्ची ने गम्भीर ढींकर कहा—“जब कि हमने काम कर दिया है, एक काम हमारा तुम कर दो या रकम वापस करो। अब बात दो की नहीं रही।”

मुन्ना—“कौन-सा काम है ?”

“पहले हम बता दें, तुम्हारा-हमारा फ़ायदा कहाँ है। हमको नहीं मालूम, रुपयों का तुमने क्या किया। यह बता सकते हैं कि जिनकी वजह इतना रुपया निकाल सकती हो, उनसे सरकार बड़ी है, वहाँ से और फ़ायदा उठा सकती हो। अगर हमारी बात पर न आई, तो मज-बूरन् यह राज सरकारी आदमी को देना होगा। नहीं तो बचत नहीं। जिसके पास रुपया है, चोर साबित होगा। सरकार आसानी से पता लगा लेगी, रुपया रानी के पास है या नहीं। अगर न निकला तो तुम्हारा क्या हाल होगा, समझ लो। इस मामले को लेकर सरकार के पास हमारे जाने के यही माने होते हैं कि हमारा कुसूर नहीं, ताली चुराई गई।”

“यह कौन कहता है कि नहीं चुराई गई, कहो मैं भी कहूँ, हाँ; लेकिन मैंने चुराई, यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ? कैसे कहोगे, फलाँ ने चुराई? सुनो तिजोड़ी के फिरसे खुलने का सुबूत गुज़र चुका है। इतने उड़ाके न बनो। तुम नप चुके। मेरी के मानी, रानी की पकड़ है, और तुम्हारी—बचत के लिए सरकार की। क्या रानी अपना सत्यानाश करा लेंगी? तुमसे पहले यहाँ दोगी। यहीं रहना है। इस आग से सारा खानदान जल जायगा। फिर, माने रहने पर, वह हासिल हो सकता है। रुपये ख़ैर मिलेंगे ही। काम भी सँवार दिया जा सकता है।”

“यह सही है, पर तुम्हारी भी पैठ होगी, और ऐसी जो हमसे नहीं हो सकती। सरकार की तरफ़ से उधर की बातें तुम्हीं से ली जायँगी। तुम्हारे सीधे तअल्लुकात होंगे। सिर्फ़ यह कि यह काम हमसे सुनकर तुम्हें करना है, फिर हम सरकार के आदमी से तुम्हारा हाल कहेंगे: वहाँ का कोई तुमसे पूछेगा। सम्बन्ध हो जायगा।”

“इस तरह सम्बन्ध नहीं होता। वह कौन सा काम है?”

“एजाज़ से कुछ पूछना है।”

“हाँ!”

“हमारा फ़ायदा है। यह तुम्हारी समझ में आ जाय तो गुल खिल जाय। तुमसे तुम्हारे आदमी उठेंगे। तुम्हें यहाँ से कहाँ तक बढ़ना है। ज़मींदार तुम्हारे-हमारे आदमी नहीं। हम मुसलमान पहले ऐसे थे जैसे अंगरेज़। अब रैय्यत की रैय्यत हैं। माली हालत हमारी-तुम्हारी एक है। सरकार बंगाल के दो टुकड़े कर रही है। इससे तुमको और हमको फ़ायदा होगा यहाँ—ज़मींदार की जड़ हिलेगी, यानी

रैय्यत को फायदा होगा। इस काम में सरकार की मदद करनी है।”

मुन्ना पर असर पड़ा। जिससे जाति भर का भला हो वह काम सरकार ही कर सकती है। जाति-प्रथा की सताई मुन्ना का कलेजा डोला। ज़ब्त किए खड़ी रही, चपल अपढ़ औरत। फँसकर कहाँ तक बहती है, देखने की उमंग आई। पूछा—“एजाज़ से क्या पूछना है?”

“एजाज़ से आज-कल में मिलकर पूछ लो, क्या हालात हैं? लौटकर जवाब दे जाओ।”

मुन्ना सहमत हुई। खज़ाञ्ची मन में सोचता हुआ बढ़ा कि रुपये रानी को दिए गये या नहीं।

२५

डाल के सैकड़ों हाथों ने मुन्ना पर फल रक्खे। चली जा रही थी, पराग झरे, भौरे गूँजे। तरह-तरह की चिड़ियों की सुरीली चहक सुन पड़ी। दुपहर के सन्नाटे के साथ मौसम की मिठास। फिर प्रभाकर याद आया। दूर से घुसते देखा है। कोठी में रहता है। कौन है? मुन्ना धीरे-धीरे वहीं चली। कोठी की बगल से जाने वाला रास्ता सुनसान रहता है। अदामी इक्के-दुक्के। मुन्ना जीने के पास खड़ी हुई। जहाँ से आये थे वहाँ के लिए अनुमान किया, और घाट की तरफ चली नज़र उठाकर इस हिस्से की बनावट देखती हुई। बुआवाले बाग के सामने दोमंज़िला है। निकलने का दूसरा जीना है। बाग में जाने का

जीना नहीं। उसी राह जाना पड़ता है। नीचे वाली मंजिल में पुरानी चौबों कुपल में रक्खी हैं। कोई राह नहीं। एक अँधरी कोठरी है, एक तरफ़ का दरवाज़ा टूटा है। उसको बाग़ का हिस्सा समझ सकते हैं। तालाब के किनारे की कोठी उसने नहीं देखी; यों बहुत-सा हिस्सा नहीं देखा। बागीचे की तरफ़ खुले कमरों को देखकर लौटी। उसको जान पड़ा, सुनसान दिखता है। रहने की आहट नहीं मिलती।

रहस्य से मुस्कराकर सिंहद्वार लौटी। जमादार बैठे थे। मुन्ना को सुनाकर कहा—“देखो, रघुनथ जी की क्या इच्छा है।”

“हम अभी आते हैं।” मुन्ना ने कहा—“बस, आज रानी जी का बदला चुका लिया जाय।”

“कैसे ?” षड़यन्त्र वाले की आवाज़ से पूछा।

“अभी आती हूँ : उसको चाहते तो नही ?”

जमादार सन्न हो गये। मुन्ना ने ज़रा रुककर पूछा, “हम हों या वह ?”

“तुमको कौन पाता है ? तुम्हारी चल रही है।”

“फिर उसकी तरफ़ लपकना मत।”

“अच्छा, चली आ।”

“मुन्ना घूमी। सिपाही भगता नहीं, जीत की जगह है लेता ह हमारी हो, तो अपनी गरदन नपाये देते हैं।” डचोड़ी की ओट में खड़े जटाशंकर ने कहा।

प्रेम की आँखों मुन्ना ने देखा।

हम राह देख रहे थे। बता दो, कितने की चोरी हुई ?”

“पाँच लाख की।”

“गलत है।”

मुन्ना ने जटाशंकर को देखा। जटाशंकर हाथ पकड़कर कागजात के कमरे में ले गये। देर तक बातचीत की। हाल समझकर रुपये बताकर बीजक दे दिया। दोनों के गहरे सम्बन्ध हो गये।

२६

मुन्ना की निगाह नीली हो गई, चाल ढीली। चलकर महलवाले भीतरी तालाब में अच्छी तरह स्नान किया। गिली धोती से निकलकर बुआ के कमरे में गई। एक बज चुका था। चुन्नी फर्श पर चटाई बिछाकर दुपहर की नींद ले रही थी। मुन्ना की थाली चूल्हे पर रक्खी हुई। भोजन करके चटाई बिछाकर लेटी। आँख लग गई।

जब उठी, चुन्नी काम कर रही थी। बुआ लेती हुई थीं। बगल की दूसरी कोठरी में मौसी बैठी हुई खाने का मसाला तैयार कर रही थीं ?

मुन्ना, कुछ नोट ले आई। बरामदे पर गिने। दस और पाँच रुपये के पहचानती थी। ये थोड़े थे। जटाशंकर को एकान्त में बुला ले गई और कहा—“आज ही सिपाही इकट्ठे कर लेने हैं, बाजार चले जाओ, पुलिस के साफ़े वाला कपड़ा खरीद लो। सबको सिपाहियों की तरह पेश करना है कि बाहर के पहरे वाले न पहचान पायें। पहले रानी का बदला। राजा से एक जवाब तलब करा लूँ, फिर खजान्ची की खबर लूँ।”

“उससे क्यों तन गई ?”

“कट गया। फिर फाँसा। मैं फँसी। इसका काम करना है। मगर अकेली रही तो इसको अपने रास्ते न ला पाऊँगी। तुम्हारी मदद पार कर सकती है। तुम हमारा हाथ न छोड़ो, तुमसे दिल टूट चुका था। मगर तुमने, डराकर भी बाँध लिया। इस मामले में हम अकेले थे, अब दो-दो हैं। भेद किसी दिन खुलेगा, तब तक बच निकलना है, या पुस्ता सूरत निकाल लेनी है। तुम हमसे मिले, खजाञ्ची से भी, हमारा खजाञ्ची का यही हाल। हम एक दूसरे को फाँसना भी चाहते हैं। खजाञ्ची सरकार की मदद लेगा।”

“पहले हमको भेद बतला दिया होगा ?”

“तो न उधर का फँसना होता, न इधर का।”

“अब तो सारा संसार फँस गया।”

“नहीं तो मतलब नहीं गठ रहा था।”

“रूपये रानी जी के पास नहीं, यह टेढ़ा है।”

“टेढ़ा हो, सीधा, बचत न थी अगर तुम बीजक रख लेते।”

“कहो, बचत के लिए दे दिया।”

“नहीं, मर्दानगी के लिए।”

२७

मुष्ठा बुआ के पास गई। बुलाकर बाग ले गई। सूरज नहीं डूबा। पेड़ों पर सुनहली किरणों का राज है। तेज्र हवा बह रही है।

बुआ का शानदार आंचल उड़ रहा है। मुन्ना सिपाही या फ़ौजी हिन्दु-स्तानी औरत की तरह दोनों खूँट कमर में खोंसे हुए है। अनन्नास के झाड़ की बगल में मौलसिरी का बड़ा पेड़ है, तने के चारों ओर कमर भर ऊँचा पक्का गोल चबूतरा बँधा हुआ है। दाईं ओर कुछ दूर तालाब, पीछे और बाईं ओर ऊँची चारदीवार, सामने कोठी; वही जगह जहाँ प्रभाकर रहता है। मुन्ना देर तक बैठी हुई बरामदे पर आँख गड़ाये हुए बुआ को फूल-पत्तियों की बातचीत में बहलाने पर प्रभाकर के बरामदे पर एक चिड़िया न दिखी। बुआ से उसने कहा, “कैसा समय है?”

“बहुत अच्छा?”

“क्या चाहता है जी?”

“बहुत कुछ।”

“सबसे पहले क्या?”

“हमको लाज लगती है। हमरा जी कुछ नहीं चाहता। जब भाग फूट गया, तब चाह कैसी?”

“यह तो हमारे लिए भी है। लेकिन न जाने क्यों, चाहना पड़ा, भाग को जगाना पड़ा।”

बुआ का ब्राह्मणत्व जोर मारने को था, मगर सँभल गई। कहा—
“जैसा कहा जाता है, वैसा करती ही हूँ।”

“हमको रानी जी की हैसियत से कहना पड़ता है। तुम यह समझ चुकीं कि पीछा नहीं छूटता। तुमको ऐसा करना चाहिए कि पीछा छुड़ा कर मर्द भगे।”

“अच्छा नहीं जान पड़ता। परमात्मा के घर जाना है। जी को बेपरदगी पसन्द नहीं। लाज बड़ी चीज है। दूसरा जबर्दस्ती खोलता है तो बचाव की जगह रहती है।”

“तुमने दिल दे दिया। यह दिल मर्द को न दो। लेने लगोगी तो मालूम होगा कि वह तुम्हारा नहीं। या तो वह तुम पश्च है या तुम उस पर। आज तक मर्द को ही तुमने अपने ऊपर पाया होगा। अब उल्टा नज़र आयेगा। बचत की और जगह मिलेगी। मर्द झुका रहेगा।”

बुआ को बल मिला। पूछा—“क्या मर्द के पीछे लगना होगा?”

“हाँ, और वह इतना बड़ा मर्द है कि यहाँ उससे बड़ा मर्द नहीं।”

“वह कौन है?”

“वह राजा है। वही यह अपमान कराता है। आज तुमको रानी का सम्मान दिया जायगा। साथ सिपाही रहेंगे। यह न समझना कि तुम रानी नहीं, बुआ हो। कभी यह न जाहिर करना कि किसी मतलब से तुम गई हो। तुम्हारे साथ सब पुलिस के सिपाही रहेंगे। खूब याद रहे, कहना, मैं रानी। तुमको कोई पहचान न पायेगा। मैं साथ रहूँगी, लेकिन दूर। जो सिपाही बहुत पास रहेगा, उसको अपना जिगरी मत समझना।”

“हमको डर लगता है।”

“हम कई आदमी साथ रहेंगे। डर को कोई बात नहीं। कहो, क्या कहोगी।”

“मैं रानी।”

“हाँ।”

सन्ध्या की छाया पड़ने लगी। मुन्ना ने बरामदे की तरफ देखा, कोई नहीं देख पड़ा। बुआ को साथ लेकर लौटी। हवा और सुहानी हो गई। बुआ को पहले शंका थी, मगर हृदय के कपाट जैसे खुल गये; जान पड़ा, संसार में धर्म का रहस्य कुछ नहीं—सब ढोंग है।”

बुआ को टहलने के लिए छत पर छोड़कर मुन्ना सिपाही के पास गई और उस तरफ जाने के लिए कहा।

सिपाही ने कहा—“वह देख, बरामदे का दरवाजा बन्द है। वहाँ, माल की निगरानी करने वाला जाता है।”

“वहाँ कोई रहता नहीं?”

“नहीं।”

“तुमको और कुछ मालूम हुआ?”

“हाँ, जमादार ने सब को हाज़िर रहने के लिए कहा है, और यह खबर है कि रानी जी ने इनाम भेजा है, सब सिपाही इस कोठी के आ जायेंगे, तब दिया जायगा।”

२८

रात आठ का समय होगा। प्रमोद वाले कमरे में राजा साहब बैठे हैं। कुल दरवाजे और झरोखे खुले हैं बड़े-बड़े। सनलाइट का प्रकाश। तेजी से, लेकिन बड़ी सुहानी होकर हवा आती हुई। दूर तक सरोवर और आकाश दिखता हुआ। सरोवर में बत्तियों की जोत वाले

कमल बिम्बित। कहीं-कहीं हवा से होता लहरों का नाच दिखता हुआ। चारों ओर साहित्य, संगीत, कला और सौन्दर्य का जादू। साजिन्दे बैठे हैं। कान के बाहर से साज चढ़ाकर बजाने की आँख देख रहे हैं। बेबसी से बचने की उम्मीद भी है। प्याले चल चुके हैं। फ़र्श पर बिछी ऊँची गद्दी पर एजाज़ और राजा बैठे हैं। एक बग़ल प्रभाकर है। नीचे क़ालीन बिछी चदर पर साजिन्दे।

राजा साहब ने एजाज़ से पूछा, एजाज़ ने सम्मति दी। साजिन्दों ने अपने-अपने साज़ पर हाथ रक्खा। एजाज़ ने गाया—

“ज़ाहिद, शराबेनाज से जब तक बज़ू न हो,
क़ाबिल नमाज पढ़ने के मसजिद में तू न हो।
पहलू से दिल जुदा हो तो कुछ ग़म नहीं मुझे,
ऐ दर्देदिल जुदा मेरे पहलू से तू न हो।
वह गुमशुदा हूँ मैं कि अगर चाहूँ देखना,
आइना में भी शकल मेरी रूबरू न हो।
शाखें उसीकी हैं यही जड़ है फ़साद की,
पहलू में दिल न हो तो कोई आरजू न हो।
मसजिद में मैंने शेख को छोड़ा यह कहके आज
मय लाऊँ मैकदे से जो आबेवज़ू न हो।
सारी दमक-चमक तो इन्हीं मोतियों से है,
आँसू न हो तो इश्क़ में कुछ आबरू न हो।

फिर गाया—

“बाजी कहूँ बैरन, बिखभरी सवत बाँसुरी

अधर-मधुर ध्वनि नेक सुरन सों
 कूक कूक तड़पाय, सखी री, वाकी
 गाँस फाँस जिय हूक। छन आँगन, छन
 चढ़त अटा पर, कर मल मल
 पछितात सेज पर,
 बैरन सवत सताये चाँद,
 रह-रहके तान नई फूँक।”

ठुमरी का रंग जमा। राजा साहब ने प्रभाकर से गानेका अनुरोध किया। प्रभाकर ने गाया—

“प्रथम मान ओंकार।
 देव मान महादेव,
 विद्या मान सरस्वती
 नदी मान गंगा।
 गीत तो संगीत मान,
 संगीत के अक्षर मान,
 बाद मान मृदंग,
 निरतय मान रम्भा।
 कहें मियाँ तानसेन,
 सुनो हो गोपाल लाल,
 दिन को इक सूरज मान,
 रैन मान चन्दा।”

प्रभाकर के गाने के भाप पर तूफ़ान उठा। एजाज की गायिका

हिली। स्वदेशी आन्दोलन में आज को धनिक और श्रमिक की जैसी समस्या न थी; पर आन्दोलन को असफल करने के लिए यह समस्या लगाई गई थी। प्रभाकर विचार करता था तबतक साहित्य द्वारा रूस के जन-आन्दोलन की खबरें आने लगी थीं। ज़मींदार मुसलमान स्वदेशी के तरफ़दार थे; इसलिए मुसलमान रैय्यत बहुत बिगाड़ नहीं खड़ा कर सकी। पुराणों का राज्य समाज में तब और प्रबल था, बादशाहत का लहजा नहीं बिगड़ा था। प्रभाकर सोचता हुआ बैठा रहा। गाने की तरंग उठकर जैसे निकल गई। एजाज़ उसकी गम्भीर मुद्रा से प्रभावित हुई। राजा साहब भी खामोश बैठे रहे। देशप्रेम जुआ था। रौशनी, पश्चिम का बानिज। स्वामी विवेकानन्द की वाणी लोगों में वह जीवनी ले आई, खास तौर से युवकों में, जिससे आदर्श के पीछे आदमी जगकर लगता है। प्रभाकर राजनीति में इसी का प्रतीक था। धैर्य से बैठा रहा।

इशारा पाकर साज़िन्दे चले। प्रभाकर उठने को था कि दिलावर भीतर आया; राजा साहब के कान में कान लगाया। खबर राजनीतिक है। राजा साहब ने प्रभाकर के सामने पेश करने के लिए कहा। दिलावर उछल पड़ा। कलकत्तावाले सुबूत दिलायें:—वह कागज़, नज़ीर के नाम से यूसुफ़ का आकर ठहरना, बातचीत करना, होटल में गलत नाम लिखाना।

एजाज़ ने हुलिया पूछा। आदमियों ने बताया। एजाज़ खामोश हो गई।

प्रभाकर आगह-धैर्य से सुनता रहा। राजा साहब ने धन्यवाद देकर

सबको बिदा किया। इनाम की घोषणा की।

राजा राजेन्द्रप्रताप ने प्रभाकर से पूछा—“आपका क्या अन्दाज़ है?”

“चर है, सरकारी।”

“अब हमको एक छन की देर नहीं करनी। कलकत्ता रवाना हो जाना है। बँध गया। हमारे पास भी मसाला है। यह वही आदमी है।” एजाज़ ने कहा।

“लिखा प्रमाण हमको दीजिए।” प्रभाकर ने कहा।

राजा साहब ने कहा—“नहीं, हमीं रक्खेंगे बैरिस्टर साहब से सलाह लेंगे, इस तरह आपका भी हाथ हो गया।”

“तो हमें भी आपके साथ या कुछ पीछे, या दूसरे रास्ते से चलना चाहिए।”

आप परसों या और दो रोज़ बाद आइए।

प्रभाकर शान्त भाव से उठा और कहा—“अच्छा, तो आज्ञा दीजिए।”

राजा साहब ने नमस्कार किया।

२९

मुन्ना ने देखा, दस बज गये। सिपाहियों को २०) २०), रुपये इनाम दिया था। बाज़ार से कपड़ा आ गया था। टुकड़े काटकर साफे बना लिये। रानी के अपमान का प्रभाव सब पर है। सब चाहते हैं, राजा ऐसा न करें कि उनके रहते एजाज़ को रक्खें।

डंडे सबके हाथ में, पुलिसवाले नहीं, मिर्जापुरी। चमरौधे की नोक देखते, सिंहद्वार की बत्ती के इधर-उधर टहल रहे हैं।

रुस्तम को सिखा दिया। चलने और पहुँचने का रास्ता और समय मकरंर कर दिया। पहरे की दो तलवारें निकलवा लीं। रुस्तम को दीं। एक बुआ के बाँधकर ले चलने के लिए, एक खुद बाँधे रहने के लिए। एकान्त में दो घण्टे तक रहना है कहकर ध्वनि में समझा दिया, और विश्वास बँधा दिया कि बुआ को उसने समझा दिया है।

बुआ उसकी बात पर आ चुकी थीं, एक सत्य, एक न-जाना दबाव एक तड़प थी जिससे उनके पैर उठे। ढाढस बँधा, मुन्ना मिलेगी। कुछ बिगड़ने न पायेगा, अगर वे खुद न बिगाड़ बैठें।

बुआ को सबसे पहले मुन्ना ने खिड़की से निकाला। सिपाहियों को यह बात नहीं मालूम। रुस्तम कोठी की खिड़की की दूसरी तरफ़ खड़ा राह देख रहा था। दोनों कन्धों पर पेटी से बँधी म्यान के साथ दो तलवारें लिये था। मुन्ना ने बुआ को रुस्तम के हवाले किया और लौटी। मन में ब्राह्मणों के सत्यानाश का दरवाजा खोला।

बुआ शरमाई। मुन्ना को देखकर एक दफ़े जैसे बल खा गई। सँभल कर निगाह बदली और रुस्तम के साथ चल दीं।

मुन्ना मुस्कराई। जमादार के पास आई। सिपाहियों को मिठाई और पूरी और दस-दस बीड़े पान बाँध लेने के लिए बाज़ार भेजा। दो घंटे का वक्त निकाला। जमादार को एकान्त में लेकर बातचीत करने लगेगी।

रुस्तम बुआ को लेकर चला। रात के दस के बाद का समय। गड़ सुनसान। मर्दाना बाग से चला। बुआ को शंका हुई। फिर मिट गई।

“देखती हो दो तलवारें हैं?” रुस्तम ने प्रेमी गले से पूछा।

“हाँ,” शरमाकर बुआ ने कहा।

“एक तुमको बाँधनी है।”

“हाँ?”

“बाँधना आता है?”

“नहीं।”

“हमी बाँधेंगे। सुना है?”

“हाँ।”

“इसका मतलब समझ में आया?”

बुआ लजा गई। सामने आमों के पेड़ थे। रुस्तम बढ़ा। एक की झुकी डाल पर दोनों तलवारें टाँग दीं।

“यहाँ सिर्फ हम हैं और तुम।”

बुआ शरमाई। रुस्तम का पुरुष पूरी शक्ति पर था। कहा—“उस रोज नहाकर तुम जैसी निकलीं, वैसा ही हो जाना है।”

बुआ का हाथ रुका। जी ऊबा।

रुस्तम ने पूछा—“तालाब में और लोग थे, वे क्यों थे?”

“हमको नहीं मालूम।”

आवाज़ से रुस्तम समझ गया कि जमादार का कहना दुरुस्त; वे फँसाये गये, अपनी तबियत से नहीं गये।

घबराया कि इसका धर्म बिगाड़ा तो बुरा हाल न हो; फिर सोचा मुन्ना का इशारा कुछ ऐसा ही है।

कहा—“हम वे हैं जिनके बहुत-सी बीबियाँ होती हैं?”

“यह हमारे यहाँ नहीं?”

“तुमको आज हमारी बीबी बनना होगा।”

“मैं बीबी नहीं बनती।”

“तुमने उससे कुछ कहा, उसकी बात मानी?”

“ज़बरदस्ती कहलाने से कोई कहना है या मानना।”

‘लेकिन हमारे साथ के लिए तुम बात हार चुकी हो।’

“मैं बात नहीं हारी।”

“यह तलवार कैसे बाँधी जायगी? कमर नापनी पड़ेगी या नहीं? इससे कुछ समझ में नहीं आया? राजे से बातचीत हँसी-खेल है? हम बशाल में रहेंगे, इससे तुमको इशारा कर दिया गया, तुम्हारी मंजूरी ले ली गई, इतनी दूर तुम निकलकर आ गई। यहाँ हम पकड़ जायँगे, तो कोई क्या कहेगा? ये दोनों इतनी रात को यहाँ क्या करते थे, क्यों आये थे, इनका आपस में क्या रिश्ता है? हम तभी बच सकते हैं जम मियाँ-बीबी—तुम रानी, हम राजा। वहाँ तुमसे क्या कहलाया जाना है?”

बुआ झेपीं, मगर यह झेप मंजूरी नहीं।

“हम तुम्हारी कमर नापें?”

“हे भगवान् !” बुआ अन्तरात्मा से रोई।

“कौन हो तुम ?” हस्तम के पास पहुँचकर किसी ने पूछा। भरी आवाज।

हस्तम डाल की ओर बढ़ा और मूठ पकड़कर तलवार निकाल ली।—“सुअर, कौन है तू ?” पूछा—

तलवार के निकलते ही पिस्तौल की आवाज हुई, मगर आदमी के निशाने पर नहीं; मर्द का गला गरजा—“भग यहाँ से, या रख तलवार, नहीं तो खाता है गोली।”

हस्तम भगा। बागीचे में पहले का जैसा सन्नाटा छा गया।

प्रभाकर डेरे पर आ रहा था। यही उसका रास्ता था। आते हुए देखा। बुआ से पूछा,—“आप कौन हैं ?”

घबराहट के मारे बुआ का बोल बन्द हो गया, प्रभाकर खड़ा रहा। धैर्य देकर पूछा,—“आप कौन हैं ?”

“हम बुआ।” लड़की के स्वर से, रक्षा पाने के लिए, बुआ ने कहा।

देर अनुचित है सोचकर प्रभाकर ने कहा,—“बचना है तो हमारे साथ आइए।”

“यह तलवार ले लो।”

तलवार एक और है, समझकर प्रभाकर चौंका। कुछ समझ में न आया। कहा,—“हमारी निगाह में अब तलवार का जमाना नहीं रहा। जिनकी तलवार होगी. वे ले लेंगे। यहाँ इस आदमी के अलावा और कोई था ?”

“और कोई नहीं?”

“यह कहाँ से तुमको ले आया?”

“मुन्ना ने इसके साथ कर दिया था और बहुत से काम करने के लिए कहे थे।”

“किसके खिलाफ?”

“राजा के।”

“आदमी किनके?”

“राजा के।”

“तरफ़दारी किनकी?”

“रानी की।”

“अच्छा” प्रभाकर मुस्कराया।

“आपको रहना मंज़ूर है या हमारे साथ चलना?”

“हम एक छन इस नरकपुरी में नहीं रहना चाहते।”

“हमारे साथ आइए।”

प्रभाकर बढ़ा। बुआ पीछे हो लीं। तालाब के किनारे बुआ को खड़ा किया। दो-एक सवाल और पूछे। समझ की निगाह उठाई और अपने जीने की ओर चला।

कोठी पर कमरे में गया। दो साथियों को बुलाया। कहा,—‘बाहर एक औरत है। ललित, उसको लेकर बेलपुर जाओ। हम दो-तीन दिन में आते हैं। महाराजिन बताना। भेद न देना। बाहर वालों से मिलाना मत। काम किये-कराये जाना। इसको भी लगाये रहना। मामला रंग पकड़ रहा है। यहाँ से आजकल में बोरिया-बधना समेटना है।

प्रकाश ताली लगाकर चले आयेंगे। गढ़ की चारदीवार में बहुत से दरवाजे हैं। हमारे की ताली दूसरे के पास भी है या नहीं, सही-सही नहीं मालूम।”

साथियों को लेकर प्रभाकर नीचे उतरा। चिन्ता की हल्की रेखा मन पर। बुआ के पास पहुँचकर कहा,—“इस आदमी के साथ चली जाओ, यह जैसा कहे करो। कोई हाथ नहीं उठाएगा। बाद को जहाँ कहिएगा पहुँचा देगा।” बुआ को जान पड़ा, एक अपना आदमी, जिसको औरत अपना आदमी कह सकती है, बोला। वे सहमत हुईं।

प्रकाश ताली लेकर चला।

३१

रुस्तम के जैसे पर लग गये ऐसा भगा। फँर से दिल धड़का, पैर उठते गये। खेत से भगे सिपाही की तरह सिंहद्वार में घुसा। बात रही, हथियार नहीं डाला। हाँफ रहा था। जैसे दम निकल रहा है। ३-४ सिपाही बाजार गये थे, बाकी हैं। मुन्ना भी है।

रुस्तम को देखकर लोग चकराये। मुन्ना की आँख चढ़ गई। पूछा, “क्या है रुस्तम?”

रुस्तम बोल न पाया।

रुस्तम के घबराये हुए हाँफते रहने पर सिपाहियों को उतना आश्चर्य न हुआ जितना तलवार लिये रहने पर।

जटाशंकर का काठ में पैर पड़ा। घीरज उनके स्वभाव में है बैठे देखते रहे।

रुस्तम ने आधा घन्टा लिया। मुँह धोया गया, कुल्ले कराये गये, सर पर पानी के छीटे मारे गये, पंखा झला गया।

रुस्तम ने कहा,—“देव है। आदमी ऐसा नहीं होता। गढ़ के अन्दर ऐसा आदमी !”

लोग कुछ नहीं समझे। ऐसे आदमी के बारे में किसीसे नहीं सुना, नहीं देखा।

मुन्ना ने कहा,—“हम पूछकर बताते हैं।” रुस्तम को बुलाकर ले चली।

एकान्त में पूछा,—“क्या हुआ ?”

रुस्तम ने कहा,—“एक आदमी मिला। मैं भगा, नहीं तो गोली का शिकार हो गया होता।”

मुन्ना को नहाकर लौटी सूरत याद आई। पूछा,—“कैसा है ?”

रुस्तम ने एक बाबू का हुलिया बतलाया।

“बुआ का क्या हुआ ?”

“हमको उसीकी कार्रवाई मालूम होती है।”

मुन्ना को विश्वास हो गया।

ठहरकर पूछा,—“बुआ क्या उस आदमी के साथ रह गई ?”

“हाँ”, रुस्तम ने कहा।

मुन्ना ने तीन सिपाही लिये। रुस्तम से घटनास्थल ले चलने के लिए कहा।

लोग चले। जहाँ घटना हुई थी वहाँ अँधेरा है। रुस्तम ने ढाल देखी। दो म्यान और एक तलवार लटक रही है। बुआ का निशान नहीं।

मुन्ना तुरन्त घूमि। जहाँ प्रभाकर का जीना है चली। आदमी भी साथ।

तब तक प्रकाश ताली लगाकर लौट चुका था। लोगों ने जीने के दरवाजे सिपाही की हैसियत से आवाजें लगाईं। कोई न बोला।

कोठी घूमकर मालखाने के पहरे से जाना चाहा, दरवाजे बन्द मिले। खुलते ही नहीं।

एक दफ़े पुलिस की याद आई। खजाञ्ची बैठा न रहेगा, सोचा। राजा से रानी के बदले की बात गई, बल जाता रहा।

रुपये निकालने गईं। पाँच रुपये और दस रुपये के नोटों के बन्डल दो-दो करके निकाल सके, इस तरह रक्खे थे। एक हज़ार के करीब नोट निकाले और ५०) ५०) रुपये सिपाहियों को और दिये। बाकी जमादार को।

नोटोंवाली तिजोड़ी बाहर गड़वा दी।

३२

घटना क्या, अनहोनी हो गई। मुन्ना को खजाञ्ची का डर था। जमादार भी बचत चाहते थे। इसीसे उलझते गये। बेधड़क बढ़े।

फँसे सिपाहियों ने रानी का पल्ला पकड़ा। निगाह धर्म पर थी। तिजोड़ी के गाड़े जाने पर सिपाहियों की नसें ढीली पड़ीं। एक ने डूबते स्वर से कहा, रानी से राजा का सितारा बुलन्द है। मुन्ना ने कहा, गई, चलते ठोकर लगी, ईंट दूसरे की रक्खी है, वह रानी का ही आदमी है, नादानी कर रहा है; न इधर का होगा न उधर का। मुमकिन, बदला चुकाने की रानी ने दूसरा हथियार चलाया हो। धीरज छोड़ने की बात नहीं; कल-परसों तक आज का अँधेरा न रहेगा। अगर कहो कि इसके लिये सजा होगी, तो काँटा न लगेगा। सब लोग बाल-बाल बच जायेंगे। रुपये भी मिलेंगे। अभी साँस काफ़ी है।

सिपाही खुश हो गये। सबको अपनी-अपनी जगह जाने के लिए मुन्ना ने कहा। कहा,—“रानी का हाल मालूम हो तो जी में जी आये। यह कहकर रात-ही-रात नई कोठी की तरफ़ चली।

जहाँ दासियाँ सोती हैं, वहीं घुसकर, एक बगल लेट रही। नींद नहीं आई। दूसरे को बहलाने से अपना जी नहीं मानता। तरह-तरह की उधेड़-बुन से रात कटी। पौ फटी कि उठकर बुआ के महल के लिए चली। नई कोठी में शोर था कि सूरज की किरन के साथ जहाज़ खुल जायगा। जागीरदार साहब कलकत्ता रवाना हो रहे हैं। मुन्ना ने एक कहार को तैनात किया कि जागीरदार साहब के साथ कौन-कौन जाता है, देख आये, रानी जी का हुक्म है।

कहार मुस्कराया, कहा—“वे तो जायेंगी ही।”

“कौन?”

“कौन ह जो गाती हैं?”

“और कौन-कौन जाता है; खास तौर से यह देखना, कौन-कौन औरत जाती है; उसके साथ एक ही बाँदी है, और भी कोई यहाँ की बाँदी जाती है या नहीं। रानी साहबा इनाम देंगी। समझ गया?”

“रानी साहबा अभी तक चाहती हैं। मैंने अरई कहास्त्रिन को छेड़ दिया, कहा, तेरी शकल उससे मिलती है। उसने कहा दिया। वह एक पन्दरहीं नहीं बोली। अरई के लिए माफ़ी मँगा ली, तब दम लिया सो भी कब जब अबकी तनख्वाह से गुच्छी-करनफूल बनवा देने का कौल करा लिया।” कहकर मटरू हँसा। अपनापे से पूछा,—“मुन्ना, तेरी कैमी कटती है?”

“फिर तो नहीं माफ़ी माँगेगा?”

“मैंने कहा जात की है, कहीं बैठ जा, या बैठा ले। राम दोहाई, आँख झप जाती है जब देखता हूँ, तेरे लिए बारोमहीने कातिक है। सिपाही कुत्ते जैसे पीछे लगे रहते हैं। बहँगी में तीन-तीन को लादकर फेकूँ।”

“अच्छा चला जा। देखें, कितनी जानकारी रखता है। इनाम में एक थान के दाम मिलेंगे; मगर पक्की खबर दे।”

मटरू खुश होकर जहाज घाट की ओर चला।

राज का ही जहाज है। मटरू जानता है। आदमियों में सबसे दबा, कहार। पहचानकर सबने राह दे दी। उस वक्त तक राजा या एजाज का आना नहीं हुआ था। मटरू सारा जहाज घूम आया। फिर एक किनारे खड़ा हुआ।

आधे घण्टे के अन्दर एजाज की पालकी आई। एजाज किनारे

उतरकर काठ की सीढ़ी से जहाज पर गई—इनाम भेजा।

राजा की सवारी आई। शान से चढ़े। लोग चढ़ने लगे। जहाज खुला।

मटरू ने एक-एक को देखा। रह जाने वाले लोगों के साथ लौटा। एक पहर दिन चढ़ चुका था।

लौट कर मुन्ना से एक-एक बात कही। और पुरस्कार के लिए लाचार निगाहों से देखकर मुस्कराया।

मुन्ना समझ गई। संवाद से खुश होकर पीपल वाले चबूतरे के पास दुपहर ढलते बुलाया। मटरू मानकर खुले दिल से दूसरे काम को चला। मुन्ना पुरानी कोठी चली।

३३

प्रभाकर सचेत हो गया। मौका देखकर बचा हुआ मसाला पानी में फेंक दिया और प्रकाश को दिन होने पर पास के केन्द्र भेज दिया। दो आदमी और रहे और प्रभाकर। देख-रेख के लिए दिलावर और दो नौकर हैं, जिनके बाहर के मानी छत से हैं। श्री रघुनाथ जी वाली छत से, जल भरने वाले कहारों से, दिलावर पानी चढ़वा लेता है। उसी जीने से दिन रहते-रहते नौकर और पाचक एक दफ़ा बाहर की हवा खा आते हैं।

मुन्ना जमादार से मिली। जमादार के होश फ़ास्ता थे। राजा को बुआ के ग़ायब होने की खबर नहीं दी गई।

मुन्ना को देखने पर साथी का बल मिला। रास्ता निकालने की सोची। पूछा—“क्या इरादा है।”

मुन्ना ने कहा—“बुआ लापता हैं, यह सबसे खतरनाक है।”

“क्या तअज्जुब, रस्तम ने उड़ा दिया हो।” जमादार ने कहा।

“हो सकता है, मगर बात झूठ भी हो सकती है। पहले पता लगा लेना चाहिए। एक बात जँचती है। उधर एक आदमी रहता है। वह कोठी में ही रहता है। वह कौन है, उसका हाथ हो सकता है।”

“हाँ,” जमादार सँभले, “राजा का गुप्त रूप है, यह रामफल से सुना है। उन लोगों की आमदरपत दूसरी है। वहाँ पुजारी जी का हाथ है।”

“तुमको यह नहीं मालूम, रहने वाला काला है या गोरा है?”

जमा०—“या एक है या तीन, नहीं।”

मुन्ना—“एक दूसरी शाख है?”

जमा०—“हाँ”

मुन्ना—“माई के लाल बहुत हैं।”

जमा०—अब बचना कठिन है।”

मुन्ना—“जहाँ तक हो आँट पर न चढ़ो।”

जमा०—“कैची काटती हो?”

मुन्ना—“हमारे ही साथ सती होना है।”

जमा०—“तभी तो कहा, कैची काटती है।”

मुन्ना—“बस, अब साथ न छोड़ो। अगर भगें तो साथ।”

जमा०—“रास्ता और क्या है ? इतनी बड़ी चोरी के बाद गाँव में क्या मुँह दिखावेंगे और क्या पुलिस के हाथ बचेंगे ?”

मुन्ना—“हमारा प्रेम ही ऐसा है। पति को खा गई।”

जमा०—“हमारा ही कौन कमजोर है ?”

मुन्ना—“इस आदमी का पता लगाना है। जमादार अब ताकत बाहर की आ गई है। खतरा बहुत है। हमारे पास धन है, लेकिन इसको इस रूप में हटाकर हम बहुत दिन खा नहीं पायेंगे। सहारा लेना है। कुछ मददगार बनाने हैं।”

जमा०—“हाँ।”

मुन्ना—“राजा का रवाना होना मतलब से खाली नहीं।”

जमा०—“कुछ लगाया ?”

“मुन्ना—“खज्जाञ्ची की तरफ की कोई कार्रवाई होगी। इसका भी, जिसके लिए मैं कह रहा हूँ, कोई हाथ हो सकता है।”

जमा०—“हमारी हैसियत तो इतनी ही है। पहले तो यह कि नम्बरी नोट चलाये नहीं चलेंगे। दूसरे, इतना रुपया हज्म करने वाला हमारा पेट नहीं।”

मुन्ना—“मगर रुपयों के साथ अब जान पर ही खेलना है, यानी जान रहते रुपये न जायँ, और जायँ तो हम दुनिया भी दूर तक देख लें इतने रुपयों से इतना भेद खुल सकता है। सिर्फ पकड़ में नहीं आना।”

जमा०—“अब हमको बयान बदल देना है।”

पन्ना—“हाँ, तभी बचाव है।”

जमा०—“सन्दूक गाड़ दिया गया। ताली फेंक दी गई। बीजक अपने पास है ही। उसमें लिखा है। क्यों री, तू इतनी भी बँगला नहीं पढ़ी कि मालूम हो जाय कि कितने-कितने के नोट हैं?”

मुन्ना—“यह मालूम हो जायगा। दम कहाँ मिला? मगर खर्च बहुत होगा।”

३४

कहार से बातें मालूम करके, इनाम देकर, मुन्ना पिछली तरफ़ वाले घाट पर चलकर बैठी। मन में खलबली थी। बुआ का पता नहीं चला। जल्द कोई कार्रवाई होगी दिल कह रहा था। धड़कन त्यों-त्यों बढ़ रही थी। बचाव की सूरत नजर आती थी और कुछ देर बाद मिट जाती थी। मुन्ना ने देखा, किरनों में कई हाथ पानी के नीचे मछलियाँ दिख रही हैं। फिर देखा, पास की डालवाले पत्तों की रेखाएँ गिनी जाती हैं। दूसरी तरफ़ आँख उठाई, घने बगीचे में छिपने लायक अँधेरा नहीं। सब कुछ खुल गया है। अपने भविष्य पर डरी।

इसी समय देखा, जीने का दरवाज़ा खुला, एक युवक निकला, जीना बन्द किया और घाट की तरफ़ चला। उसकी शांति में घबराहट नहीं, बड़ी दृढ़ता है। एक ऐसा संकल्प है जो आप पूरा हो चुका है। जवानी की वह चपलता नहीं जो औरत को डिगा देती है, बल्कि वह

जो साथ लेकर ऊपर चढ़ जाती है, और जहाँ तक औरत की ताकत है वहाँ तक चढ़ाकर अपने पैरों खड़ा करके, और चढ़ जाती है। चरित्र के पतन से बचकर और भले कामों की तरफ़ रख फेरती है। मुन्ना को जान पड़ा, उसका हृदय खुल गया। वह निर्दोष है। यह युवक उसको इस अवस्था में सदा रख सकता है। दिल की बातें उससे कह देने के लिए उतावली हो गई।

जैसे-जैसे प्रभाकर पास आता गया, मुन्ना के बुरे कृत्य भी जो नीची तह के किए हुए थे—उसके ऊँचा उठने के कारण छुटे हुए, काई की तरह सिमटकर पास आते गये। प्रभाकर की चाल के धक्के से निकलते गये। मुन्ना जैसे बदल गई प्रभाकर से मिलने के लिए। जो मुन्ना होगी उसके बुरे संस्कार छुटने लगे।

वह अपने स्वरूप में आई। अभी तक प्रभाकर की नज़र नहीं पड़ी। अपने काम की बातें सोच रहा था।

हवा चल रही थी। पेड़ों की पत्तियाँ और डालें हिल रही थीं। चिड़ियाँ उड़ रही थीं। सरोवर पर लहरें उठ रही थीं। उनपर किरनें चमक रही थीं।

प्रभाकर आया। बाईं तरफ़ एक औरत की छाँह देखी। उसने घाट के फ़र्श पर सर टेक कर प्रणाम किया। प्रभाकर ने विचारशील आँखें उठाकर देखा। पूछा—“कौन हो?”

“मैं मुन्ना हूँ।”

“क्या काम है?”

“मैं रानी साहबा की दासी हूँ।”

प्रभाकर स्थिर हो गया। सोचा, कोई काम है। पूछा—“फिर?”

“आप कौन हैं, यह मालूम हो जाना चाहिए।”

“यह राजा साहब से मालूम हो जायगा।”

“वे तो चले गये हैं।”

“फिर लौट सकते हैं, या जहाँ गये हैं, वहाँ से।”

“आपके दिल में रानी साहबा की जगह है?”

“क्या है?”

“आप जानते हैं, राजा साहब के साथ रानी साहबा नहीं!”

प्रभाकर दुखी हुए।

मुन्ना को मौका मिला। कहा—“रानी साहबा आपके लिए कुछ नहीं कर सकतीं अगर आप उनकी सहायता करें?”

प्रभाकर पेंच में पड़े। काट न चला। सहानुभूति आई। दिल कमजोर पड़ा। कहा—“हमारा काम दूसरा है।”

“वह कौन-सा?”

“क्या तुम और रानी साहबा उसमें हो?”

“हाँ, हम हर तरह आपके साथ होंगे।”

“हमको दोनों की सहानुभूति चाहिए।”

“रानी साहबा धन और जन से आपकी मदद कर सकती हैं।”

“विश्वास है। रानी साहबा से हमारी बातचीत हो सकती है?”

“हाँ।”

“मगर आज होनी चाहिए।”

“हाँ, आपसे शाम को यहीं मिलूँगी। आपको मालूम है, रानी जी के लिए दूसरे से बातचीत करना मना है।”

“हाँ।”

“मगर काँटा निकालने के लिए मिलेंगी।”

प्रभाकर कुछ न बोले। एजाज का स्वभाव उन्हें पसन्द है। रानी साहबा कैसी हैं, देखना चाहते हैं। उनका काम केवल मर्दों के हाथ से ज्यादा औरतों के साथ से बढ़ेगा। स्वदेशी का, देशप्रेम का जितना प्रचार होगा, देशवासियों का कल्याण है।

“रानी साहबा पढ़ी-लिखी हैं?”

“जी हाँ।”

“सुन्दरी भी हैं?”

मुन्ना मुस्कराई। कहा—“हाँ, बहुत।”

“राजा साहब को व्यसन होगा। गाती भी हैं?”

“जी हाँ।”

“काँटा निकल जायगा। राजा साहब जिस रास्ते के पथिक हैं, रानी साहबा भी उसकी होंगी, तो मेल स्वाभाविक है।”

“वह कौन-सा रास्ता?—क्या हम लोग उस रास्ते आपके पीछे चल सकते हैं?”

“पहले तुम्हीं लोगों का काम है। यों फ़ायदा नहीं कि ज़मींदारी ज़मींदार की रहे : मगर यों है कि तुम अपने आदमियों के साथ रहो, अपना फ़ायदा अपने हाथों उठाओ। इसमें दूसरे तुमको बहका सकते हैं, बहकाते होंगे। बाजी हाथ आने पर, हम खुद जीने की सूरत निकाल

लेंगे। अच्छा, बताओ, यहाँ कोई औरत रहती थी जो लापता है?”

मुन्ना घबराई। प्रभाकर आँखें गड़ाये थे। झूठ नहीं निकली, कहा—“जी, हाँ।”

“वह कौन है?”

“वह कुमारी जी की फूफ़ी-सास है : आपको मालूम है, वे कहाँ है?”

“हम नहीं कह सकते। मगर बचा दे सकते हैं। पुलिस के हाथ बुरा हाल होगा।”

मुन्ना ने पैर पकड़ लिए, कहा—“आप बचा सकते हैं। आपका काम करूँगी।”

प्रभाकर मुस्कराते रहे। कहा—“अच्छा नहाते हैं, शाम को आना। घबराना मत। हमारा काम, तुम्हारा काम है। अब चलो।”

मुन्ना खुश होकर चली। जान पड़ा, भगवान ने बचा लिया। प्रभाकर नहाने लगे।

३५

जमादार सूख रहे थे, चोरी खुलेगी, बहाना नहीं बन रहा। घबराये जो कलंक नहीं लगा, लगेगा जेल होगी; बाप-दादों का नाम डूबेगा। राजा गये; दूसरी आफ़त रहेगी।

इसी समय मुन्ना मिली। जमादार ने देखा, उसमें स्फूर्ति है। उनकी बाछें खिल गईं, सोचा, बचत निकल आई।

मुन्ना ने अलग बुलाया। वे चले। दोनों घाट की चारदीवार की आड़ में एक मौलसिरी की छाँह में बैठे।

मुन्ना ने कहा—“अब किनारा साफ़ नज़र आ रहा है।”

“क्या बात है?” जमादार ने पूछा।

“एक महात्मा मिले हैं, उनसे आशा बँध रही है।”

“कहीं, धोखा तो नहीं?”

“नहीं, सिर्फ़ तुम्हारा विचार है कि कहीं नीचा न दिखा दो। नहीं तो, लकड़ी साफ़ बैठेगी।”

“कैसे?”

“पहले बताओ, तुम हमारे साथ रहोगे या नहीं।”

“हमने तो बीजक तक दे दिया।”

“ठीक है। बात यह, हम दूसरी चाल चलेंगे।”

“क्या?”

“रानी को दूसरी तरह हाथ में करना है। पहला वार खाली गया। वह राह कट गई, अच्छा हुआ। वह सूझ खज़ाञ्ची की थी, अपनी भी। अब लाठी भी न टूटेगी और साँप भी मरेगा।”

“समझ में नहीं आया।”

“जमादार बहुत गहरी बातें हैं। एकाएक समझ में न आयेंगी। खज़ाञ्ची का साथ किसी सरकारी आदमी से है। खज़ाञ्ची की मार्फ़त एजाज से राज लेना चाहता है और हमारे राजा साहब का। राजा साहब सरकार के खिलाफ़ फ़ैस जायेंगे; क्योंकि वे रास्ता बताने वाले हमारे नये गुरुदेव के मददगार हैं और गुरुदेव सरकार के खिलाफ़ कार्रवाई

करने वालों में हैं। स्वदेशी का जो आन्दोलन चला है, गुरुदेव उसमें हैं। सरकार चाहती है, बंगाल के दो टुकड़े कर दे। ज़मींदार ऐसा नहीं चाहते। उनको डर है कि स्थायी बन्दोबस्त फिर न रह जायगा। इसका देश में आन्दोलन है। सरकार के लोगों का कहना है, स्थायी बन्दोबस्त न रहने पर इतर जनों को फ़ायदा पहुँचेगा, मुसलमान जनता सरकार के पक्ष में की जा रही है। असली बात इतनी है। हम लोग बहुत काफ़ी बातचीत सुन चुके हैं। सच जो कुछ भी हो, मगर गुरुदेव की बात का असर पड़ता है। उनपर अपने आप विश्वास हो जाता है। बड़े अदभुत आदमी हैं। इतर जन ही हम लोग हैं। हम लोग भी सहानु-भूति और अधिकार चाहते हैं। यह हमको सरकार से तब मिलेगा, जब हम सरकार की जड़ मजबूती से पकड़ेंगे। मगर हमको रहना तुम्हीं लोगों में है।”

“हमारे जो कुछ था, हम दे चुके।”

“हाँ, मगर समाज से डरते हो; हम समाज की बात कहते हैं।”

“भीमसेन ने हिड़िम्बा से ब्याह किया, महाभारत में है, तो किसने उनको जाति से निकालकर बाहर कर दिया?”

“मगर हिड़िम्बा के अधिकार वैसे न रहे होंगे जैसे द्रोपदी के।”

“अधिकार वैसे ही थे, भेद यह रह गया था कि एक राक्षस की बेटा रही, दूसरी क्षत्रिय की। क्या बाप भी बदल गये?”

मुन्ना गम्भीर हो गई। कहा—“बूआ का पता इनको मालूम है। रुस्तम शायद इन्हीं की बातें करता था।”

जमादार जर्द पड़े। कहा—“कुल भेद खुला? बूआ ने एक-एक गाँठ मुलझाई होगी।”

“सम्भव। ताल पर चलना है। नहीं, गिरेंगे। बुआ राजा के साथ न थीं। बचाव का मिलकर बचकर रास्ता निकालना है।”

“बुरा हुआ। सरकार के खिलाफ़ हैं तो जरूर बचकर रहना है। हम भी पकड़ा सकते हैं अगर पकड़ में हैं।”

“हाँ, मगर नहीं। राजा ने रक्खा है तो मिल जाना चाहिए।”

“हाँ।”

“राजा खिलाफ़ न हों तो खिलाफ़ गवाही देते अकेले हो जायँगे, मगर खजाञ्ची का एक गरोह है, हम उसमें हैं, बचत है।”

“हाँ।”

“ये इसी कोठी में रहते हैं, तुमको मालूम था?”

“नहीं।”

“राजा ने तुमसे छिपाया है। कोई होगा, जिसको देख-रेख सौंपी गई। यहाँ रहना मायने रखता है।”

“हाँ।”

“फिर साथ होते अड़चन नहीं। रानी का उपकार करेंगे। कारण साथ है। राजा को ये मिला दे सकते हैं।”

“हाँ।”

“आदमी सज्जन हैं। रानी से मिलाना है। बातचीत सुननी है। अगर रानी से किसी की माफ़त बातचीत कराई तो मैं हूँगी; खुद की तो सुनूँगी। बहाना है।”

“हाँ।”

“इनका भेद मिलेगा, आगे भी मिलता रहेगा। इनको काम के

लिए धन चाहिए। मैं मदद करूँगी। इस तरह इनका बाजू पकड़े रहना है। पूरी जानकारी हासिल होगी। जैसे अँधेरे में हूँ। तुमने लम्बी दुनियाँ देखी है।”

“हमारा देश छः सौ मील है।”

“तुम जगह देखना चाहो, चलो दिखा दूँ। रानी के पास ले चलते वक्त दूर से देख लेना छिपकर।”

३६

चार का समय, दिन का पिछला पहर रानी साहबा की फूलदानियों में ताज़े फूल दोबारा रखे गये। हार आ गये केले के पत्ते में लपेटे हुए। बर्फ़-क्रीम-फल तश्तरियों में नाश्ते के लिए आ गये। दक्खिन-वाले बड़े बरामदे में छप्परखाट पर थीं। दखिनाव तेज़ चल रहा था। इक्की-दुक्की दासी घूम जाती थी। दोपहर के आराम के बाद गद्दी से उठकर काठ के जीने से रानी साहबा उतरिं और चन्दन की चौकी पर बैठीं जिस पर बढ़िया कालीन बिछा था। मुन्ना आई। बाहर की आज्ञा-वाहिनी दासी से कह आई थी, कोई न आये।

मुन्ना को देखकर रानी साहबा ने सहृदयता से पूछा—“क्या खबर है?”

मुन्ना ने प्रणाम करके दूसरे एकान्त वाले कमरे में बुलाया जहाँ प्रायः रानी साहबा रहती थीं। वे उठकर चलीं एक मखमल की गद्दी

—१६१—

वाली कुर्सी पर बैठीं। मुन्ना को स्टूल लेकर बैठने के लिए कहा। मुन्ना पंखा यहाँ चलाने के लिए बाहर आज्ञा दे आई, फिर स्टूल लेकर बैठी। प्रसन्न है, रानी ने गौर से देखा। दिल में गम है, मुन्ना ताड़ रही थी। राजा साहब के लिए जगह है।

सँभलकर कहा—“हज़ूर के दर्शन हुए। यहाँ एक भले आदमी टिके है। राजा साहब टिका गये हैं। पुरानी कोठी में रहते हैं। दूसरों की आंख बचाई जाती है। और भी उनके साथी हों, सम्भव है। आज पता चला है। बातचीत की है। राजा साहब गये, अब वे भी जायेंगे। सच्चे और अच्छे पढ़े-लिखे आदमी हैं। अभी नौजवान है। तेजस्वी हैं। क्यों हैं, क्या हैं, यह हुज़ूर को और मालूम होगा। मैं समझती हूँ, उनसे काम निकल सकता है।”

“हमारे मनीजर के इतने पड़े होंगे?”

“हाँ, जान ऐसा ही पड़ता है।”

“मनीजर को बुलाना होगा।”

“हुज़ूर, मैं मनीजर साहब की मार्फत बातचीत कराने का बीड़ा नहीं लेती। जब राजा साहब के खास हैं, तब मनीजर साहब से बातचीत नहीं भी कर सकते।”

“फिर क्या सलाह है?”

“आपका भला हो सकता है।”

“अच्छा, कब बुलाना ठीक होगा?”

“शाम के वक़्त, दीयाबत्ती हो जाने पर।”

“बुला लेना। यहाँ से कलकत्ता जायेंगे?”

“सरकार !”

“एजाज वालों में हैं ?”

“नहीं, यही आपको जान लेना है।”

“अच्छी बात है।”

“पालकी बड़ी ले जाने का विचार है।”

“ले जा।”

मुन्ना आज्ञा मिलने पर बाहर निकलो। कहारो को बड़ी पालकी ले चलने के लिए कहा, खास रानी जी वाली। कहारों ने तयारी की। मुन्ना साथ पुरानी कोठी की तरफ चली। कहारों को अचम्भा हुआ। मगर चलने हुए सोचते रहे, रानी साहबा वहाँ कहीं मरीं। तालाब की बगल पालकी रखाकर मुन्ना ने कहारों को हट जाने के लिए कहा। कहारों ने वैसा ही किया। दिल से उमड़ रहे थे जैसे कोई बात पकड़ी हो, कलंक पकड़ा हो। प्रभाकर तालाब के घाट पर बैठे थे। मुन्ना गई, और पालकी चलने के लिए रक्खी है कहा, प्रभाकर संध्या की सुगन्ध के भीतर से चले। मुन्ना कुछ देर फिर उनकी चाल देखती रही।

आमां की राह से होते हुए गुलाबजामुन के बाग के भीतर से मुन्ना पालकी ले चली। कई दफे आते-जाते थक चुकी थी। उमंग

थी। एक नई दुनिया पर पैर रखना है। लोगों को देखने और पहचानने की नई आँख मिल रही है।

खिड़की पर कहारों और पहरेदार को हटाकर दरवाजा खोलकर प्रभाकर को ले गई। पंखे से समझ गई, रानी साहबा उसी बैठके में हैं। बड़े वाले में ले गई।

प्रभाकर ने देखा, एजाज़ वाले बँगले से यह आलीशान और खुश-नुमा है। बड़ी बैठक है। छप्परखाट बड़ी, मेजें बड़ी। आईने बड़े फूलदानियाँ बड़ी। दरवाजें बड़े। झूलें बड़ी। सनलाइट की बत्तियाँ भी बड़ी। अधिक प्रकाश, अधिक स्निग्धता, अधिक ऐश्वर्य, अधिक सजावट। संगमरमर का फर्श, खुला हुआ, हिन्दूपन के चिह्न। दीवारों और छतों पर अत्यन्त सुन्दर चित्रकारी।

प्रभाकर को चाँदी की कुर्सी पर बैठाकर पास एक सोने के डण्डेवाली गद्दीदार कुर्सी रख दी। प्रभाकर साधारण दृष्टि में बड़प्पन लिए हुए देखता रहा। मुन्ना रानी साहबा के कमरे में गई। हाथ जोड़कर खबर दी।

रानी साहबा ने हार पहना देने के लिए कहा। फिर दूसरी दासी से घन्टे भर में भोजन ले आने के लिए कहा।

हार पहनाकर मुन्ना ने कहा, “रानी जी आ रही हैं।” जूतियों की मधुर चटक सुन पड़ी। प्रभाकर ने देखा, एक सुश्री सुन्दरी आ रही थीं। समझकर कि रानी हैं, उठकर खड़े हो गये। हाथ जोड़े। रानी साहिबा ने म्लान नमस्कार किया। अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गई। मेहमानदारी के विचार से आँचल गले में ढाल लिया था।

प्रभाकर की ऐसी कुर्सी थी कि सनलाइट का प्रकाश मुँह पर पड़ता था। रानी साहबा मुँह देखकर बहुत खुश हुई।

हवा के साथ बाहर के बगीचे से फूलों की खुशबू आ रही थी। उनके आने पर उस बैठक में पंखा चलने लगा।

“आपका शभ नाम?” रानी ने पूछा।

“जी, मुझको प्रभाकर कहते हैं।”

“आप यहाँ हैं, हमको न मालूम था। कितने दिनों से हैं?”

“यह आप राजा साहब से.....” प्रभाकर सहज लाज से झेंपे।

“आपका इधर राजा साहब के बँगले जाना नहीं हुआ?”

“जा चुका हूँ।”

“उसको देखा होगा?”

“जी, हाँ।”

रानी जी को एक धक्का लगा। सँभालने लगीं। कहा—“हम मँज गये हैं। उससे भी मिले?”

“जी, हाँ, मिले।”

रानी साहबा झेंपी। कहा, “बाजार का अच्छा माल है। राजा साहब ज़रीदेंगे तो अच्छा देखकर।”

प्रभाकर खामोश रहे। ज़ब्त करते रहे। कहा—“आदमी की पहचान मुश्किल है।”

“हाँ।” रानी साहबा ने कहा—“हमने देखा है, कलकत्ते में, मगर फूटी आँख। तारीफ़ थी। उससे क्या काम?”

“तर्फ़दार बनाना।”

“आप दमदार हैं। गला बतलाता है। पहले किसीसे बातचीत ऐसी ही मिल्लतवाली रहेगी, फिर, दिल में जम गया तो फ़ायदे की सोची।”

शराफ़त भरे बड़प्पन से प्रभाकर सर झुकाये रहे। हल्का मज़ाक किया—“राजा साहब को चाहिए था, पहले आपसे मिलते।”

“हम खुद मिल लिये। राजा साहब का कुसूर हट गया।”

“जी।”

रानी साहबा ने पूछा—“आप सिगरेट-पान शौक फ़रमाते हैं?”

“पान खा लूँगा।”

मुन्ना एक बगल खड़ी थी। रानी साहबा ने देखा, वह गिलौरी-वाली तश्तरी उठा लाई। प्रभाकर के सामने मेज़ पर रख दी। प्रभाकर ने पान खाये। मुन्ना हटकर अपनी जगह खड़ी हो गई।

“आप कबतक कलकत्ता खाना होंगे?” रानी साहबा ने पूछा।

“दो ही दिन में, अभी समय का निश्चय नहीं किया। ज़रूरी काम है।”

“कैसा काम आपके सिपुर्द है, क्या आप बतलाएँगे?”

“अभी नहीं। काम आपके फ़ायदे का है।”

“आपकी हम क्या मदद कर सकते हैं?”

“यह तो यों भी है। आप हमारे घर हैं। आपको नहीं मालूम, हम ऐसी हालत में आपके दोस्त रहेंगे या दुश्मन।”

“सही।”

“आपकी हमारी बातचीत पक्की, मगर राजा साहब से हमारा भेद न खले।”

“हम ऐसा काम नहीं करते। भेद एक ही है हमारा। उनसे आपको फ़ायदा होगा तो होगा। आप अपनी परिचारिका से समझ लें, जो हमको ले आई है। फिर हमारे काम से, जो हर तरह नेकचलनी का है, आप मददगार हों; राजा साहब भी हैं; आपकी और उनकी पटरी इस तरह बैठ जायगी।”

“मदद की सुरत क्या हो?”

“आपके यहाँ हमारे केन्द्र हैं, देशी कारोबार बढ़ाने के; आप महिला होने के कारण उनकी स्वाभिनी; गृहलक्ष्मी शब्द का उपयोग आप ही लोगों के लिए होता है; आप उसकी चारुता बढ़ाने, प्रसार करने में सहायता करें। देश में विदेशी व्यापारियों के कारण अपना व्यवसाय नहीं रह गया। हम उन्हीं के दिये कपड़े से अपनी लाज ढकते हैं; उन्हीं के आईने से मुँह देखते हैं; उन्हीं के सेन्ट, पौडर, लेवेन्डर, क्रीम लगाते हैं; उन्हीं के जूते पहनते हैं; उन्हीं की दिया-सलाई से आग जलाते हैं। ब्राह्मण की आग गई; क्षत्रिय का वीर्य गया; वैश्य का व्यापार चौपट हुआ। यह सब हमको लेना है। इसी के रास्ते हम हैं। बंगभंग एक उपलक्ष्य है। दूसरे प्रान्त अभी बहुत जाग्रत नहीं, यों कांग्रेस में सभी हैं, यह स्वदेशी वाला भाव हमको घर-घर फैलाना है। आप गृहलक्ष्मी तभी हैं। इस समय रानी होकर भी दासी हैं। आपके घर की तलाशी ली जायगी तो अधिकांश माल विदेशी होगा। आप इसीमें हमारी मदद करें। आपकी सहानुभूति भी हमारे लिए बहुत है।”

मुन्ना खुश हो गई। रानी साहबा दासी है, उसको बहुत अच्छा लगा। उसमें रानी का सही स्वत्व आया। वह तन गई।

प्रभाकर कहते गये—“और यहीं से। इस उलझन का खात्मा नहीं हो जाता। अर्थशास्त्र की उलझनदार बड़ी-बड़ी बातें हैं, दूसरे मुल्कों से हमारे क्या सम्बन्ध रह गये हैं, हम कितने फ़ायदे और कितने घाटे में रहते हैं, बैंक क्या है, कारोबार की क्या दशा है, यह सब एक मुद्दत की पढ़ाई के बाद समझ में आता है। राज्य और राजस्व बिगड़ा हुआ है। इस प्रकार कभी हमारा उत्थान नहीं हो सकता। जाति की नसों में राजनीतिक खून दौड़ाकर एक राजनीतिक जातीयता लाने में कितना श्रम चाहिए, इसका अनुमान आप लगा सकती हैं। मैं आपका एक ऐसा ही सेवक हूँ।”

रानी साहबा को जान पड़ा, उनका पहला अस्तित्व स्वप्न हो गया है। दूसरा जीवन से उबलता हुआ। देखा, वे मुन्ना से छोटी पड़ गई हैं। मगर उनको बुरा नहीं लग रहा। हृदय के बन्द-बन्द खुल गये हैं। मुन्ना खड़ी मुस्करा रही है।

रानी साहबा ने कहा—“हम आपसे सहमत हैं। आप जैसा कहेंगे, हम करेंगे।”

प्रभाकर सोचते रहे, कहा—“इसकी मार्फत हम खबर भेजेंगे और भेजते रहेंगे।” मुन्ना की तरफ़ इशारा किया। और कहते गये, “हर-एक की अपनी सुविधा होती है। दूसरे की आज्ञा वह अपनी सुविधा को छोड़कर नहीं मान सकता या मान सकती। इसका अनुभव महीने

दो-महीने साथ रहने पर हो जाता है। फिर हमारे बहुत तरह के काम हैं, कौन किस योग्य, इसकी पहचान की जाती है।”

“आप इसकी मार्फत खबर भेज दीजिएगा, और काम बढ़ाते रहिएगा। आज यहीं भोजन कीजिए। काफी वक्त हो गया। आपको अपनी जगह जाना है।” यह कहकर रानी साहबा उठीं और अपने पहले वाले कमरे में गईं। प्रभाकर ने उठकर बिदा किया। पाचक थाली एक मेज़ से लगा गया था।

हाथ-मुँह धुलाकर भोजन से निवृत्त करके मुन्ना प्रभाकर को उसी तरह उनकी कोठी पर भेज गई। उनकी आज्ञा भी मिली।

३८

प्रभाकर बहुत काम न कर सके। कुछ किया और कुछ बरवाद कर दिया। भेद खुल जाने की शंका से इसी रात रवाना हो जाने की सोची। मुन्ना को कह दिया कि अच्छा हो अगर रानी साहबा के साथ या अकेली कलकत्ते में राजा साहब की कोठी पर मिले। घनिष्ठता के लिए पास रहना जरूरी है। अगर दल में आने की इच्छा होगी तो कर्मियों के साथ, अनेकानेक गृहकार्य करने के लिए आ सकती है। मुन्ना ने कलकत्ते में मिलने के लिए कहा।

प्रभाकर आज ही रात रहे लोगों को लेकर बेलपुर रवाना हो गये। रहा-तथा व्यवहारवाला सामान कलकत्ते वाली राजा की कोठी में ले जाने के लिए समझा दिया। रात प्रभात होते मुकाम पर पहुँच गये।

पौ फटते पहुँचे। बुआ जग गई थीं। स्नान से निवृत्त हो चुकी थी

दिन भर घर से बाहर न निकलती थीं। एक साधारण जमींदार ने जगह दी थी। बाँस के घेरे में मिट्टी लगाकर दीवार बनाकर छा लिया गया था। तीन-चार कोठरियाँ थीं, तीन-चार चारपाइयाँ और चरखे-करघे आदि। बुआ भोजन पकाती थीं। कर्मी वस्त्र-व्ययन आदि करते थे। काम जितना था, जोश उससे सैकड़ों गुना अधिक। हिन्दू और जमींदारी प्रथा से फँसी जनता साथ थी। जितना अभाव था, पूर्ति उमसे बहुत कम। चारों ओर पूर्ति का मन्त्रोच्चार था। लोगों में भक्ति थी। इससे बुआ का स्वास्थ्य अच्छा रहा। लोगों को एक सहारा मिला। राज लेने वाले जमींदार को भी यह पता न हुआ कि एक औरत आई है।

किरण फूटी। प्रभाकर हाथ-पैर धोकर बैठे थे। दूसरे साथों भी बैठे थे। दरवाजा बन्द था। बुआ प्रभाकर को प्रणाम करने आईं। आँखों में भक्ति और उच्छ्वास, काम की एक रेखा। मुख पर प्राची का पहला प्रकाश। प्रभाकर देखकर खड़ा हो गया। हाथ जोड़कर नमस्कार किया। बुआ ने भी किया। प्रभाकर ने पूछा—“कैसी रही?”

बुआ ने इशारे से समझाया—“अच्छी तरह।” अभी वे बंगला बोल नहीं सकतीं। थोड़ी-थोड़ी समझ लेती हैं। यहाँ आने पर उनका मन बिलकुल बदल गया। वहाँ के प्रभाव का दबाव जाता रहा। ललित ने कहा—“थोड़ी-सी चाय पिला सकती हैं?”

बुआ चूल्हा जलाने वाली थीं। चलकर जलाया। कर्मी चाय पीते हैं। सामान है। पानी उबालने लगीं। आधे घण्टे में बढ़िया चाय बनाकर प्यालों में ले आईं। तश्तरी में सुपाड़ी, लौंग इलायची, सौंफ, जवाइन, मुखशुद्धि के लिए। लोग मुँह धो चुके थे। चाय पी,

लौंग-सुपाड़ी खाई। काम की बातचीत करने लगे, कितना कपड़ा महीने में बनकर कलकत्ता जाता है, कितना काम बढ़ाया जा सकता है, लोगों की सहानुभूति कैसी है, अधिक संख्या में लोग व्यापार के लिए तैयार हैं या नहीं। जवाब मिला, ज़मींदार आये थे, दरवाजे पर बैठे थे, कहते थे, सरकारी लोग खलमण्डल करते हैं; कारोबार चलने नहीं देना चाहते; डरवाते हैं, जड़ समेत उखाड़ कर फेंक देंगे; सज़ा कर देंगे; वदमाशी के अड्डे हैं, कहते हैं।

प्रभाकर ने कहा—मिलों का मुक्ताबला है, मुश्किल मुकाम है; मिल वाले ज़मींदारों की तरह इस आन्दोलन में शरीक नहीं, सरकार को उनकी तरफ़दारी प्राप्त है; दलाल हैं ये लोग; विघ्न डालेंगे. देहात के बाज़ारों में इनका माल आता है; ज्यादातर विदेशी माल है; दूकानदारों को ये लोग बाँधे हैं; माल खपाते हैं; विदेशी वस्तुओं का भी सरकार पर प्रभाव है; वे ज्यादाती करने की प्रेरणा देते होंगे, बड़ी मुश्किलों का सामना है। देश के इन गधों से ईश्वर पार लगाये।

बुआ सुन रही थीं। प्रभाकर से सहानुभूति थी।

ललित ने पूछा—“मछली पका सकती हैं? आज प्रभाकर बाबू को यहाँ के ज़मींदार के तालाब से पकड़कर खिलाई जाय, हम लोग भी खायें, हम बता देंगे, या हमी बनायेंगे।”

बुआ ने कहा,—“बाद को बना देंगे, हमारे घर में लोग मछली खाते थे। खास तरह की हो तो बता देना।”

ललित एक साथी लेकर मछली की तलाश में गया। बुआ ने आलू-परवल के भाजे, डालना, रसेदार, शकरक़न्द को इमला और

शकरवाली तरकारियाँ पकाई, दाल बनाई, भात बनाया; कुल बंगाली प्रकार जैसा बताया गया था। दुपहर तक भोजन तैयार हो गया। मछली भी आई थी, भोजन एक किनारे रखकर उसको भी बना दिया। आसन विछाये। गिलासों में पानी रक्खा, पत्तलें लगाई। कटोरियों में दाल रक्खी; मिट्टी के प्यालों में रसेदार तरकारी और मछली। फिर सबको खिलाया। प्रभाकर बुआ के काम से बहुत प्रसन्न हुए। देहात निरासन्न नहीं, खासतौर से जब यह तैयारी हो रही है।

दुनरे दिन बचकर बुआ को लेकर वे कलकत्ता खाना हुए। कुछ दूर चलकर नाव किराये पर की, फिर रेल पकड़ी।

३६

पूसुफ़ छनके। पिता से कुल हाल कहा। अली स्वदेशी के मामले से, राजों के कलकत्ते वाले कोचमैनो से मिले, उनमें किसीका लड़का थानेदार न हुआ था, अली को इज्जत से बैठाला। सच-झूठ हाल सुनाकर आन्दोलन में सरकार की मदद के लिए अली ने उनको उभाड़ा। उन्होंने साथ देने को कहा और अली के गिरोह में आ गये। खिलाफ़ कार्रवाई में भेद देने का इरादा पक्का कर लिया। कुल काम कर चले।

इसी लगाव से अली ने एजाज के घर एक कोचमैन भेजा। नोटबुक के अनुसार 'सीन' कहने के लिए कहा और क्या जवाब मिलता है, खामोशी से लौटकर सुनाने के लिए समझाया। गरोह की पहचान के

लिए दूसरे-दूसरे राजों के दो कोचमैन भेजे, ताकि हिम्मत बँधी रहे, यों सरकारी आदमी को कोई खतरा नहीं, यह भी कहा। लोग गये आगे-पीछे रहे। एजाज की कोठी देखी। बगीचे देखे। दरबान से बातचीत की। 'सीन' कहा। नसीम को मालूम हुआ। एजाज आ गई थी। समझकर कह दिया। "फँस गया।" लौटकर लोगों ने अली से कहा। अली बहुत खुश हुए। यूसुफ से कहा।

यूसुफ को जान मिली। कुछ अरसा किया, फिर गये। खुशी और कामयाबी का दरिया बह रहा था। तरह-तरह की भवरें उठ रही थीं। दिल में गड़ गया कि एक नाका तोड़ लिया इसी रास्ते चले चलेंगे। बग्घी किराये की। दो आदमियों को बैठालकर चले। डोर लगी थी। बढ़िया-बढ़िया स्क्वायर और रास्ते पार करती बग्घी चली, बढ़िया-बढ़िया मकान। एक बढ़िया फाटकदार बँगलानुमा प्रासाद में बग्घी गई। यूसुफ को उतारकर रास्ते पर खड़ी हुई। यूसुफ दरबान से कहकर गेस्टरूम में बैठे। सेक्रेटरी आये। देखकर पहचान गये। यूसुफ ने कहा,—
"तीन और तीन"

सेक्रेटरी मुस्कराकर दबे-पाँव एजाज के पास गये। एजाज मेज पर थीं, खत-किताबत कर रही थीं। सेक्रेटरी को देखकर मुखातिब हुई। सेक्रेटरी "तीन और तीन" के साथ आये आदमी का परिचय भी दिया।

एजाज ने कहा—आप अपने नोटबुक में दर्ज कर लीजिए कुछ मेरा भी हिसाब है। यहाँ के सुबूत जहाँ तक हैं, लिये रहिए। वकील की मार्फत भेजियेगा। कुर्सी डलवा दीजिए। सेक्रेटरी गये। एजाज ने

नसीम को अपने पाजामे-दुपट्टे से भेजा। कामदार जूतियाँ। सिखला भी दिया। यों नसीम भी भेद लेना जानती थी।

नोत्रे सेक्रेटरी की बगलवाले कमरे में कुर्सियाँ डाली गईं। वह आकर बैठी। यूसुफ से चलने के लिए कहा गया। वे गये। नसीम ने उठकर सलाम किया। फूलदानी की बगल से, कुर्सी पर बैठने के लिए हाथ बढ़ाया। यूसुफ ने बैठे देखा यह वही हैं। पूछा—“मिजाज अच्छा?”

“जी, हाँ।”

“हमको पूरी जानकारी चाहिए।”

“हम अपना भी हिसाब रखेंगे।”

“इससे सरकार की तरफ से बहुत फायदा न होगा। क्योंकि खैर-खवाहा को सिकारिश पहले हमारी ली जायगी। यह एक तरह की कम-जोरो है और इससे सरकार के कान खड़े होते हैं। आपकी तबियत, जैसा आप चाहें, करें।”

निराला जी का ऐतिहासिक उपन्यास

प्रभावती : मूल्य ३) रुपये

यह हिन्दी के उन गिने चुने उपन्यासों में से एक है जिसका आधार पाठकों और समीक्षकों न एक स्वर से किया है। कथानक कान्यकुब्जेश्वर सम्राट जयचन्द के समय का है। प्रभावती और यमुना नामक दो किलेदारों की कुमारियों को लेकर लेखक न जो प्रेममूलक कथानक रचना है, उसे पढ कर आप अभिभूत हो उठेंगे। चित्रचित्रण के साथ समसामयिक राजनीति, धर्म और सामाजिक व्यवस्था का ऐसा यथार्थनिष्ठ और वस्तु-परक चित्रण आपको नहीं मिलेगा।

महाकवि 'निराला' की युगान्तरकारी रचना

हृकुरमुत्ता : मूल्य ॥२)

किसी काव्यमर्मज्ञ ने महाकवि बिहारी के दोहों की सूक्ष्म काया और अर्थगाम्भीर्ष देखकर टिप्पणी की थी:—

सतसैय्या के दोहर, ज्यों नावक के तौर।

देखत में छोटे लगै, घाव करै गंभोर॥

निराला जी का काव्य कृतियों और विशेष रूप से इस नन्हीं-सी रचना के विषय में भी यहाँ कहा जा सकता है। कवि ने इस एक ही लम्बो कविता में आज के विषमतापूर्ण पूंजावादी युग के चिथड़े उधेड़ कर रख दिये हैं। यह निर्विवाद है कि सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में तीखे व्यंग्य को इतनी चुटोली और उत्कृष्ट कृति दूसरी नहीं हैं।

‘निराला’ जी की दो अमर कृतियाँ

चतुरी चमार : मूल्य १॥॥ रुपया

‘चतुरी चमार’ नाम का कहानी-संग्रह पाठकों के सामने है।
‘चतुरी चमार’ की हिन्दी साहित्य में काफी चर्चा हो चुकी है। आलोचक अनेकानेक निबंधों में इसकी प्रशंसा कर चुके हैं। . . . मैंने स्थायी साहित्य के सर्जन के विचार से ये कहानियाँ लिखी हैं। पढ़ने पर पाठकों का श्रम सार्थक होगा, मुझको विश्वास है। कला अपने आप उनकी ऊँचा उठायेगी और मनोरंजन करेगी (आवेदन से)

—सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’

बिल्लेसुर बकरिहा : १॥॥ रुपया

‘बिल्लेसुर बकरिहा’ प्रगतिशील साहित्य का नमूना है। मित्रों ने इसका बड़ा समादर किया है। बड़ी स्तुति की है। पत्रों में काफी निबंध, आलोचनार्यें इस पर आ चुके हैं। (इसकी) कला ऐसी है जैसे तीन छोटी-बड़ी कहानियाँ एक जोड़ के साथ रख दी गयी हैं। अन्त समाप्त होकर भी लटका हुआ है जिससे पाठक को एक धक्का-सा लगता है, पर दिल को तर्कित पहुँचती है। पढ़ कर ही विवेचन करें। (निवेदन से)

—सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’

